ईरान
राहुल सांकृत्यायन

ईरान

[प्राचीन और नवीन]

लेखक

राहुल सांकृत्यायन

प्राक्कथन

१९३५ अी०में जापानसे सोवियत-प्रजातंत्रके रास्ते लौटते हुअे २८ दिन (१२ सितम्बरसे ९ अक्टूबर तक) मै अीरानमें रहा। यह यात्रा जितनी शीघ्रतासे हुअी, अुससे अीरानके सभी खास हिस्सों और जीवनके सभी अंगोंको तो मै नही देख सका; अिसलिये मेरा शब्द-चित्र पूर्ण होगा, अिसकी आशा नहीं है। दूसरा दोष यह है, कि मैंने अिस यात्राको साल भर बाद लिखना शुरू किया, जब कि, बहुत-से स्मृति-चित्र धूमिल होने लगे थे। आधुनिक अीरानकी जागृतिमे अुसके पुराने अितिहासका भी हाथ है; अिसी लिअे पहले खण्डमें मैंने संक्षेपसे अुसे दे दिया है। पुस्तक पढनेसे पाठकोको मालूम होगा कि, लेखकने बहुत अुतावलेपनसे काम लिया है; लेकिन मेरे पास जितना समय था, अुसमें अिसके सिवा दूसरा किया ही क्या जा सकता था ? अधिक समयकी आशामे अिसे छोळ रखनेका मतलब था, हमेशाके लिअे छोळ रखना।

पटना
५-४-३७

राहुल सांकृत्यायन

विषय-सूची

प्राचीन ओरान

आरम्भिक काल

नवीन ओरान

प्राचीन ग्रीरान

रज़ाशाह पहलवी

अीरान

प्राचीन

आरम्भिक काल

अीरान देशके मुख्यतः तीन भाग है। दक्षिणमें समुद्रके तटका भाग बहुत गर्म है। बीचमे अूँचा अीरानी मैदान है, जो तीन हजारसे ५ हजार फीट तक अूँचा है। अिस अूँचाअीके कारण यह प्रदेश अधिक ठण्डा है और चारों ओर अूँचे पहाळोसे घिरा होनेसे यहाँ बादलोके आने-जानेका मार्ग अवरुद्ध है। अिसीलिअे यहाँपर वर्षाकी कमी है। यह मैदान तेहरानमें जहाँ समुद्रतलसे तीन हजार फीट अूँचा है, वहाँ दक्षिणके शीराज और उत्तर-पश्चिमके तब्रेज नगरमे चार हजार। अिसके दक्षिण-पूर्वका अिलाका केरमान ५ हजार फीट अूँचा है। अुत्तरी भागमे गीलान और माजेन्दरानके प्रान्त है, जो कस्पियन समुद्रके तटपर होनेके कारण अधिक हरेभरे, तथा ३५°–३६° अक्षाशपर होनेसे सर्द भी है। अिनके अतिरिक्त चौथा भाग आजुर्बाअिजानका प्रान्त भी कहा जा सकता है, जो काकेशस् (कोहकाफ) पर्वत-शृंखलाका एक भाग है।

अितिहासपर दृष्टि डालनेसे जान पळता है कि अीरानमें सभ्यताका विकास सर्व-प्रथम समुद्रतटके दक्षिणी भागमें हुआ था। यहाँके लोगोपर बाबुल और असुर सभ्यताका असर पहले पळा था। जिस वक्त मध्यका अूँचा मैदान अधिकतर खानाबदोशों और चरवाहोका चरागाह बना हुआ था, अुस समय भी यहाँके लोगोंने कृषि और नागरिक जीवन स्वीकार कर लिया था। लेकिन वह जाति जिसने अिस देशको अीरान नाम दिया और जिसका

अितिहास अैतिहासिक ओीरानका अितिहास है, वह अिन्दो-अिरानियन (भारतीय-ओीरानी) जातिकी पश्चिमी शाखासे सम्बन्ध रखती है। अिसीने मध्यके मैदानको पहले पहल अपना निवास बनाया जो कि आगे चलकर ओीरानी सभ्यताका केन्द्र हो गया।

आदिम ओीरानी कब और कहाँसे आये अिसके बारेमे अैतिहासिक खोजो-से पता लगता है कि वह सारी जातियाँ जिनकी भाषा सस्कृतसे मिलती है और जिनमे भारतीय, ओीरानी तथा यूरपकी जातियाँ शामिल है, अत्यन्त प्राचीन कालमे किसी अेक प्रदेशमें रहा करती थी। यद्यपि यूरपकी जातियो-ने अपने लिअे आर्य शब्दका प्रयोग नही किया है; और ओीरानियों और भारतीयोने ही अपने लिअे अिस शब्दको खास तौरसे अिस्तेमाल किया है, तो भी सुगमताके लिअे सभीको हम यहाँ आर्य शब्दसे पुकारेंगे। आर्योकी आदिम भूमि दक्षिणी रूससे लेकर पामीर तकका प्रदेश था। वह समय आजसे ६ हजार वर्षके करीब पुराना है, जबकि सभी आर्योके पूर्वज छोटी-छोटी टोलियोंमे विभक्त अपने भेळ-बकरियों, घोळो और गायोको लिये अिस विस्तृत भूमिमे घूमा करते थे। ५ हजार साल पूर्व अिनके दो भाग हो गअे। पूर्वी भाग, जिसने कि अपने लिअे आर्य शब्दका प्रचुरतासे प्रयोग किया है, पूरबकी ओर आया। अिन्हीके वंशज भारतीय और ओीरानी आर्य है। आजसे ४ हजार वर्ष पूर्व अिस वंशके भी दो टुकळे हो गये। जिनमें अेक ओीरानकी ओर गया जिसकी सन्तान वर्तमान ओीरानी है और दूसरा भारतकी ओर; जिस स्थानसे दोनों शाखाअे अलग-अलग हुअी थी, वह अफगानिस्तानका अुत्तर-पश्चिमी प्रान्त हिरात है। यह प्रदेश आर्योकी पुरानी विचरण-भूमि (मध्य-अेसिया) तथा भारतीय और ओीरानी दोनों शाखाओंके वासस्थानों-के बीचमें है।

१—मद्र-वंश (६५५-५५० अी० पू०)

मद्र-वंश अीरानी आर्योकी दो प्राचीन शाखाओ—अेक पर्शु (पारसी) और दूसरे मद्र (Medes)—मे विशेष अैतिहासिक महत्त्व रखता है। पारसियोने अीरानी मैदानके दक्षिणी भागको अपना नाम दिया, और वह अबतक भी 'सूबा-फारस' कहा जाता है। वस्तुतः अीरानी अुच्चारणमें अिसे पारस ही कहते हैं। फारस तो अरबी लिपिमे प अक्षरके अभावसे बन गया। अरबी लिपिके अिस दोषसे और भी कअी अीरानी अक्षरोमे गळ-बळी हुअी है। अुदाहरणार्थ गीलानका जीलान। दो वर्ष पहले अीराननें जो अपना नाम पर्सियासे बदलकर अीरान रखे जानेकी सूचना ससारके राष्ट्रोको दी, अुसमे वैसा करनेके लिअे अेक यह भी कारण बतलाया गया था कि पारस वा पर्सिया अीरानके सिर्फ अेक प्रान्तका नाम है, अिसलिअे सारे अीरानके लिअे अिस शब्दका अुपयोग नही हो सकता। अीरानको पारस कहनेकी चाल यूनानी (ग्रीक) लोगो द्वारा पश्चिममे ही प्रचलित नही हुअी बल्कि भारतमे भी पुराने सस्कृत ग्रन्थोमे पारस्य या पारसीकका ही प्रयोग मिलता है। जान पळता है अखामनशी और सासानी दोनो ही प्रतापी अीरानी राजवंशोका शासनकेन्द्र पारस प्रान्तमे होनेसे देशका यह नाम पळा। भारतीयोके लिअे हिन्दू शब्दका प्रयोग भी पहले पहल अीरा-नियोने ही किया था। अुन्होने अपनी सीमाके समीप सिन्धु तटपर बसे, भारतीयोको अपने अुच्चारणके अनुसार सको हसे बदल हिन्दू कहना शुरू किया।

पारसीक प्रधानतासे पहले अीरानमे मद्रोकी प्रधानता थी। मद्रोकी राजधानी अिख्वतन (वर्तमान हम्दान) थी। असुर साम्राज्यके नजदीक होनेसे यहीपर सबसे पहले सभ्यता फैली। वस्तुतः अीरानी साम्राज्य—जो

विस्तार और वैभवके ख्यालसे अपनेसे पहलेके साम्राज्योमे सबसे बळा था और जिसका विस्तार यूरप, ओसया और अफ़्रीका तीनो महाद्वीपोंमें था— की नीव मद्रोने ही डाली थी।

जरदुस्त——मद्रोके बारेमे कुछ लिखनेसे पहले यहाँ जरथुस्त्र (जरदुस्त) और अुनके धर्मके बारेमें कुछ कह देना जरूरी है; क्योकि पीछेके ओीरानपर अुसका बहुत असर पळा है। जरथुस्त्र ओीसा-पूर्व ६६० के करीब (बुद्धसे १ सौ वर्ष पूर्व) काकेशस पर्वतमालाके समीप आजुर्बाअिजान प्रदेशमे पैदा हुअे थे। अुन्होंने अुस समयके प्रचलित धर्मकी कअी बातो——जिनमे बहुतसी भारतीय वैदिक धर्मियोसे मिलती जुलती थी——को हटा अपने नये धार्मिक विचारोंका प्रचार किया। कितनेही अंशोमे फर्क रखते हुअे भी यज्ञ, सोम आदि कर्म-काण्डोंमे समानता थी। अुन्होने यह माना कि भलाईका स्रोत जिस प्रकार अहुर-मज्द (असुरमेध) है अुसी तरह बुराअियोका स्रोत भी है; जिसे अुन्होने अंग्रमेन्यु (अह्रेमान)का नाम दिया। यही अह्रेमान पीछे यहूदी, ओीसाओी और अिस्लाम-धर्मोंमें शैतानके नामसे स्वीकार कर लिया गया। जरथुस्त्रके अुपदेश यद्यपि बुद्धसे सौ ही वर्ष पहले हुअे थे लेकिन अुनके मूल ग्रन्थोमें कुछ थोडीसी गाथाये उपलभ्य है, जो कि अवेस्ताका अेक भाग है। सभी धर्मोंके पैगम्बरोकी तरह जरथुस्त्रका भी कहना था कि अुन्होंने अपने धर्मका ज्ञान अेलहाम (=अन्त.सन्देश) द्वारा अहुरमज्दसे पाया है। अुनकी मुख्य शिक्षा थी—हुमत (=सुमत=सत्य मनन), हुख्त (=सूक्त=सत्य वचन), ह्वर्श्त (=सुकृत) अर्थात् कायिक वाचिक मानसिक तीनों प्रकारसे सत्यका आचरण करना। जरथुस्त्रको अपने प्रदेशमे धर्म-प्रचारमें पहले सफलता नही हुअी। तब वह पूर्वी ओीरानके खुरासान प्रदेशमें चले गये और वहाँके राजा विस्तास्प (शाहनामाके गुस्तास्प)को अपने धर्ममे दीक्षित करनेमें सफल हुअे। किन्ही-किन्ही ऐतिहासिकोंका कहना है कि यही विस्तास्प प्रथम दारयोश् (दारा)का पिता हिस्तास्प था।

यह हम पहले लिख चुके है कि मद्रोंका प्रदेश असुर साम्राज्यकी सीमाके

पास होनेसे सभ्यताके प्रभावमे सबसे पहले आया। अुनका देश असुर साम्राज्यका अेक भाग था। असुरोने कअी बार अिन पहाळी मद्रोपर चढ़ाअियाँ की थी। अिन चढाअियोसे जहाँ अुन्हे कितनी ही तरहके शारीरिक और आर्थिक संकटमें पळना पळा, वहाँ जीवन-संग्रामकी कअी उपयोगी बाते अुन्होने सीखी भी। सबसे अन्तिम हमला 'असुरहद्दन'ने ६७४ अी० पू०में किया था। वह अपनी चढ़ाअीमे दमाबन्द पर्वत (तेहरानके पास) तक पहुँच गया था।

मद्र राज्यका संस्थापक दयअुक्कू (देवक) मद्रोका अेक सर्दार था। न्यायके लिअे अुसकी कीर्ति अपने गाँवसे निकलकर आसपासके गाँवो तक फैल गअी और लोग अपने झगळेको निपटानेके लिअे अुसके पास पहुँचने लगे। अिसमे अुसका अितना समय चला जाता था कि अुसने अिस कामको छोळ दिया। न्यायकी व्यवस्था न होनेसे गाँवोमे अशान्ति फैल गअी। अिसपर लोगोने सोचा——अगर अिसी तरहसे अव्यवस्था रही तो देशमें हमारा रहना मुश्किल हो जायगा। आओ हम लोग अपना अेक राजा बनाअें जो राज्यकी व्यवस्था देखेगा और हम लोग शान्ति-पूर्वक अपने घरबारका काम देखेंगे। अुन्होने दयअुक्कूको अपना राजा चुना और हग्मतन (वर्तमान हमदान) राजधानी बना। अीरानका यह सबसे पुराना शहर है। आजकल यह तीस हजार आबादीका अेक छोटासा कस्बा है।

अवेस्ताके बारेमें कहा जाता है कि अुसकी भाषा माद्री थी। यूनानी लेखकों ने लिखा है कि वह पारसी तथा तुषारी भाषाओसे मिलती है।

'दयअुक्कू'के बाद फ्रावर्तिश (६५५ अी० पू०) गद्दीपर बैठा। अुसने पारसके प्रान्तोंको भी जीतकर अपने राज्यमें मिला लिया। असुर साम्राज्य मद्रोंकी प्रगतिको देख नही सकता था और शायद वह अुनको दबानेकी कोशिश करता, किन्तु अिसी समय हुअक्षत्र (मृत्यु ५८५ अी० पू०) गद्दीपर बैठा। यह मद्रदेशका सबसे प्रतापी राजा था। अुसने अपनी सेनाको संगठित किया। धनुषधारी घोळसवारोंको अुसने अितना सुशिक्षित किया

कि असुरवनिपालकी सेना अिसका मुकाबिला न कर सकी। परास्त असुर-सेनाको खदेळते हुअे हुअक्षत्रने अुसकी राजधानी निनेवेको घेर लिया। अुसने राजधानीपर भी अधिकार कर लिया होता लेकिन अुसी समय उत्तरसे मद्र देशपर सिथियन (शक) लोगोंका हमला हुआ जिसके लिअे हुअक्षत्रको लौट जाना पळा। हुअक्षत्रने सिथियनोको हराया। ६०७ ओी० पू० मे हुअक्षत्रने फिर 'निनेवे'पर चढ़ाई की। असुर राजाने बळी वीरताके साथ मुकाबिला किया। जब अुसे बचनेकी आशा न रही तो वह अपने परिवारके साथ अेक विशाल चितामे जलकर मर गया। निनेवे मद्रोके हाथमे चला गया। निनेवेके अिस पतनके साथ अेक तरफ सामीय सभ्यताका सूर्य अस्त होता है और दूसरी तरफ आर्योंके भाग्योदयका प्रारम्भ होता है।

२—अखामनशी राजवंश

महान् कोरोश (५५०-५२९ ओ० पू०)

पारसका राजवंश अपने अेक प्रभावशाली सरदार अखामनश (Achaemenes)के नाम पर 'अखामनशी' कहा जाता है। जिस समय अिस्तूवेग् (Astyags), अेक निर्बल शासक, मद्रके सिहासनपर बैठा हुआ था, अुसी समय अखामनशी कोरोश (Cyrus) दक्षिण में अपनी शक्तिको बढा रहा था। उस समय पारस और मद्रमें प्रधानताके लिअे प्रतियोगिता थी। अन्शन्-राज कोरोशने तीन लळाअियोके बाद मद्रको विजय किया। अिस प्रकार ५५० अी० पू० मे हग्मतन राजधानीके पतनके साथ मद्रोका शासन समाप्त होता है। ५४९ अी० पू० तक कोरोश अन्शन्का राजा कहलाता था। ५४६ से वह पारस-राजके नामसे प्रख्यात हुआ है। आखामनशी वंशकी अन्शन् और पारस दो शाखाअें थी। कोरोशने दोनों शाखाओको अेक करके अपनेको पारसका राजा घोषित किया। कोरोश संसारके महान् विजेताओमेसे है। पूरबमे अफगानिस्तान और बलूचिस्तान जीतते हुअे अुसने पंजाब और सिधके कितने भागोको भी जीत लिया था। पश्चिममे अनेक छोटेछोटे राज्योको पराजित करते हुअे उसने अपनी राज्य-सीमा भूमध्य सागर तक पहुँचा दी थी। अुत्तरमें उसका राज्य वर्तमान सोवियत तुर्किस्तानतक पहुंचा था। यहीपर युद्ध करते हुअे कोरोशकी मृत्यु हुअी।

शाहनामामें अीरानके राजाओकी कितनी ही कहानियाँ लिखी हुअी हैं। अुनमे कोरोशके पहलेकी कहानियाँ अधिकतर किवदन्तियोपर अवलम्बित हैं। कोरोशको ही शाहनामाके लेखक फिरदौसीने 'कैखुश्रो'के नामसे पुकारा है। अुस समय अीरानकी राजधानी पर्सेपोलिस् (पर्शुपुरी) थी।

कोरोशने अेक छोटीसी सर्दारीसे बढ़ते-बढते अेक ऐसे विशाल साम्राज्य-की स्थापनाकी, जो अपनी विशालतामें अपनेसे पहलेवालोमें अद्वितीय था। अुसके योग्य सेनापतित्वमे बाबुल और लिदियाके राज्य तूफानके सामने तिनकेकी तरह अुळ गये। अुसने तीस वर्ष तक शासन किया और धन तथा वैभवके रहते हुअे भी अन्तिम समय तक वह सिपाहियो जैसा सादा जीवन व्यतीत करता रहा। जहाँ युद्धके वक्त वह भयंकर शत्रु था वहाँ शान्तिके समय अुसका स्वभाव अितना नर्म था कि अुसके अधीन विदेशी भी उसकी प्रशंसा किअे बिना नही रह सकते थे। वैयक्तिक तौरपर अुसका हृदय और भी नर्म था। अपनी स्त्री 'कसन्दाने'की मृत्युपर अुसे वैसा ही शोक हुआ था जैसा अजको अिन्दुमतीके मरनेपर। वह अितना नम्र और विनीत था कि सबसे समानतासे मिलता था। जबतक ओीरान ओीरानी रूपमे स्वतन्त्र रहा तबतक अुसके दिलमे सम्राट् कोरोशके प्रति बळा सन्मान था। अुसे लोग पिता और महान् कहते थे और आज भी नवीन ओीरानी अपने अिस महान् पुरुषको कोरोश बुजुर्ग कहकर याद करते है। हम भी अितिहासकार साअिक्सके शब्दोमे कह सकते है—"हम अुस प्रथम महान् आर्यके लिअे अभिमान करते हैं जिसका व्यक्तित्व अितिहासमें प्रसिद्ध है और जिसने अितने भव्य गुणोको प्रदर्शित किया।"

कम्बुज (५२९-५२१ ओी० पू०)

कोरोशके बाद अुसका पुत्र कम्बुज विशाल ओीरानी साम्राज्यका स्वामी बना। बहुत कम ही योग्य पिताके योग्य पुत्र हुआ करते है। कम्बुज भी वैसे ही अयोग्य पुत्रोमे था। गद्दीपर बैठनेके बादहीसे कम्बुजको यह ख्याल होने लगा कि क्यों न मै अपनी विजयध्वजा पिताके साम्राज्यसे और आगे तक बढ़ा ले चलूँ। अुसने मिश्र विजयके लिअे अेक बळी सेना संगठित-की। अुसे अपने पिता द्वारा सुशिक्षित की गअी सेना प्राप्त थी। ५२५ ओी० पू० मे प्राचीन जगत्के अिस बचे हुअे तृतीय साम्राज्यको भी ओीरान

पराजित करनेमे सफल हुआ। मिश्रके साथ नुबियाके रेगिस्तानों तक कम्बुजकी सत्ता स्वीकार की जाने लगी। कम्बुजमें अपने पिताकी-सी सैनिक या शासनकी योग्यता न थी। जिस वक्त अुसे राज्यकी सुव्यवस्था कर अपने प्रभावको मजबूत करना चाहिअे था अुस वक्त वह अफ़्रीकाके रेगिस्तानोमे ओीरानके हजारो बहादुरोंको खो रहा था। अुसी समय राजधानीमे बलवा हो जानेका पता लगा। इसी बलवाको दबानेके लिअे वह लौट रहा था; किन्तु जब अुसे सभी तरहसे निराशा ही निराशा दिखाओी देने लगी तो उसने आत्म-हत्या कर ली।

दारयोश महान् (५२१-४८५ ओ० पू०)

कम्बुजके मरनेके बाद राज-सिहासनके लिअे झगळा हुआ और अन्तमें दारयोश सिहासनका मालिक (५२१ ओी०-पू०) बना। दारयोश अखामनशीवंशके पारस-शाखासे सम्बन्ध रखता था; और वश-स्थापक अखामनशसे ५वी पीढ़ीमे था। हम लिख चुके है कि किसी किसीके मतमें दारयोशका पिता वही विस्तास्प था जिसने कि जरथुस्त्रका धर्म स्वीकार किया था। जिस वक्त सिन्धु अुपत्यकामे दारयोशकी शासन-ध्वजा फहरा रही थी अुसी समय मध्य-भारतमे गौतम बुद्ध विचरते हुअे अपने धर्मका प्रचार कर रहे थे। दारयोशने अपने जीते जी अेसिया, यूरप और अफ़्रीका तीनों महाद्वीपोमें अपनी विजयध्वजा गाळी थी; लेकिन तब तक बुद्धकी धर्म-विजय सिर्फ भारत तक ही सीमित थी और अुसे तीनो महाद्वीपोमे पहुँचनेमें ढाओी सौ वर्षोकी और देर थी।

अुस समय केन्द्रीय सरकारमें अितनी अशान्ति और अव्यवस्था देख कर ओीरानी साम्राज्यके कितने ही प्रान्ताधिकारियोने स्वतन्त्र होना चाहा; जिससे दारयोशका मार्ग अुतना सरल न था। कोरोशके जीते देशको भी अुसे अेक बार फिर विजय करना पळा। अेक समय अैसा भी था जब अुसके पास अपनी सेना और कुछ थोळेसे प्रान्त भर रह गअे थे।

अेलम्, बाबुल, ने पहले बगावतका झण्डा अूँचा किया। अेलम्को ठीक करनेमे अुसे देर नही लगी; किन्तु बाबुलमें अुसे अेक मजबूत शत्रुसे मुकाबिला करना पळा। बाबुली सेनाके हार जानेपर जब वह बाबुल नगरपर घेरा डाले हुअे था अुसी समय अुसे मद्रोके बगावतकी खबर मिली। दारयोशने अुस घेरेको बिना अुठाअे ही अपनी कुछ सेना मद्र और आरमेनियाके बागियो-के खिलाफ भेज दी। जिस समय ओीरानके अुत्तरमे विद्रोहकी आग सुलग रही थी अुसी समय खुद पारसमें भी विद्रोह खळा हो गया। यदि कोई साधारण आदमी होता तो वह हिम्मत छोळ बैठता; लेकिन दारयोश दूसरी मिट्टीका बना हुआ था। अुसपर अुसकी सेनाका विश्वास था। पौने दो वर्षके घेरेके बाद (५१९ ओी० पू०) बाबुलका पतन हुआ और अब दारा अपने दूसरे दुश्मनोको परास्त करनेके लिअे स्वतन्त्र था। मद्रोके विद्रोही नेता फ्रावर्तेशको अुसने बुरी तरहसे हराया। अरमेनिया और फारसको भी बहुत आसानीसे दबा दिया। अिस प्रकार ५१८ ओी० पू०मे दारयोश फिर अपने विशाल साम्राज्यमें शान्ति स्थापन करनेमे सफल हुआ। कितने ही क्षत्रपों (प्रान्ताधिकारियों)को प्राणदण्ड मिला। वह स्वयं मिश्र गया और वहाँके क्षत्रपको मृत्युदण्ड दे मिश्रके धर्माधिकारियो-को सतुष्ट करनेके लिअे बहुतसी रिआयतें दी।

अब तक ओीरानी साम्राज्यकी शासन-व्यवस्था पुराने असुर साम्राज्य-शासनके ढंगपर थी। अुसने प्रान्तोके शासनको फिरसे संगठित किया। जिसमें सारी शक्ति अेकके हाथमे न चली जाय, अिसके लिअे अुसने हरअेक प्रान्तमे क्षत्रपके साथ अेक-अेक सेनापति और अेक-अेक मन्त्री नियुक्त किअे। ये तीनों ही अधिकारी केन्द्रीय सरकारसे स्वतन्त्र सम्बन्ध रखते थे; और अिस प्रकार अुनमेंसे कोओी अेक मनमानी नहीं कर सकता था। अिसपर भी राज-महामात्य प्रान्तीय शासनके निरीक्षणके लिअे नियुक्त किये गये थे, जो बीच-बीचमे अेक दृढ़ सेनाके साथ घूमते रहते थे और अपराधी पानेपर क्षत्रप तथा दूसरे प्रान्ताधिकारियोको दण्ड देनेका पूरा अधिकार

रखते थे। दारयोशका साम्राज्य २८ क्षत्रपियोंमे विभक्त था। अिन्हींमें गान्धारका क्षत्रप भी शामिल था; जिसकी राजधानी सम्भवत: तक्षशिलामें थी। राज्यकर नकद और जिन्स दोनों रूपमें लिया जाता था। पारसका प्रान्त सीधा सम्राट्के अधीन था और जन्मभूमिके ख्यालसे अुसपर कोअी टैक्स न था; लेकिन जिस वक्त शाहनशाहकी सवारी निकलती थी अुस समय लोग भेट पेश करते थे। आज कलके हिसाबसे सारे साम्राज्यकी सालाना आमदनी तीस करोळ रुपअेके बराबर थी जो समय और जनसंख्याके ख्यालसे काफी भारी रकम थी। दारयोश प्रथम अीरानी राजा था जिसने सिक्के चलाअे और राजचित्रके साथ सिक्का बनानेमे तो वह प्रथम था। अुसका सोनेका सिक्का (वजनमे १३० ग्रेन) अपनी धातु-शुद्धताके लिअे बहुत मशहूर है। शासन-विभागकी भाँति दारयोशने अपनी सेनाका भी सुन्दर संगठन किया था।

यातायातके सुभीतेके लिअे दारयोशने अपने साम्राज्यके अेक सिरेसे दूसरे सिरे तक राजपथ बनवाये थे। अिनकी सुरक्षाका खास तौरसे प्रबन्ध किया गया था। अुसीने पहले पहल डाकका इन्तजाम किया। दारयो की राज्यव्यवस्था अिस लिअे भी महत्त्वपूर्ण है कि सिकन्दरने भी अपने विशाल राज्यके शासनमे अुसीका अनुकरण किया। मौर्य साम्राज्य और अुसके बादके भारतीय राज्य-शासनमे भी अुसकी शासन-व्यवस्थाका काफी प्रभाव रहा है। पीछे सातवी शताब्दीमे जब अरबोने अीरानको जीता तो खलीफा अुमरने भी अपनी राज्य-व्यवस्थामें अीरानी ढंगको अपनाया। मानो अी० पू० ५वी शताब्दीसे लेकर अिस २०वी शताब्दी तककी सभी शासन-प्रणालियाँ कुछ न कुछ जरूर दारयोशकी शासन-प्रणालीकी ऋणी है।

यूनानपर चढ़ाअी (५१४ अी० पू०)

राज्यकी शासन-व्यवस्थाको दृढ़ कर लेनेपर दारयोशके दिलमे दिग्विजयकी आकांक्षा जागृत हो अुठी। अुसने यूनान और सिथिया (काला-

सागरके अुत्तरका प्रदेश जिसे आज कल क्षुद्र रूस या अुक्रेन कहते हैं) को अपना लक्ष्य बनाया। कुछ अैतिहासिकोका मत है कि दारयोश वस्तुत. सिथियाको ही विजय करना चाहता था; क्योकि सिथियन लोगोसे सदा ही ओीरानकी अुत्तरी सीमाको डर बना रहता था। हिमालय सदृश कोहकाफकी दुर्लघ्य दीवारोको पारकर सिथियापर चढाई करना आसान न था। अिसी लिअे बास्फोरसके जलडमरूको पार कर थ्रेसका रास्ता अुसे लेना पळा। दारयोश बळा दूरदर्शी सेनापति था। अुसने ५१४ ओी० पू० से ही प्रान्तीय क्षत्रपोको सैनिक तैयारीमे लगा दिया था। बास्फोरसमे नावोका पुल बाँधा गया, और अेक विशाल सेनाके साथ दारयोश यूरोपमे (५१२ ओी० पू०) दाखिल हुआ। थ्रेससे वह सिथिया-की ओर बढा। विशाल पारसी सेनाके सन्मुख सिथियन भाग अुठे। चुस्त घोळोके फुर्तीले सवार, अुन सिथियनोका पीछा करना सम्राट्की सेनाके लिअे सम्भव न था। दारयोश यदि अुस देशकी दुस्सह सर्दी तथा अुस पथरीली भूमिकी अनुपयोगिताको जानता, तो वह कभी अैसे निरर्थक विजयकी न ठानता। अुसे वहाँसे असफल ही लौटना पळा। यद्यपि अिस असफलतामे वहाँके लोगोकी बहादुरी नही, बल्कि प्रकृतिकी कठोरताका हाथ था। रूसकी अिस दुर्दम्य प्रकृतिने दारयोशके विजयको ही पराजयमे नही परिणत कर दिया, बल्कि अिसीने नवे चार्ल्स तथा नेपो-लियनके भाग्यको धरतीपर पटककर चूर-चूरकर दिया। बल्कि पिछलोकी अपेक्षा अुसका भाग्य अेक तरह अच्छा था जो कि पीछे हटते समय शत्रुओने अुसपर प्रहार नही किया। थ्रेसमे पहुँचकर अुसने अुस प्रदेशको जीता, और मकदूनियाको अधीनता स्वीकार करनेके लिअे मजबूर किया; यद्यपि सिथियामे वह नाकामयाब रहा। जिस वक्त (५१२ ओी० पू०) दारयोश यूरपमे अपनी विजययात्रा कर रहा था अुसी समय अुसके सेनापति शाइ-लाक्ष (जो जातिसे यूनानी था)ने भारतपर चढ़ाओी की। अुसने सिन्धको पारकर पश्चिमी पंजाब और सिन्ध प्रान्तको ओीरानी साम्राज्यमे मिला

लिया। शासनके लिअे एक क्षत्रप निश्चित कर वह अेक बळे बेळेके साथ सिन्ध नदीसे हो अरबसागरमे पहुँचा; और मकरान तथा अरब-समुद्र तटकी पळताल करते हुअे ओीरान लौट गया। यह सामुद्रिक यात्रा बळी महत्त्वपूर्ण थी। पहले इसका श्रेय विजयी सिकन्दरको दिया जाता था किन्तु अब खोजोसे निश्चित हो गया है, कि सिकन्दरसे २०० वर्ष पूर्व ओीरानने अिस कामको सफलता-पूर्वक पूरा किया था। अिन प्रकार दारा सिन्धसे मकदूनिया और वक्षु (Oxus)से नील तक अपनी सीमाको बढानेमे सफल हुआ। अेक बार नक्शेपर नजर डालनेसे ही अिस विशाल साम्राज्य-को देखकर, अुसके विजयपर चकित होना पळेगा।

दारा लौटकर फिर अपने साम्राज्यके सुख-शान्तिकी व्यवस्थामे लग गया। अुसे शायद फिर यूनानपर चढाई करनेकी नौबत न आती; लेकिन कुछ घटनाअे अैसी घटी जिससे ओीरान अुसके लिअे मजबूर हुआ। अेसियाके तटपर बसे हुअे यूनानी अुपनिवेश ओीरानके अधीन थे। आपसके झगळोके कारण वहाँ यूनानके प्रजातन्त्र अेथेसके भगोळे बराबर आते ही रहते थे। अिन भगोळोके यातायातने साम्राज्यको किसी न किसी पार्टीकी ओर पक्षपात दिखानेके लिअे मजबूर किया। अेसियासे भागे हुअे ओीरान-विरोधी यूनानियोकी अेथेसमे पीठ ठोकी जा रही थी और ओीरानी क्षत्रप अिसे अपना अपमान समझता था। वस्तुत दारयोशकी अपेक्षा ओीरानी क्षत्रप ही अिस युद्धकी प्रधान प्रेरणाके कारण थे। अुधर थ्रेससे जब ओीरानी सेना हटा ली गअी तो वहाँके लोगोने फिर अेक मर्तबे सिर उठाना शुरू किया। अेसियाके तटपर बसे हुअे यूनानी अुपनिवेश छोटे-छोटे प्रजातन्त्रोकी तरह सगठित थे। अेकके बाद अेक अुपनिवेशने बगावत करनी शुरू की। अुन्होने क्षत्रपकी राजधानी सारदेसपर चढ़ाअी की। अिसमे अेथेसने २० जगी जहाजोसे मदद की थी। बागी सेना ओीरानी सेनाके सामने असफल रही। अुस वक्त अेथेसने भी अुसका साथ छोळ दिया। तो भी सारदेसपर आक्रमण और किलेको छोळकर बाकी नगरपर बागियोके अधिकारने दूसरे यूनानी अुप-

निवेशोको भी विद्रोह करनेके लिअे अुत्साहित किया। बारी बारीसे उन्होने स्वतन्त्रताकी घोषणा की। ईरानियोने विद्रोहको दबाना चाहा। बागियोको अेकाध जगह युद्धमे सफलता हुअी और अिस प्रकार अेक बळे युद्धका आयोजन हो गया। अिस युद्धका निपटारा लेदके सामुद्रिक संघर्ष-के साथ २९४ अी० पू० मे हुआ। अिस सामुद्रिक युद्धमे यूनानी जंगी बेळे मे ३५३ जहाज थे। यूनानी बुरी तरहसे हारे और अिस प्रकार अेसिया तटपर बसे यूनानी अुपनिवेशो[१]का विद्रोह दबा दिया गया।

अिस सफलताके बाद दारयोश थ्रेस और मकदूनियाके विजयके लिअे बढ़ा। ईरानी सेनापतिने फिर थ्रेस विजय की, और मकदू-नियाके राजा सिकन्दरको अुसके पिताकी तरह ईरानी अधीनता स्वीकार करनेके लिअे मजबूर होना पळा। ईरानी अब यूनानपर हमला करना चाहते थे किन्तु अेक बळे तूफानने आधे नौसैनिक बेळेको नष्ट कर दिया। अिस प्रकार ईरानका पहिला अिरादा विफल रहा। तीन वर्ष बाद ४९० अी० पू० मे फिर यूनानपर चढाअीका आयोजन हुआ। अेक अपार नौसैनिक बेळा यूनानके विरुद्ध भेजा गया। कितनी ही छोटी-छोटी लळाअियोमे ईरानको विजय प्राप्त हुअी। किन्तु अन्तिम निपटारा जाकर माराथोन्के युद्धमे हुआ। वस्तुतः यह निपटारा यूनान और ईरानके बीचका नही, बल्कि अेसिया और यूरपके बीचमें था। यदि ईरानको अिस समय सफ-लता हुअी होती तो संसारका अितिहास ही दूसरा होता और फिर यूरपकी जगह अेसिया ससारपर शासन करता।

---

[१] **वस्तुतः अिन्हीं अुपनिवेशोंका नाम 'यवन' था। चूँकि ग्रीक लोगोंके ये भाअी-बन्द थे; और अेसियावालोंका पहले पहल अिन्हींसे परिचय हुआ था; अिसलिअे अुन्होंने सभी ग्रीकोंको यवन कहना शुरू कर दिया। अेक अङ्गके नामसे सारे शरीरका पुकारा जाना जैसे हिन्दू और पारसी शब्दोंसे होने लगा अुसी तरह यहाँ भी हुआ।**

मराथोन्के युद्धमे अेक लाख औरानी शामिल हुअे थे जिनमे कमसे कम ५० हजार तो सैनिक रहे होगे। यद्यपि सख्याके ख्यालसे यह सेना यवन-सेना (दस हजार)की अपेक्षा बहुत बळी थी। किन्तु संख्यामे कम होनेपर भी यवन सेना अधिक सगठित और सुशिक्षित थी। यवन-सेना को अेक और भी अनुकूलता थी। वह अपनी भूमिपर लळ रही थी, जिसकी हरेक घाटी, पहाळ और नदी अुसको मालूम थी। तीसरी बात यह थी कि यूनानी लोग भली भाँति जानते थे कि अिसी युद्धपर अुनका जन्म और मरण निर्भर है। अिसलिअे वह अपनी सारी शक्ति लगाकर लळ रहे थे। विरोधी यूनानी भी औरानी सेनाकी वीरता और युद्धपटुताके कायल थे। अेक घमासान युद्धके बाद विजय देवीने यूनानको जयमाला पहनायी। अिस शुभसमाचारको सुनानेका भार अेक घायल दूतको दिया गया था। वह विजयके नशे मे मस्त अितने जोरसे दौळता हुआ अेथेस पहुँचा कि "विजय हमारी रही", यह सुनाकर वही गिरकर मर गया। मराथोन्के युद्धक्षेत्रमे ६ हजार यूनानी सैनिक मारे गये। दारयोश्को असफल हो औरान लौटना पळा। अुसने अपना बाकी समय राज्यकी देख-भाल तथा कला और विद्या सम्बन्धी अुन्नतिमे लगाया। ३६ सालके दीर्घ शासनके बाद दारयोश्ने ४८५ अी० पू० मे शरीर छोळा।

क्षयार्श (४८५-४६६ अी० पू०)

दारयोश्की मृत्युके बाद अुसका पुत्र क्षयार्श (Xer.es) गद्दीपर बैठा। अुसकी सुन्दरता और सुडौल तथा सुपुष्ट शरीरकी सभी तारीफ करते थे। किन्तु अुसमें अपने पिता जैसी प्रतिभा और योग्यता न थी; साथ ही पिता जैसे ही अुसके भी बळे बळे मंसूबे थे। मन्त्रियोंने यूनानियोंसे पिताकी पराजयका बदला चुकानेके लिअे अुसे अुकसाना शुरू किया। ४८४ अी० पू० में मिश्रमें विद्रोह हो गया। अुसको दबानेके लिअे क्षयार्शने स्वयं प्रस्थान किया। दूसरे साल बाबुलने भी बगावत की

और अुसे भी मिश्रकी ही तरह असफल होना पळा। अिस प्रकार अिन दो बगावतोको दबाकर ४८१ ओी० पू० मे क्षयार्शा यूनानपर चढ़ाओी करनेके लिअे तैयार हुआ। जितनी सेना अिस चढ़ाईके लिअे तैयार की गओी थी अुससे पहले कभी किसीने अुतनी सेना तैयार न की थी। अिसमें साम्राज्यके सभी भागोके सैनिक शामिल थे। हिन्दुस्तानी सैनिक भी अपने रथोके साथ गअे थे; यद्यपि यूनानकी पहाळी भूमिमे अिन रथोका कोओी अुपयोग न हो सकता था। प्राचीन अितिहासकार हेरोदोतोके कथनानुसार अिस अभियानमे अेक हजार दो सौ जंगी जहाज तथा २३ लाख १० हजार सैनिक (१७ लाख पैदल, १ लाख सवार, बाकी नौसैनिक और मल्लाह) थे। यूरपमे प्राप्त सहायताको भी सम्मिलित कर लेनेपर कुल संख्या ५० लाख तक पहुँच जाती है। इतनी बळी सेनाके खाने पीने तथा संचालनकी व्यवस्था करना कोई साधारण काम न था। यह बतला रहा है कि ओीरानी सेना कितनी सुसंगठित और सुव्यवस्थित थी।

यूनानको भी अिस बळी तैयारीका पता लग गया था और आत्म-रक्षाके लिअे अुसने भी अपनी तैयारियाँ शुरू करदी थी। सारी हेलेनिक (=यूनानी) जातिको संगठित करनेकी कोशिश की गओी और उसमे कुछ हद तक सफलता भी हुओी। यूनानी लोगोने जब सेनाके प्रस्थानकी खबर सुनी तो अेथेंसको खाली कर अुन्होंने लळके-बच्चोंको दूसरी जगह भेज दिया। ओीरानी सेना विना रोक टोकके मकदूनिया और थेसलीसे पार हो गओी। पहली भिळन्तसे पहले ही करीब-करीब सभी उत्तर और मध्यके हेलेनिक राज्योने ओीरानकी अधीनता स्वीकार कर ली। थर्मापोलीमे पहला भीषण संघर्ष हुआ। यूनानी योद्धाओंने अपनी वीरतासे दुश्मनके छक्के छुळा दिअे और वे पहाळी घाटियोंको पारकर आगे बढ़ न सके। अुसी समय अेक देशद्रोहीने दूसरा रास्ता बतला दिया और ओीरानी सेना पहाळी पार करनेमें सफल हुओी। सारी सेनाको पीछे हटनेके लिअे आज्ञा हुओी किन्तु तीन सौ स्पार्टन सैनिक अपने स्थानपर डटे रहे और वे तब तक न हटे जब तक उनमें से अेक-अेक

शत्रुसे लळते-लळते वहीं गिर न गया। थर्मापोलीके अिन वीरोंकी वीरता संसारमें अमर है।

कितने ही छोटे छोटे युद्धोंमें यूनानियोको परास्त करते हुअे अीरानी सेनाने अन्तमें अेथेंसपर अधिकार कर लिया। अेथेंसके काष्ठ-प्राकार और अुसकी मुट्ठी भर सेना अीरानियोका क्या मुकाबिला कर सकती थी? अेथेन्सपर अधिकार जमा विजेताओने अुसके साथ वैसा ही वर्ताव किया, जैसा यूनानी बागियोने सार्देसके साथ किया था। अत्तिका प्रान्त और अेथेन्सके विजयसे क्षयार्शने समझा,—अन्तिम विजय अुसके हाथमें आना ही चाहती है। किन्तु अुसको क्या मालूम था, कि अुसका अनुमान सोलहों आने गलत निकलेगा।

अेथेन्सवालोंने सलामी द्वीपमे शरण ली। अन्तिम भाग्यके निपटारेके लिअे सामरिक पोत जमा किअे जाने लगे। यह सारी हेल्ला जातिके जीवन-मरणका प्रश्न था। सबने अिसमें सहायता करना अपना कर्त्तव्य समझा; और अिस प्रकार यूनानी चार सौका जहाजी बेळा जमा करनेमे सफल हुअे। अीरानी बेळेको काफी क्षति अुठानी पळी, किन्तु अब भी वह संख्यामें अधिक था। अेथेन्सके पतन, और अीरानी सेनाके शीघ्रतासे आगे बढ़नेने यूनानियोको निराशसा कर दिया था, तो भी अुन्होने हिम्मत नही छोळी। सलामीकी तंग खाळीमे दोनों पक्षोका युद्ध हुआ। अुस तंग जलतलपर अीरानकी भारी-भरकम नौसेना अुतनी फुर्ती नही दिखा सकती थी, जितना कि यूनानी सामरिक पोत। दिन भरकी लळाअीमें अीरानके दो सौ जहाज ही नही, बल्कि अुसके साथ ही अुनकी विजय-आशा भी डूब गअी। यूनानियोंको अिसका क्या पता था। वह सबेरे लळाईकी प्रतीक्षा कर रहे थे, किन्तु देखा समुद्रमें शत्रुका कही पता नही। क्षयार्शने अपने सेनापति मर्दोनियस्को बदला लेनेका भार सौप यूरोप छोळ दिया। मर्दोनियस्ने अेक बार फिर अेथेन्सपर अीरानी झंडा गाळा। किन्तु ४८७ अी० पू०में पलातियाके मैदानमें अेथेन्स और स्पार्ताके वीरोंने तीसरी

वार अीरानको परास्तकर यूनानकी स्वतन्त्रताका अन्तिम फैसला अपन, पक्षमें कर लिया। आरम्भमे मर्दोनियस्को कअी बार सफलता हुअी किन्तु पीछे भाग्य अुसके विरुद्ध हुआ, और अन्तमें युद्ध-क्षेत्रमें अपने वीर सेनापतिको मरा देखकर सेनामे भगदळ पळ गअी। माराथोन् और सलामीके विजयपर पलातियाने हमेशाके लिअे अपनी मुहर लगा दी।

यूरोपमें अीरानके विजयका प्रभाव वही तक परिसीमित न रहा; अुसका असर अेसियाके तटपर बसे यूनानी अुपनिवेशोपर भी पळा, और धीरे धीरे वह सब स्वतन्त्र हो गअे। अितना होनेपर भी अेसियामे विस्तृत अीरानी साम्राज्यको किसी प्रकारकी हानि नही पहुँचना, तथा डेढ़ सौ वर्षो तक अीरानकी शक्तिका अक्षुण्ण रहना बतलाता है कि, दॉरयोशकी शासन-व्यवस्था कितनी दृढ़ थी, और अीरानी जातिको परिस्थितिके अनुसार अपनेको सँभाल लेनेकी कितनी योग्यता थी।

क्षयार्श १३ वर्ष तक (४६६ अी० पू०) और जीता रहा, किन्तु अुसका वह जीवन, जुगुप्सित विलासितापूर्ण जीवन था। अिसमे वह यहॉ तक डूब गया, कि अन्तमे अुसे अपने महाप्रतिहार (शरीररक्षकोके अफसर)के हाथों अपनी जानसे हाथ धोना पळा।

दारयोश महान्का शासन अीरानके वैभव सूर्यका मध्याह्न काल है। अुसके वाद वह नीचेकी ओर ढलने लगा सही, किन्तु अभी सायंकालमे बहुत देर थी। जब जब हम दारयोशके सिहासनके अुत्तराधिकारियोंको देखते है, तो आश्चर्य होता है, कि अखामनशी वंश कैसे ३३० अी० पू० तक अपनी सत्ताको कायम रख सका। जान पळता है, जिस वक्त अुसके राजाओमें कीळा लग चुका था, अुस वक्त भी अीरानी जाति स्वस्थ और दृढ़ थी।

और ओीरानको वैभवके शिखरपर पहुँचानेवाले वशको वह अपने हाथों नेस्त-नाबूद (=नासीत्-नाभूत) नही करना चाहती थी। लेकिन वह कितने समय तक अिसको टाल सकती थी।

३—यूनानी शासन (३३०-२४६ अी० पू०)

जिस समय अीरानकी यह अवस्था थी, अुसी समय यूनानमे अेक नअी शक्ति संगठित हो रही थी। अीरानके बार बारके खतरनाक हमलोके कारण, सदा अपने व्यक्तित्वको अलग रखनेके पक्षपाती यूनानी प्रजातंत्र यद्यपि अेकता के सूत्रमे बँधनेके लिअे मजबूर हुअे थे; लेकिन अुनकी यह अेकता कामके समय तक ही चल पाती थी। दारयोश और क्षयार्शके हमलोके समय अेथेन्स, स्पार्ता आदिने मिलकर मुकाबिला किया। लेकिन पीछे फिर आपसी झगळे शुरू हो जाते थे। यह बीमारी अुनमे अितनी अधिक थी, कि अपने झगळो-की पंचायतके लिअे वह अीरानके सम्राट्का मुँह ताकते थे। मकदूनियामें राजतंत्र था। वहाँके लोगोंमें अेथेन्स आदिकी भाँति अपने व्यक्तित्वका अुतना ख्याल न था। यूनानी प्रजातंत्र अप्रजातंत्री यूनानियोंको बर्बर और असभ्य मानते थे। अुनकी दृष्टिमें मकदूनिया वाले भी वैसे ही थे। ३५९ अी० पू० मे फिलिप मकदूनियाकी गद्दीपर बैठा। यह बळा ही योग्य नेता तथा अच्छा शासक था, साथ ही बहुत महत्त्वाकांक्षी था। अुसने अीरानी साम्राज्य और यूनानी प्रजातंत्रोसे सभी वह युद्ध-कौशल और शासन-दक्षताअें सीखी, जो अुसके काममे सहायक थी। चन्द ही वर्षोमें मकदूनिया—जो निर्बलकी स्त्री सबकी भाभीका अुदाहरण थी—को सारी हेलनिक जातिका नेता बना दिया। फिलिपके पुत्र सिकन्दरमें विश्वविजेताके सभी गुण थे, किन्तु अिसमे शक नही यदि, घरेलू झगळेमें फिलिपकी ३३६ अी० पू० में हत्या न कर दी जाती, तो विश्व-विजयी होनेका सेहरा फिलिपके ही सिर बँधता।

सिकन्दर (३३६-३२३ अी० पू०)

फिलिपकी मृत्युके समय सिकन्दरकी अवस्था बीस वर्षकी थी। किन्तु अितनी छोटी अवस्थामें भी वह अपनी युद्ध-चातुरी दो लळाअियोंमे प्रकट

कर चुका था। पिता अपने पुत्रकी योग्यताको जानता था। अुसने अुसकी शिक्षापर पूरा ख्याल रक्खा था। जहाँ अुसे अेक योग्य सेनानायक होनेकी शिक्षा मिली थी, वहाँ अरस्तू जैसे विज्ञका ज्ञानभंडार अुसके सामने खुला हुआ था। अिस प्रकार बीस वर्षकी आयुमे ही अुसका दिमाग प्रौढ और परिपक्व था। फिलिपसे असन्तुष्ट मकदूनियाके शत्रुओने पहिले सिकन्दरकी योग्यताका गलत अन्दाज लगाया, किन्तु सिकन्दरने थोळे ही समयके भीतर अुन्हे बतला दिया, कि अुनका ख्याल गलत है। फिलिपने अेथेन्सके ढंगपर शिक्षित पैदल सेना तथा अीरानके ढंगपर सुसंगठित रिसालेको तैयार कर अपने बेटेको सौंपा था।

सिकन्दरको मकदूनियाके अुत्तर-दक्षिणके शत्रुओंको सीधा करनेमे दो वर्ष भी न लगा, और ३३४ अी० पू० के वसन्त तक अुसने अीरान साम्राज्यपर चढ़ाअी करनेके लिअे प्रस्थान कर दिया। यदि हम अीरानके जन-धनसे मुकाबिला करते हैं, तो सिकन्दर अुसके सामने कुछ भी नही था। सारे अेसियाअी यूनानी अीरानका साथ दे रहे थे। अुसका समुद्री बेळा भी विशाल और दृढ था। अीरानका सम्राट् तृतीय दारयोश अपनेसे थोळे समय पहिले वाले सम्राटोसे अधिक योग्य था। हाँ, अेक बातका फर्क जरूर था, कि जहाँ मकदूनियाकी नसोंमें ताजा और गर्म खून बह रहा था; वहाँ अीरानी साम्राज्य, विशेष कर, अखामनशी राजवंशोंमें बुढापेकी ठंडक और दुर्बलता थी। तीन सौ वर्षोंके शासनके वैभव और सम्मानने अुसे परिस्थितिके अनुसार नअी तरहसे सोचने तथा नया जीवन धारण करने लायक नही रहने दिया था। जहाँ यूनानियोंकी शताब्दियोकी प्रजातंत्री शिक्षाने सिकन्दरके सिपाहियो तकमें अनुशासन-पालनके साथ आत्म-सम्मान और आत्मावलंबनका भाव भर दिया था, प्रबल राष्ट्रीयताका आवेग पैदा कर दिया था; वहाँ अीरानी प्रजा अपनेको सम्राट् और अुसके बळे अधिकारियोंको अकिंचन दास समझती थी। देशके लिअे अुसमें वैसी अुग्र भावनाअें नही थीं, जैसी कि सिकन्दरके अनुयायियों-

मे। अिसपर भी ओीरानी सेनाने जिस बहादुरीके साथ अपने शत्रुओका मुकाबिला किया, अुसकी यूनानी भी दाद देते है।

ओीरानियोने सबसे बळी गलती यह की, कि अुन्होने सिकन्दरको अेसियामे प्रवेश करते ही समय नही रोका। बेरोकटोक सिकन्दरको समुद्र पार होने दिया गया। समुद्रतटपर भी मुकाबिलेके लिअे अुन्होने वैसी सरगर्मी नही दिखलाअी। अुन्होने समझा, पहिले अेक दो छोटे छोटे यूनानी हमलोकी भाँति अिसका भी दबाना अुनके लिअे बाये हाथका खेल होगा। प्रस्थानके समय सिकन्दरके पास तीस हजार पैदल और पाँच हजार सवार सेना थी। ग्रानिकुस् (Granicus)के तटपर पहिली लळाअी हुअी। ओीरानी सेनाका सेनापति तथा सम्राट्का दामाद मिथ्रदात सिकन्दरके हाथो मारा गया। ओीरानी सेना बुरी तरह हारी, और विजयश्री सिकन्दरके हाथ रही। अिसके बाद सारे क्षुद्र-अेसियासे ओीरानकी संगठित सेना लुप्त हो गअी। सार्देसको अुसके कायर क्षत्रपने बिना युद्धके ही अर्पण कर दिया। केन्द्रीय सरकारकी निर्बलतासे फायदा उठाकर क्षत्रपोने सेनापति और प्रधानामात्यके पदको भी अपने ही हाथमे कर लिया था, जो क्षत्रपके निर्बल और अयोग्य होनेपर साम्राज्यके लिअे बळा हानिकारक साबित हुआ। सिकन्दर अपने विजयको स्थायी विजयका रूप देना चाहता था। सिकन्दरने सैनिक और नागरिक अधिकार दो पृथक् अधिकारियोके हाथमें दिये। स्थान स्थानपर अुसने अपनी छावनियाँ कायम की। सिकन्दरने आगेका कितना ही समय समुद्र-तटवर्ती प्रदेशो, विशेषकर यूनानी अुपनिवेशोंको जीतनेमे लगाया, और फिर ओीरानी सम्राट्से मुकाबिला करनेके लिअे आगे (३३३ ओी० पू० में) बढ़ा। दारयोश तृतीय छै लाखकी सेनाके साथ अिसुस् (Issus) मे अुससे लळनेके लिअे तैयार था। सलामीकी भाँति यहाँ भी युद्धक्षेत्रकी संकीर्णता ओीरानकी भारी-भरकम सेनाके विपक्षमें थी। यही ओीरान और अुसके साथ अेसियाके भाग्यका अन्तिम निबटारा हुआ। दोनों ओरकी सेनाओंकी मुठभेळ हो ही रही थी, कि दारयोशने भयभीत हो अपना स्थान

छोळ दिया। अुसे भागते देख सेनाकी भी हिम्मत टूट गअी। और फिर भगदळ तथा भगनेवालोकी निर्दयतापूर्ण हत्या। कहते है, अिस लळाअीमे अेक लाख औरानी सैनिक काम आये। दारयोशके रनिवासके बदी होनेके साथ सिकन्दरके हाथमे अेक भारी खजाना भी आया। रनिवासके प्रति सिकन्दरका बर्ताव सहानुभूतिपूर्ण था। मिश्र तथा पश्चिमके अेसियाअी प्रान्तोपर अधिकार जमा सिकन्दर फिर औरानकी ओर मुळा। अर्बेला (मेसोपोतामिया) मे अेक बार फिर दारयोशने मुकाबिला करना चाहा। यहाँ सम्राट्की सेना सख्यामे दस लाखसे अूपर थी। यहाँ भी दारयोश, निबटारा होनेसे पहिले ही भाग खळा हुआ; और अिसके बाद फिर अुसे जमकर लळनेकी हिम्मत न हुअी। सिकन्दरने दो दिन पीछा किया, किन्तु वह दारयोशको न पकळ सका। अिसके बाद वह, स्थान स्थानपर सेनाका प्रबध करते आगे वढता गया। राजधानी सूसामे अुसे शाही खजाना हाथ लगा।

अब सिकन्दर मध्य-औरानके अूँचे मैदान, औरानी जातिकी पवित्र मातृभूमिकी ओर अग्रसर हुआ। रास्तेके विकट पहाळी दर्रेपर अेक बार फिर मुकाविला करनेकी कोशिश की गअी, किन्तु हिम्मत और विश्वासकी कमीसे अुसमे सफलता न हुअी। ३३० औ० पू०मे सिकन्दर औरानकी राजधानी पर्सेपोलीमे दाखिल हुआ। यहाँ पीढियोसे जमा होता, अितना बळा खजाना अुसके हाथ लगा, जिसके ढोनेके लिअे दस हजार खच्चर गाळियो तथा पाँच हजार अूँटोकी जरूरत पळी। शहरमें कतल-आम जारी हो गया। दारयोश महान्के बनाये विशाल स्तम्भोवाले भव्य प्रासाद, तथा दूसरी अिमारतोंमें आग लगा दी गअी। क्षण भरमे अिन्द्रपुरी जैसी पर्सेपोली अपनी अद्भुत कलाके साथ जलकर खाक हो गअी। सिकन्दरकी अुस क्रूर ध्वंस-लीलाका साक्षी अब भी पर्सेपोलीके बचे हुअे स्तूप दे रहे हैं; और दर्शकके हृदयमें अुस महान् विजेताके प्रति वही भाव प्रकट करते है, जिसे अेक अमेरिकन अितिहासकारने अिन शब्दोंमें लिखा है—"जो कलाके प्रति युद्ध करता है, वह राष्ट्रोंके प्रति नही सारी मनुष्यजातिके प्रति युद्ध करता है।"

हम्मतन (वर्तमान हम्दान)मे मोर्चा लेनेकी तैयारी हो रही है, अिसे सुन सिकन्दर अुधर दौळा, किन्तु वह हल्ला ही हल्ला था। दारयोश अपनी जान बचाता फिर रहा था। सिकन्दर अुसके पीछे मध्य-अेसियाकी ओर बढ़ा, किन्तु दम्‌गानके पास अुसे रास्ते में परित्यक्त दारयोशकी ताजी लाश मिली। सिकन्दरने सम्राटोंके योग्य सत्कारके साथ अुसे पर्सेपोलीमे दफनाया। अिस प्रकार ओरानी अितिहासके रंगमचसे अुस राजवंशका सूर्य अस्त हुआ, जिसने ओरान, अेसिया और आर्य जातिके वैभवका सिक्का संसारके दिलपर बैठाया था।

पूरी तरह अधिकार जमानेके लिअे सिकन्दरको ओरानमे और रहना पळा; और, ३२८ ओ० पू० में वह हिन्दूकुश पार कर सका। अुसका पहला लक्ष्य बलख (संस्कृत, वाल्हीक) था, जो ओरानी साम्राज्यके प्रधान शहरोमे था। बलखके विजयमे अुसे दिक्कत न हुअी; किन्तु सीथियनके साथ मिलकर सुग्ध लोगोने खूब डटकर मोर्चे लिअे। अिस प्रकार ओरानके पूर्वी प्रान्तोको विजय करनेमे सिकन्दरके दो वर्ष लग गअे।

३२७ ओ० पू० मे सिकन्दरने १,२०,००० सेनाके साथ फिर हिन्दू-कुश पारकर भारत-विजयके लिअे प्रस्थान किया। काबुल और खैबरमे अुसका किसीने मुकाबिला नही किया। तक्षशिलाके राजाने खुद आकर अुसकी अधीनता स्वीकार की। किन्तु झेलमके पूर्वी तटपर पोरस् (पुरु)ने अितना जबर्दस्त मुकाबिला[1] किया कि, विजय प्राप्त करनेपर भी सिकन्दर को कहना पळा[2]—'अिस जबर्दस्त मुकाबिले तथा सैनिकोकी हानिने यूनानी सेनाकी हिम्मतको पस्त कर दिया"। अपने सेना-नायकके जोर देने

[1]Persia, S.G.W. Benjamin p. 146, "I see at last a danger that matches my courage. It is at once with wild beasts and men of uncommon mettle that the contest now lies".

[2]P.M. Sykes Vol. p. 293.

पर सेना चनाब और रावीको पार करके व्यासके पश्चिमी तटतक पहुँची। यही सेनाको मालूम हुआ कि, अभी तक जिनसे वे लळते रहे थे, वह तो छोटे-छोटे सामन्त या गण-राज्य थे। मगधके महान् साम्राज्यकी सीमा, तो अब आरम्भ होनेवाली है, जिसकी चतुरंगिणी सेना अपार है। सेनाकी हिम्मत टूट गअी। अुन्होंने आपसमें सलाहकर आगे चलनेसे अिन्कार कर दिया। सिकन्दरने बहुतेरा जोर लगाया; किन्तु अुसकी अेक न सुनी गअी। तीन दिन तक बातचीत तक करना भी छोळ दिया, फिर भी कोअी असर न हुआ। अन्तमे (३२६ अी० पू० के शरदमे) अुसे वहीसे पीछे लौटना पळा।

सिकन्दरने अपनी सेनाको दो भाग कर अेकको समुद्रके रास्ते भेजा और दूसरेको स्थल-मार्गसे ले चला। ३२४ अी० पू०मे वह ओपिस् (बगदादके पास) पहुँचा। यही सिकन्दरने अपने सरदारोको भारी भेंट देकर देश लौट जानेके लिअे कहा। यूनानी वैसे भी सिकन्दरके शाहाना ठाट-बाटको स्वीकार करने तथा पूर्वी लोगोको शिक्षितकर यूनानियोका स्थान देनेसे असन्तुष्ट थे। अिसपर सभी यूनानियोने पचायत कर छुट्टी पानेकी माँग पेशकी। सिकन्दरने सरगनोंको अुसी समय प्राण-दण्ड दिया; और अीरानी सेनाको खूब फटकार कर महलमे चला गया। अुसने अीरा-नियोको अपने शरीर-रक्षक, मुसाहिब तथा दूसरे बळे-बळे पदोंपर रखना शुरू किया। अन्तमें अुसके यूनानी साथियोको क्षमा माँगनी पळी। सिकन्दर शान्त बैठने वाला आदमी न था। अुसने फिर विजय-यात्रा शुरू की; और, जब वह ३२३ अी० पू०में बाबुलमें पहुँचा, तो वही अुसे बीमारीने आ दबाया; और ३२ सालकी आयुमें अिस दिग्विजयी वीरका देहान्त हो गया।

यद्यपि अीरान अिस समय राजनीतिक तौरसे यूनानके अधीन था; किन्तु वह राज्य-व्यवस्था और सभ्यतामें उस वक्तकी दुनियाका अगुआ था; अिसलिअे विजेताको पराजितका शिष्य बनना पळा। यूनानने अपने साम्राज्यके संचालनके लिअे सारी बातें अीरानसे ली। यूनानियोंने पोशाक-

की भी कितनी ही बातें ओीरानसे सीखी। सिकन्दरने खुद पायजामा पहना, जो ुस वक्त तक ओीरानी पोशाक समझी जाती थी। सिक्के तथा कितनी ही बातोके मूल विचार ओीराननें ही दिये।

सिकन्दरके ुत्तराधिकारी

सिकन्दरकी लाश अभी ठण्डी भी नही होने पायी थी कि ुसके सरदारों मे हिस्से-बखरेके लिओ झगळा शुरू हो गया। ११ वर्ष (३१२ ओी० पू०) तक यह गृह-युद्ध चलता रहा; और, िसीमें सिकन्दरका वंश ुच्छिन्न हो गया। अन्तमे साम्राज्य जितने टुकळोमे बॅटा, ुसका सबसे बळा भाग—ओेसियाओी भाग—सेल्युकस्‌के हाथमे आया। िसी बीच भारतमे चन्द्रगुप्त मौर्यने नन्द-साम्राज्यको ही हस्तगत नही किया; बल्कि ुसने पंजाबसे भी यूनानी शासनको हटा दिया। सेल्युकस्‌ने घरकी लळाअियोसे छुट्टी पा ओेक बार चन्द्रगुप्तसे पंजाब लौटानेका प्रयत्न किया; किन्तु िसमे उसे विफल होना पळा और अपनी कन्याके साथ हिन्दूकुश तकके भागको देकर सुलह करनी पळी। िस सुलहके ुपलक्ष्यमे दामादने ससुरको ५०० हाथी दिओ, जिनकी सेल्युकस्‌को अपने प्रतिद्वंदियोके मुकाबिलेमें बळी आवश्यकता थी। ३०१ ओी० पू०मे अपने सभी प्रतिद्वन्दियोंको परास्त-कर सेल्युकस् भूमध्यसागरसे हिन्दूकुश तक फैले विशाल साम्राज्यका अकं-टक स्वामी बना। तबसे २८१ ओी० पू० तक ओीरान भी ुसीके अधीन रहा।

सेल्यूकस्‌का पुत्र प्रथम अन्तियोक (२८१–२६२ ओी० पू०) भी पिताकी भाँति ही प्रतापी था। किन्तु ुसके ुत्तराधिकारी द्वितीय अन्तियोक (२६२-२४६ ओी० पू०)के समयसे राज-शक्तिका ह्रास होने लगा। िसीके समयमें २५६ ओी० पू०में बाख्तर(सोवियत तुर्किस्तान)के शासक दिओोदोतुने ओेक अलग राज-वंशकी स्थापना की। पीछे मौर्य-साम्राज्यके पतनके बाद िसी वंशन पंजाब को दखल कर लिया। िसी समय २४९ ओी० पू०में प्रथम

अर्शक (Arsaces I)ने सेल्युकस्के शासनसे स्वतन्त्र हो अशकानी (पार्थियन) राजवंशकी स्थापना की।

यूनानी शासनके ८४ वर्षोंमें (३३०–२४६ ओ० पू०) ओरानपर बहुत-सी बातोंका असर पळा था। हम कह चुके हैं कि, अपने विस्तृत साम्राज्यके सचालन तथा कितनी ही और सभ्यताकी चीजो तथा तरीकोंको यूनानियोने ओरानसे सीखा। सबसे बळी बात यह थी, कि, पराजित होनेपर भी ओरानियोके साथ यूनानियोंने समानताका बर्ताव किया। बळे बळे राजकीय पदोपर ओरानी नियुक्त किओ गओ। सेनाके बळे बळे जेनरल तथा प्रान्तोके कितने ही क्षत्रप ओरानी थे। यूनानके बळे बळे सरदारोने ही नही; बल्कि स्वयं सिकन्दरने राज-कन्या रोखना (Roxana)से विवाह किया, और यही अुसके अुत्तराधिकारीकी माता हुअी। सेल्यूकसूकी स्त्री अेक ओरानी सरदारकी लळकी थी। वस्तुतः यदि दूसरी पीढ़ी और अुसके बादके यूनानी शासकोकी ओर देखे, तो प्रायः सभी रक्तसे आधे ओरानी मिलेगे। बाख्तरी यूनानियोकी अधीनताके समय भारतीय प्रान्तोके क्षत्रपोंमे हमे कितने ही ओरानी मिलते है। यह समानताका बर्ताव ही था, जिसने ओरानियोंको बगावतका झण्डा नही अुठाने दिया।

४—अशकानी वंश (२४६ अी० पू०–२२६ अी०)

२५६ अी० पू०में बाख्तरके यूनानी स्वतन्त्र हो गये, यह हम कह आअे हैं। अुसी समय (२४९-२४७ अी० पू०) वर्त्तमान सोवियत तुर्किस्तानके पश्चिमी भागके खानाबदोशोका अेक सरदार अर्शक भी मौका ताक रहा था; और, २४९ अी० पू०मे अुसने अेक नये राज-वंशकी स्थापना की। किन्तु बाख्तरीको यूनानियोकी प्रतिद्वन्दिताके कारण अशकानियोंको अपना प्रदेश छोळ हिन्दूकुश पार हो खुरासानकी ओर जाना पळा। अिस प्रदेशका अुस समयका नाम पार्थिया (सस्कृत, पार्थिव) था; अिसलिअे अशकानी लोग पार्थियन भी कहे जाते हैं। भाषा और जातिके ख्यालसे पार्थियन लोग अीरानियोके भाअी थे; किन्तु अीरानी अितिहासकारोने अुन्हे विदेशी जैसा ही माना है। कोरोश और दारयोशको पैदा करनेका अभिमान अुनमें अितना था कि, वह पार्थियनोंको असभ्य, म्लेच्छ तथा बर्बर मानते थे। शायद यही कारण था, जो पार्थियन शासकोने भी साधारण अीरानियो से अपनेको अलग-अलग रक्खा।

पहले पहल अशकानी राजवंश अेक छोटेसे रूपमें ही स्थापित हुआ था। अिस वंशके अितिहासका ज्ञान हमें अुनके सिक्कों तथा कुछ रोमन और यूनानी लेखकोंके, जहाँ-तहाँ मिलते बिखरे लेखोसे ही प्राप्त हो सका है। प्रथम अर्शकका अन्त कैसे हुआ, अिसका पता नही। संभव है, वह किसी युद्धमें मारा गया हो। अर्शक द्वितीय (२४७–२१४ अी० पू०) अुसका भाअी था। अशकानी राज्यकी स्थापनामें अुसका भारी हाथ था। भाअीके मरनेपर वही राजा बना। वास्तवमें अर्शक द्वितीय ही पार्थियन साम्राज्यका संस्थापक था। अुस समय सेल्यूकी शासकोंकी अयोग्यता और निर्बलताके कारण राज्यके सभी भागोंमें मनमानी हो रही थी। बाख्तर अलग हो गया

था। गृह-कलहका दौर-दौरा था। अर्शक द्वितीयके लिअे यह सुनहला मौका था। अुसने अपने राज्यको खूब वढाया। सेल्यूकस् द्वितीयने अिसका विरोध किया। अेक वळे युद्धमे अुसे परास्त होना पळा; और, अिस प्रकार पार्थियाने ससारको अपनी स्वतन्त्रताका परिचय देनेमे सफलता प्राप्त की।

मिथ्रदात प्रथम (१७०-३८ अी० पू०)

अर्शक द्वितीयके बाद पार्थियाकी अवस्था डावॉडोल हो रही थी। अुसके अभ्युदयमें सबसे बळा बाधक सेल्यूकी राज्य था; जिसकी गद्दीपर अुस समय अन्तियोक तृतीय (२२३–१७५ अी० पू०) था। अन्तियोकने पहले पार्थियाकी शक्तिको कुचलना चाहा। अुस मे बहुत हद तक सफलता पानेके वाद अुसने बाख्तर, काबुल, और पंजाबपर सफलता-पूर्वक आक्रमण किया। अुसकी अिस विजय-यात्रामे चार वर्ष (२०८–२०४ अी० पू०) लगे। अुस समय भारतीय अितिहासके रंगमंचसे चन्द्रगुप्त और अशोक विदा हो चुके थे। अशोकके वंशधरोने हाथी और सोनेकी भेंट दे अपनी जानकी खैर मनाअी अुसी समय पश्चिममें अेक दूसरी शक्ति, रोम पैदा हो रही थी। वह धीरे-धीरे अपनी सीमा बढ़ा रही थी तथा यूनानकी विखरी शक्तिको और बिखरनेकी प्रतीक्षामें थी। सिकन्दरके बाद मकदूनिया यूनानीशक्तिका प्रभावकेन्द्रमें हो चुका था। अेथेन्स अब अपने पुराने गौरवके कारण सम्मानपात्र समझा जाता था। रोमने कअी बारके प्रयत्नके बाद मकदूनियाको हराया। अदूरदर्शी अन्तियोक अुस समय तमाशा देख रहा था। मक्दूनियासे निबट लेनेपर अब रोमकी दृष्टि अन्तियोककी ओर गअी। कअी युद्धोंमें परास्त होनेके बाद १८८ अी० पू०में अपामोयाकी सन्धिके अनुसार साम्राज्य-शक्ति यूनानके हाथसे रोमके हाथमें चली गअी। अन्तियोकका भाग्य-सूर्य अब अस्तोन्मुख था। कहाँ अुसने पंजाब तक अपनी विजय-यात्रा की थी और कहाँ अब

पख कटे पक्षीकी भाँति मेसोपोतामियाके पास-पळोसके कुछ प्रदेशोका स्वामी था।

जिस समय सेल्यूकी राज्यकी यह दुरवस्था होनी आरम्भ हुआी थी, अुसी समय पार्थियाकी बागडोर मिथ्रदात जैसे सुचतुर योद्धाके हाथमें आओी। अुस समय पार्थियन साम्राज्यके पूर्वमे बाख्तरी यूनानी थे। अिन्हीके हाथमें काबुल और पजाब थे। पश्चिममे मुकाबिला सेल्यकी साम्राज्यसे था। मिथ्रदातने पहले अपने पूर्वी पळोसीके अूपर हाथ बढ़ाया; और, उसके दो प्रान्तोके जीतनेमे सफल हुआ। फिर अुसने पश्चिमकी ओर मुँह मोळा। ओरानका पश्चिमी भाग मद्र भी आसानीसे अुसके हाथमे आ गया। सेल्यूकी सम्राट् देमित्री द्वितीय (Demetrius II) खतरेको समझ रहा था। अुसने पार्थियाकी बढ़ती शक्तिको तोळनेके लिअे युद्ध छेळा; किन्तु मिथ्रदातके मुकाबिलेमे अुसको सफलता नही हो सकी। युद्ध-क्षेत्रमे ही वह मिथ्रदातका बन्दी हो गया। अिस प्रकार मिथ्रदात प्रथमने पार्थियन साम्राज्यको दृढ़ कर बळे गौरव और सम्मानके साथ बुढापेमे १३८ ओी० पू० मे शरीर छोळा।

रोमकी शक्ति

अन्तियोक तृतीयकी मृत्यु (१७५ ओी० पू०)के साथ सेल्यूकी वशका सितारा डूब जाता है। अुसके बादमें भी यद्यपि सिरियामें अुनका राज्य रहता है; किन्तु अब वह रोमकी कृपा पर निर्भर था। अिसके बाद रोमकी शक्ति बढ़ती ही गओी। थोळे दिनोके लिअे धूमकेतुकी भाँति अर्मेनिया अेक प्रतिद्वन्दी शक्ति पैदा होती है, किन्तु अुसके नेता चतुर्थ मिथ्रदातकी मृत्युके साथ (९० ओी० पू०) वह खतम हो गओी। अब पश्चिममें रोम पार्थियाका पळोसी और प्रतिद्वन्दी होता है। पूर्वमें भी राजनीतिक नकशेका रंग बदलता है। २५० ओी० पू०में जब पार्थियन राज-वंशकी नीव पळ रही थी, चीनमे भी अेक नअे युगका आरम्भ होता है। अुस समय तक चीन छोटी-

छोटी सरदारियोमें बँटा था। चिन नामके अेक जबर्दस्त विजेताने सबको जीतकर अपने देशको अेक राज्यका रूप दिया। अुसी समय चीनका बाहरी दुनियासे परिचय हुआ। चिनका प्रभाव कितना था, अिसका प्रमाण तो चीनका अुसके नामसे प्रसिद्ध होना ही है। अिसी चिनने अुत्तर-पश्चिमके खानाबदोशोके हमलेको रोकनेके लिअे चीनकी अुस बळी दीवारको बनवाया, जो ससारके सात अजायबमे से है। चीनकी ओर बढनेका मौका न देख हूण लोगोने पश्चिमकी ओर मुह फेरा। अुनके प्रहारसे यूची लोगोने अपने प्रदेशको छोळ शकोके स्थानको दखल किया। और तब अपने स्थानसे वेदखल हो शक (१६३ अी० पू०) बाख्तरकी ओर वढ़े। अुन्हीके हमलेसे वाख्तर-राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। अिस प्रकार १५० अी० पू० मे पार्थिया, रोम और शक दोनो शक्तियोके बीचमें था। शकोकी शक्ति अुस समय अितनी बढ़ी थी कि, पार्थियन राज्यका ध्वस बिल्कुल करीब मालूम होता था। किन्तु अिसी समय पार्थियाकी राजगद्दीपर मिथ्रदात द्वितीय (१२४–८८ अी० पू०) बैठा। अुसने अशकानी सितारेको डूबतेसे निकालकर चमका दिया। अुसने शकोको अितनी जबर्दस्त शिकस्त दी कि, अुन्होने पार्थियाकी ओरसे मुँह मोळ अफगानिस्तान और भारतकी ओर अपना पैर फैलाना शुरू किया। मिथ्रदातकी राज्य-सीमा अुस समय हिमालय तक पहुँची थी। बाबुलके क्षत्रपको दबाकर अुसने अर्मेनियाकी ओर खयाल किया। १०० अी० पू०मे अर्मेनियाने अुसकी अधीनता स्वीकार की। अिस प्रकार प्रथम मिथ्रदातकी भाँति यह भी पार्थियन-वंशकी रूठी भाग्यलक्ष्मीको मनानेमे सफल हुआ। अुसकी राज्य-सीमा हिमालयसे कोहकाफ तथा मेसोपोतामिया तक फैली हुअी थी। यही पहला पार्थियन राजा था; जिसने पहले पहल चीन और रोमसे दूत-सम्बन्ध स्थापित किया।

हुर्ओद् (५५-३७ अी० पू०)

मिथ्रदात द्वितीय (मृत्यु ८८ अी० पू०)के अुत्तराधिकारियोकी अयोग्यतासे रोमने फायदा अुठाया, और अीरानको अपमानित होना पळा।

लेकिन यह अवस्था बहुत दिनो तक नही रही। ५५ ओ० पू०मे हुर्ओद् गद्दीपर बैठा। यह अशकानी वंशके प्रतापी राजाओमेसे है। अुस वक्त रोमका प्रजातन्त्र क्रासुस (Crassus) और अुसके दो सहायक कैसर और पोम्पेके नेतृत्वमे बळा शक्तिशाली बना हुआ था। राजनीतिक शक्तिमे ही नही, बल्कि वाणिज्यमें भी बहुत बढ़ा हुआ था। सारी दुनियाकी सम्पत्ति रोमकी ओर बहती हुअी चली जा रही थी। रोम सिर्फ बहाना ढूँढ़ रहा था और वह औरानपर चढ़ दौळनेके लिअे तैयार था। पोम्पेनें जैसी आसानीके साथ अर्मेनियाको जीत लिया अुससे अुसकी हिम्मत ओर बढ गअी थी। पोम्पे अेक बहादुर योद्धा था और अुसकी साठ हजार सेना अपने समयके बळे सुशिक्षित सिपाही थे। पोम्पे शत्रुको तिनकेके बराबर समझता था और अपने सोनेके लोभके लिअे, वह बदनाम था। अिन्ही दो बातोने बल्कि अुसका सर्वनाश भी किया। औरान भी रोमकी चालको देख रहा था। हुर्ओद्के अैसा सौभाग्यसे अुसे नेता मिला था। अुसका प्रधान सेनापति सुरेनस युद्ध-कौशलमे बहुत ही निपुण और स्वामि-भक्त था। ६ जून सन् ५४ ओ० पू०मे रोमन और पार्थी सेनाओने चारे (Charrae)के मैदानमें भाग्य-परीक्षा आरम्भ की। सुरेनसने अपनी सेनाका अधिक भाग पहाळकी आळमें छिपा रखा था। रोमकोंने सिर्फ पार्थी घोळसवारोंको देखा। अुन्हे शत्रुकी ताकतका पता नही लगा। रोमक घोळ-सवारोंने हमला किया। पार्थियनोंने अपनी चिराभ्यस्त चाल चली; और शत्रुके सामने भाग अुठे। अिस बीचमें रोमक लोग भी पीछा करते हुअे तितर-बितर हो गअे। अिसपर पार्थी सेना अुलट पळी और दुश्मनकी सेनाको काटकर ढेर कर दिया। अिस सफलताके बाद अुन्होने प्रधान रोमक सेनापर हल्ला बोल दिया। रोमक-सेनाकी जबर्दस्त हार ही नही हुअी; बल्कि अुसकी बहुत-सी संख्या युद्धमें काम आअी। पार्थी सेनाका नुकसान नगण्य था। रोमक सेनाका जो कुछ बचा था, अुसे भी धूप, धूल और प्यासने खतम कर दिया। सूर्यास्तके बाद पार्थी लोग युद्ध नहीं करते थे। रोमक सेनानें अुस रात

की अँधियालीको गनीमत समझा और वह अपने घायलोको युद्धक्षेत्रमे छोळ जान लेकर भाग गअी।

क्रासुस् सुरेनस्की शर्तोंको माननेके लिअे मजबूर था। सुलहकी बात करते हुअे क्रासुस्ने कोअी अैसी भूल की जिससे फिर मार-काट शुरू होगअी। क्रासुस्का सिर काट कर हुर्ओद्के पास भेजा गया। अुसने परिहास करते हुअे क्रासुस्के मुँहमें सोना भर दिया और कहा—"अब तो तुम्हारे जीवनकी अिच्छा पूरी हो गअी ?"

रोमक सेनाके मुश्किलसे २० हजार आदमी जीवित बचे थे, जिनमेसे १० हजारको कैदी बना हुर्ओदने अपने राज्यमे बसा दिया। हुर्ओदके समयमें अशकानी-वंशका भाग्य-सूर्य मध्याह्नमे पहुँचा। वही पहला पार्थी राजा था, जिसने शाहानुशाहकी पदवी धारण की। ८० वर्षकी अुम्रमें हुर्ओद् अपने ही लळकेके हाथ मारा गया।

हुर्ओद्के अुत्तराधिकारी फ्रातेसके समयमे रोमने बदला लेना चाहा; लेकिन फिर भी वह बुरी तरहसे परास्त हुआ। अिस लळाअीमे रोमके ३० हजार योद्धा काम आये। अेकके बाद अेक ये हारे अैसी करारी थी कि, अगले १०० साल तक रोमको अीरानकी ओर आँखें अुठाकर देखनेकी हिम्मत नही हुअी। जिस रोमकी विजय-ध्वजा अुत्तर, दक्खिन तथा पश्चिम सभी तरफ सफलताके साथ फहराती रही, जिसकी सेना हमेशा विजयी होती रही, अुसे अपने पूर्वी पळोसीसे बराबर हार खानी पळी। अेक पाश्चात्य अैतिहासिक लिखता है—"अितिहासके पृष्ठोपर लिखी जाने वाली यह साधारण बात नही है। प्राचीन जातियोमें सिर्फ अीरानी भू-भागमे उत्पन्न होने वाली जाति ही अैसी थी, जिसने रोमको आगे बढ़नेसे रोक दिया।"

अगले १०० वर्षोकी शान्ति पार्थिव शासक-वंशके लिअे शान्तिमय न थी। उस समय बाहरके शत्रुओका भय कम हो जानेपर आपसमें ही मार-काट शुरू हुअी। कितने राजा आये और निकाले गअे। कितने भाअियोने

भाअियोंका खून किया। अिस प्रकार अुस प्रतापी राजवंशकी शक्ति बेकार नष्ट हो रही थी। जिस वक्त चारों तरफ अिस प्रकार अन्याय और अत्याचार फैला हुआ था, अुस वक्त कुछ बहादुर, चतुर और गुणी व्यक्ति गद्दीपर बैठे, लेकिन अैसोकी संख्या बहुत ही कम थी। अिन्हीमें प्रथम **वोलोगेसस्** (ब्लाश ५१–७७ अी०) था। अिसने अपने सम्बन्धियोके साथ बळी मेहरबानीका बर्ताव किया। सन् ६३ अी०मे रोमसे फिर छेळखानी शुरू हुअी; किन्तु विजयलक्ष्मी अन्तमे अीरानके पक्षमे हुअी। वोलोगेसस् और रोम-सम्राट् **वैस्पासियन्**की आपसकी घनिष्ट मित्रता अुस समयकी अेक दुर्लभ चीज थी। धीरे–धीरे अशकानी वंशका सितारा नीचेकी ओर ढुलकता चला जा रहा था। आपसके वैमनस्य और दुर्व्यसन राज-वंशको खोखला कर रहे थे। तृतीय वोलोगेसस् (१४७–१६१ अी०)के समय रोमने अीरानी साम्राज्यपर हमला किया। वोलोगेसस् पराजित हुआ। यद्यपि पराजयसे राज्य-सीमाको बहुत धक्का नही लगा; किन्तु यह अैसी पराजय थी, जिससे सँभलनेका मौका अशकानी-वंशको फिर नही मिला।

अर्दवान् (Artabanus) (२०९-२६ अी०)

अर्दवान अन्तिम अशकानी राजा था। अच्छे शासक और योद्धाके सभी गुण अिसमे मौजूद थे। अिसमें शक नही कि, यदि कुछ समय पहले यह गद्दीपर आता, तो अपने वंशके भाग्य-चक्रको फिर कुछ समयके लिअे अपने अनुकूल घुमा सकता; किन्तु सैकळो दुर्गुणोंके कारण राज-वंश जर्जरित हो चुका था। वह लोगोंसे अपने प्रति सन्मान और भयको खो चुका था; लेकिन मरते समय भी अर्दवानने फिर अेक बार रोमको कळवा सबक पढ़ाया। चार शताब्दियोसे स्थापित हुअे अशकानी-वंशका तेज मरणोन्मुख था; किन्तु मरनेसे पहले अेक बार फिर वह बल अुठा। २१६ अी०में रोमने फिर पार्थियनोंको दबाना चाहा और दो बळे-बळे युद्धोंमें अर्दवानने रोमको बुरी तरहसे पराजित किया। रोम-सम्राट् ५० करोळ दीनार (प्रायः

३० लाख रु०) हरजाना देनेपर मजबूर हुआ। जिस वीरने अपने चिरशत्रु रोमको अिस तरह पराजित किया, वही अशकानी-वंशका अन्तिम राजा था। दुनियाके अितिहासमे ओरानसे बाहर अैसे अुदाहरण बहुत कम मिलेगे; लेकिन जब सारे वंशकी नीव सळ गअी हो, तो अेक व्यक्तिकी योग्यता अुसे कैसे बचा सकती है ?

यद्यपि पार्थी भी भाषा और जातिके खयालसे ओरानी ही थे; किन्तु अुनका मूल स्थान सभ्यताके विकासमे बहुत पिछळा हुआ माना जाता था। अिसीलिअे ओराननें––जिनकी सभ्यताका केन्द्र पारसका प्रान्त था––कभी अशकानियोको ओरानी नही स्वीकार किया। अेसियामें आये यूनानी वैसे तो बहुत बातोमे ओरानी सभ्यतासे प्रभावित थे। सेल्यूकसूने स्वयं ओरानी कन्यासे विवाह किया था; और, अैसे विवाह यूनानियो और ओरा-नियोमे आम थे। साराश यह कि, अुस समयके अेसियाओ यूनानी कितने ही अशोमे ओरानी सभ्यताके ऋणी थे। तो भी जिस समय अशकानी वंशने ओरानका राज्य सँभाला, अुस समय यूनानी सभ्यता ही सर्वोपरि मानी जाती थी। अिसीलिअे ओरानियोके प्रतिकूल मनोभावको देखकर पार्थियोने अुसे अनुकूल बनानेकी कोशिश न की। अुसकी जगह यूनानी सभ्यतामे अुन्होंने अपनेको रँगना शुरू किया। अुनके सिक्के यूनानी ढंगके बने, जिनपर लेख भी यूनानी अक्षरमे रहते थे। यूनानी कलाको अुन्होने अपनाया। अशकानी भी जरथुस्त्री धर्म को मानते थे; किन्तु वह कट्टर नही थे। वह युग भी अैसा था और साथ ही साथ अुनकी भौगोलिक स्थिति भी अैसी थी कि, अुनपर यूनान और भारतका प्रभाव पळे बिना नही रह सकता था। सूर्यका दूसरा नाम मिथ्र (संस्कृत, मित्र, मिहिर, फारसी मेह्र) है। जरथुस्त्री धर्ममें भी वैदिक धर्मकी भाँति सूर्य, अग्नि आदिकी पूजा होती है। पार्थिव-कालमें सूर्य-पूजाने अपना बहुत प्रभाव जमाया और ओस्वी सन्‌की पहली शताब्दीमे तो मिथ्रकी पूजा काशीसे रोम तक फैली हुअी थी। यूरोपमे तो वह अैसा समय था जब कि लोग आशा करते थे कि

मिथ्र-धर्म ही भविष्यमे यूरोपका मजहब होगा। यूरोपमें ओीसाओी-धर्मको मिथ्रधर्मके खिलाफ विजय आसानीसे प्राप्त नही हुओी।

पार्थी और कुषाणोके समयमें मिथ्र-पूजा भारतमे भी खूब फैली। ओेक तरहसे ओीसाकी चौथी सदीमें अुसका खूब जोर था। मिथ्र-पूजाके साथ शाकद्वीपीय ब्राह्मणोका बहुत सम्बन्ध है और वह अिसी पूजाके साथ शकस्थान (सीस्तान)से भारत आओे। ओी० पू० पहली शताब्दीमें अशकानी साम्राज्य भारत तक पहुँच गया था और अुनके क्षत्रप तक्षशिला और दूसरी जगहोंमें रहते थे। मालूम होता है, मौर्य-वशके पतनके बाद **वाह्लीकी (बल्खी)** यूनानियोने अपने पैर भारतमे फिर फैलाओे। मिलिन्द (मिनान्दर) की सेना साकेत (अयोध्या) तक पहुँची थी और शाकल (स्यालकोट) तो अुसकी राजधानी बन गओी थी। यह समय ओी० पू० दूसरी शताब्दीके पूर्वार्द्धका है। अुस शताब्दीके अन्त तक पहुँचते पहुँचते यूनानी सत्ता भारतसे अुठ चुकी थी। अिसी समय अशकानी साम्राज्य भारततक पहुँचता और पीछे कुषाणोके आक्रमणके साथ पार्थी-प्रभाव अुठ जाता है। जिस गान्धार-कलाका पंजाब और अफगानिस्तानमे हम अितना जोर पाते हैं, अुसके निर्माता और पोषक सिर्फ बल्खी यूनानी ही न थे; बल्कि अुसका बहुत कुछ श्रेय अिस पार्थी राज-वंशको भी था। अिसी समय बौद्ध-धर्म ओीरानमें पहुँच चुका था और सीस्तानसे लेकर तुषार (वर्तमान चीनी तुर्किस्तान) तकका सारा प्रदेश अुसका अनुयायी था। भिन्न-भिन्न कला, सभ्यता, धर्म, दर्शन और जातियोके संगमपर स्थित किसी जातिको जैसा प्रभावित होना चाहिओे, पार्थी भी वैसेही हुओे।

५—सासानी वंश (२२६-६५२ ओी०)

अखामनशी वशके पतनके बाद पिछली छै शताब्दियो तक पारसका प्रदेश—जिसने कोरोश और दारयोश जैसे महान् सम्राटोको पैदा किया—विस्मृतिके गर्भमे विलीन हो चुका था। अिसी बीचमे सिकन्दर तूफानकी तरह आया। सेल्यूकस् तथा दूसरे यूनानी शासकोने अपना सिक्का जमाया और पूरी चार शताब्दियों तक वीर अशकानी वशने शासन किया। अिसमे शक नही कि, अिन छै शताब्दियों तक पारस वाले चुप न बैठे होंगे। जिस तरह अुन्होने पराजित होनेके बाद सिकन्दरसे घनिष्टता स्थापित की; पिछले यूनानी और अशकानी कालमें भी अपनी विशेषताओंको अुसी हद्द तक कायम जरूर रक्खा होगा। तो भी अुस समय अुनका राजनीतिक ज्ञान नहीहीके बराबर था। अितिहाससे हमें मालूम होता है कि, अशकानियोने पारसियोके साथ सहानुभूतिका बर्ताव किया था। अुनके प्रान्तपर अखा-मनशी वंशका ही कोअी क्षत्रप नियुक्त किया जाता था। जिसमें अुनके स्वाभिमानको धक्का न लगे अिसका खयाल जरूर रखा गया था। तो भी पारसी अपने पुराने वैभव और राष्ट्रीय (जरथुस्त्री) धर्मको भूलने वाले न थे। वह पार्थिव शक्तिके क्रमशः ह्रासको खूब गौरसे देख रहे थे। पारसी पार्थियोंको नीची निगाहसे देखते थे, यह हम कह आये है। आरम्भमें यद्यपि पार्थी भी जरथुस्त्रके अनुयायी थे और प्रथम वोलोगेसस्ने महात्मा जरथुस्त्रकी शिक्षा और साहित्यको बळी सावधानीसे अेकत्रित कराया; किन्तु पीछे वह कट्टर जरथुस्त्री न रह गअे। अुनकी कुछ नास्तिकताकी बातें पारसी पसन्द न करते थे। अिसलिअे वह और भी भीतर भीतर अुनसे घृणा रखते थे। जिस समय पार्थी-शक्तिका सितारा डूबने वाला था, अुस समय अर्देशीर पारस प्रान्तका क्षत्रप था। अुसका वंश दारयोशके वंशसे सम्बन्ध

रखता था और अुसीके अेक पूवज सासानके नामसे नया राज-वंश सासानी प्रसिद्ध हुआ। अुसे अेक मौका हाथ आया। ज्योतिषियोने व्यवस्था दी कि, अशकानी वंशसे राज-शक्ति निकल जाने वाली है। अर्देशीर ने अपने प्रान्त पारसकी स्वतन्त्रता घोषित कर दी और पूरबमे केरमानकी तरफ अग्रसर हुआ। अर्दवानने अिस नये शत्रुको परास्त करनेके लिअे बळी कोशिश की; और, दो लळाअियोमे हार गया। २८ मअी सन् २२७ अी० को दोनो ही पक्षोने पहलेसे निश्चित कर होरमुजके मैदानमे अन्तिम निर्णयके लिअे मुकाबिला किया। अर्दवान युद्ध-क्षेत्रमें आया। विजय-श्री पारसके पक्षमे हुअी और अर्देशीर सम्राट् घोषित हुआ। रोमने समझा कि, अिस गृह-युद्धके बाद अीरानकी शक्ति निर्बल हो गअी है और अेक बार फिर अुसने अीरानकी ओर हाथ बढ़ाना चाहा। किन्तु अुसे मालूम होते देर न लगी कि, दारयोश्की भूमि अभी वीर-प्रसविनी है। वस्तुतः वीरता और योग्यतामे सासानी वश अपने पूर्वज अखामनशियोसे कम न था। यदि अुस समय पारसने कोरोश और दारयोश जैसे वीरोको पैदा किया था, तो सासानी वंशने भी अर्देशीर, शापोर, वह्रामगोर, नौशेरवाॅ (अनव-शिरवान) खुश्रो जैसे विजेताओको जन्म दिया था।

अर्देशीरने जरथुस्त्री धर्मको राजधर्म बनाया। पिछली शताब्दियोमें अिस धर्ममें जो विकार आगअे थे, अुन्हे हटानेकी कोशिश की। अग्नि-कुण्डको फिरसे स्थापित किया और सूर्य-चन्द्रकी पूजाने जो अुसका स्थान ले लिया था, अुसे फिर दिलवाया। शताब्दियोकी अुपेक्षा और अत्याचारसे जो कुछ धर्म-ग्रन्थ बच रहे थे, अुन्हे संग्रहीत कर लेख-बद्ध कराया। पारसी धर्म-पुरोहितोने फिर प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त किया।

अर्देशीर अीरानके महान् पुरुषोंमे है। वह अेक अच्छा योद्धा ही नही; बल्कि अेक योग्य शासक भी था। अुसका कहना था—"सेनाके बिना शक्ति नही हो सकती, धनके बिना सेना नही, खेतीके बिना धन नही और न्यायके बिना खेती नही।" न्याय अुसका आदर्श था। वह अपनी प्रजाको

सुखी और सन्तुष्ट देखना चाहता था। मरते समय अुसने अपने पुत्र शापोर-को शिक्षा दी थी—"अग्नि-वेदी और सिहासनमें विलगाव नही करना होगा। दोनोको अेक दूसरेकी सहायता करनी चाहिअे। बिना धर्मका राजा अत्या-चारी मात्र है।"

प्रथम शापोर (सन् २४०-२७१ अी०)

शापोर अपने योग्य पिताका योग्य पुत्र था। अुसकी माँ अन्तिम अशकानी सम्राट्की लळकी थी; अिस प्रकार अुसकी नसोंमे अशकानी और सासानी दोनों रक्त बह रहे थे। नये शासककी योग्यताका परिचय नही हुआ था। अर्मेनियाने—जिसे अर्देशीरने बळी मुश्किलसे जीता था—बगावत की। लेकिन नये शाहने अुसे बड़े आसानीसे दबा दिया। रोममें अुस समय गृहकलहका बाजार गर्म था। शापोरके लिअे यह अच्छा मौका था। सन् २४१ अी० मे शापोरने रोमके विरुद्ध कूच कर दिया। अुसकी विजयी सेनाके सामने अेकके बाद अेक रोमक दुर्ग गिरते गअे और कुछ ही समयमें अीरानी सेना भूमध्य-सागरके तटपर पहुँच गअी। रोमक-सम्राट् स्वयं अेक बळी सेना लेकर शापोरके मुकाबिलेमे आया। शापोरकी सेना हारकर पीछे लौट गअी। रोमक-सेनाने पीछा किया, लेकिन अिसी बीचमें तरुण सम्राट्की किसीने हत्या कर दी; और, २४४ अी०मे अीरानके अनुकूल सन्धि करके रोमक-सेना वापस गअी।

२५८ अी०में अपनी पुरानी हारके कलंकको धोनेके लिअे शापोरने फिर रोमके खिलाफ प्रस्थान किया। अिस बार भाग्य-लक्ष्मी अुसके पक्षमें थी। अीरानी सेनाकी सफलताको देखकर रोमक सम्राट् वलेरियन अेक बळी सेनाके साथ मुकाबिलेको आया और कअी जगहोसे अीरानी सेनाको पीछे हटनेको मजबूर किया। किन्तु अन्तमें शापोरने रोमक सेनाको परास्त ही नही किया बल्कि सम्राट् वलेरियनको गिरफ्तार कर लिया। रोम जैसे महाबलशाली साम्राज्यके स्वामीको कैद करनेसे शापोरकी बहादुरीकी

ख्याति चारो ओर फैल गअी और जहाँ अिसने रोमके सन्मानको बळा धक्का लगाया वहाँ साथ ही सासानी वंशके गौरवको बहुत अूँचा अुठा दिया। यह स्मरणीय विजय सासानी वंशके शासन तक ही अभिमानकी चीज नहीं समझी जाती बल्कि आधुनिक अीरान भी शापोरके अिस विजयका अभिमान करता है। वर्तमान शाह पहलवीके युवराजका नाम शापोर शायद अुसी गौरव-पूर्ण स्मृतिको जगानेके लिअे रखा गया है।

मानी और अुसका धर्म—शापोरके शासन कालमें अीरानको अेक महान् विचारक और धार्मिक नेताको पैदा करनेका सौभाग्य प्राप्त है। मानी २१५ या २१६ अी० में पैदा हुआ था। शापोरके राज्याभिषेकके समय अिसने अपने धर्मकी घोषणा की और कितने ही वर्षों तक राज-दरबारोमें अिसका बळा प्रभाव था; किन्तु पीछे वैमनस्य हो जानेसे वह देशसे निकाल दिया गया। अुस समय वह भारत, मध्य-अेसिया तथा चीन तक घूमता रहा। असकी धार्मिक शिक्षा अीसाअी-धर्मसे प्रभावित जरथुस्त्री धर्मकी थी, जिसपर बौद्ध धर्मका भी प्रभाव पळा था। जरथुस्त्री धर्मके अनुसार व्रत-अुपवास तथा अविवाहित रहना बेकार है, किन्तु मानी अिनके पक्षमे था। वह बुद्ध, जरथुस्त्र और अीसा तीनोको गुरु और दिव्य-सन्देश-वाहक मानता था। शापोरके मरनेके बाद २७२ अी०में मानी फिर अीरान लौट आया। यद्यपि धर्मके प्रचारमें अुसे अुतनी सफलता नही मिली; किन्तु तो भी अुसका मत अुसके मरनेके बाद भी प्रचलित रहा। मानी अेक धार्मिक नेता ही नही था बल्कि अेक अच्छा चित्रकार और कवि भी था। सासानी कालकी अीरानी चित्रकला अुसकी ऋणी है।

शापोर द्वितीय (३०९-३७९ अी०)

सासानी वंशमें द्वितीय शापोरका स्थान बहुत अूँचा है। बल्कि अिसी लिअे अुसे महान् शापोर कहते है। यह अपने पिताके मरनेके बाद पैदा हुआ था और बळे भाअीके रहते भी घरू झगळोके कारण राज्यका अुत्तराधिकारी

माना गया। बादशाहकी नाबालगीके समय ओरानकी सभी प्रगति रुकी हुओी थी और अिस कमजोरीको देखकर पळोसी भी कभी-कभी चोट किअे बिना नही रहते थे। सौभाग्यसे रोम अभी आपसी झगळोंका क्रीड़ा-क्षेत्र बना हुआ था; अिसलिअे अुसकी ओरसे कोओी जबर्दस्त प्रहार नही किया गया। लेकिन रोमकी परम्परासे चली आती शत्रुता अब भी मौजूद थी। रोमके सम्राट् कान्स्तन्ताअिनने हालमे ही ओसाओी-धर्म स्वीकार किया था और धीरे धीरे वह अपनी शक्तिको मजबूत करता जा रहा था। वह ओसाअियोंका धर्मराजा समझा जाने लगा था और अिसीलिअे अपनेको ओरानी ओसाअियोका संरक्षक समझता था। शापोर कान्स्तन्ताअिन की शक्तिको समझ रहा था और अुससे संघर्ष करनेमे हिचकता रहा। ओरानके सौभाग्यसे कान्स्तन्ताअिन ३३७ ओी०में मर गया। मरनेसे पहिले अुसने राज्यको अपने तीन पुत्रोमे बाँटकर रोमकी शक्तिको और भी कमजोर बना दिया था और अब शापोरका कोओी अुतना प्रबल विरोधी नही था।

अर्मेनियामें भी शापोरके अनुकूल क्षेत्र तैयार हो रहा था। वहाँका राजा तीरियातेस ओसाओी-धर्मको स्वीकार कर अपनी प्रजाको जबर्दस्ती ओसाओी बनाना चाहता था, जिससे देशमे बहुत वैमनस्य फैला हुआ था। तीरियातेस ३१४ ओी०मे मर गया और अुसके अुत्तराधिकारी सभी निर्बल थे। ३३७ ओी०में शापोरने रोमके विरुद्ध अभियान किया; लेकिन यह काम अुतना आसान नही था जितना कि वह समझ रहा था। दो वर्षके युद्ध और षड्-यन्त्रके बाद अुसने अर्मेनियाको अधीनता स्वीकार करनेके लिअे मजबूर किया। मेसोपोतामिया और क्षुद्र-अेसियामें भी अुसको अुतनी सफलता नही मिली। अुसी समय मध्य-अेसियामें हूणोंका हमला शुरू हुआ, जिसके कारण शापोर-को अुधर ध्यान देना पळा। रोम भी गृह-युद्धमें फँस गया था और अिस प्रकार आठ वर्षके लिअे ओरान और रोमका झगळा दब गया। हूणोका मुकाबिला और भी जबर्दस्त था। सात वर्षो तक (३५०–३५७ ओी०) शापोरको हूणोंके ही रोक-थाममे लगा रहना पड़ा। अन्तमे शापोरको सफलता मिली

और अिस प्रकार पूर्वोत्तर सीमाका भारी खतरा जाता रहा। लेकिन रोम फिर अपनी पुरानी शत्रुताको आरम्भ करनेके लिअे तैयार था। ३५९ अी०मे शापोरका ध्यान फिर रोमकी ओर आर्कांषित हुआ। शापोरने अपनी माँगको एक पत्र द्वारा लिख भेजा—"सोम-सूर्य-बान्धव शाहानुशाह शापोर अपने भाअी कैसर कान्स्तान्तियो (Constantius) को नमस्कार भेजता है।.....आपके लेखक स्वय अिस बातके साक्षी है कि, मकदूनियाकी सीमातकका देश अेक बार हमारे पूर्वजोके अधीन था। यदि मै कहूँ कि, सबको लौटा दे, तो अनुचित नही होगा।.....किन्तु मै अुतनी कळाअी नही चाहता। मुझे सतोष हो जायगा यदि मेसोपोतामिया,—जिन्हे कि, मेरे दादासे धोखा दे कर ले लिया गया था—लौटा दिया जाय.......मै आपको चेतावनी देता हूँ कि, यदि मेरा राजदूत अकृतकार्य हो लौटेगा, तो जैसे ही जाळा खतम होगा; मै सारी सेनाके साथ आपके खिलाफ युद्ध करनेको अुतरूँगा।"

रोम, अर्मेनिया और मेसोपोतामियाको लौटानेके लिअे तैयार नही था; और, अन्तमे शापोरको युद्धके लिअे आगे बढना पळा। मुकाबिला वळा जबर्दस्त रहा, और युद्ध कोअी निर्णयात्मक भी सिद्ध नही हुआ। ३६१ अी० मे कान्स्तान्तियोका देहान्त हुआ और जुलियन अुसका अुत्तराधिकारी बना। युद्ध-कौशल और बहादुरीमे जुलियन सिकन्दरसे समानता रखता था। अुसके अधिनायकत्वमे रोमक सेनाने अपने जौहर दिखलाने शुरू किअे। शापोरको जुलियनकी सेनाके सामने कअी बार असफल होना पळा और जुलियन पीछा करते हुअे अीरानकी सीमाके पासतक पहुँच गया। कुछ थोळी और हिम्मत करता तो मुमकिन है वह अीरानके भीतर घुस जाता और शापोरकी शक्तिको बहुत कमजोर कर सकता; लेकिन अीरानी सेनाने जिस बहादुरीके साथ अुसका मुकाबिला किया था, अुससे और आगे बढ़नेकी अुसे हिम्मत न हुअी। जब अुसकी सेना पीछेकी ओर मुळी, तो शापोरने अुसका पीछा करना आरम्भ किया।

कअी जगहोपर छोटी-मोटी मुठभेळें हुअी, जिससे मालूम होता था कि, परिस्थिति अीरानी सेनाके अनुकूल है। २६ जून (३६३ अी०)का दिन शापोरके लिअे सौभाग्यका दिन था। दोनो सेनाओमें घमासान युद्ध हुआ। जुलियन खुद अपनी सेनाके साथ वळी बहादुरीसे लळ रहा था; किन्तु अिसी बीच वह घायल हो गया। अुसने अेक बार फिर कोशिश की कि घोळेपर सवार होकर अपने सैनिकोकी हिम्मत बढावे; परन्तु घाव प्राणान्तक सिद्ध हुआ। घोळेपर चढ़ना अुसके बससे बाहर था। मृत्युके समय जुलियन ३५ सालका था। रोमकी भीषण पराजय हुअी। अुसने शापोरको पॉच प्रान्त देकर शान्तिकी भिक्षा मॉगी।

शापोरके चिरशासनमे अीरान वैभव और सन्मानके शिखरपर पहुँचा था। हूण और रोम जैसे असाधारण बलशाली शत्रुओंको परास्त कर अुसने यथार्थमे अपनेको महान् सिद्ध किया।

बहराम गोर (४२०-४४० अी०)

बहराम गोर सासानी-वशका दूसरा बहादुर शासक था। पिता (यज़्द-गर्द)की मृत्युके बाद दरबारियो और सामन्तोकी अिच्छा न रहते भी बह-रामने अपनी सैनिक-योग्यतासे सिहासनपर अधिकार किया। पहले जब कि रोम अीसाअी नही हुआ था, अीरान और रोमका संघर्ष शुद्ध राजनीतिक था; लेकिन रोमके अीसाअी हो जानेपर धर्मका भी झगळा आ अुपस्थित हुआ; खासकर अुन अीसाअियोके कारण जो बसते तो थे अीरानी साम्राज्यके भीतर और नजर अुनकी रोमकी ओर रहती थी। अिस राजनीतिक झगळेमें धर्मके पळ जानेसे अुलझन और बढ़ गअी थी और कितनी ही बार निरपराधी जनताको अिसके लिअे कष्ट सहना पळता था। सिहासनपर बैठनेके साथ ही बहरामको रोमके हमलेसे बचनेके लिअे आगे बढ़ना पळा। रोमने चाहा कि, शापोरको लौटाये हुअे पाँचो प्रान्त जबर्दस्ती दखल कर लिअे जायें। दो वर्षके युद्धके बाद दोनों देशोमें सन्धि हुअी, जिसमें

दोनोंको ही संतोष हुआ। सन्धिकी शर्तोंमें यह भी स्वीकार किया गया था कि, रोमक साम्राज्यमें बसनेवाले जरथुस्त्रियोंपर अत्याचार न किया जायगा और बहरामने भी इसी प्रकार अपने राज्यके भीतरके ईसाइयोंकी रक्षाका वचन दिया।

बहरामका सबसे बड़ा काम था, हूणोंके घातक हमलेसे बचना। जिस प्रकार हूणोंके आतंकसे मुक्त करनेके लिए चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्यके नामसे प्रसिद्ध हुआ, उसी तरह बहराम भी ईरानका चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य था। दोनोंका समय एक है। दोनो ही हूणोंके विजेता थे। ४२५ ई०में हूणोंने वक्षु (Oxus) नदीको पार किया। बहरामने यद्यपि हूणोंको पूरी तरह हरा दिया था; लेकिन तो भी कई पीढ़ियों तक ईरानी सम्राटोंको इन खानाबदोशोंसे बचनेके लिए भारी परिश्रम करना पड़ा था।

बहरामके समयमें ही बहुतसे नाचने-गानेवाले भारतीय नट (Gypsies) ईरान गए। उस समय भारत और ईरानका बहुत घनिष्ट सम्बन्ध था। भारतमें कितने ही समय तक प्रचलित गदहिया पैसे बहराम गोरसे ही सम्बन्ध रखते थे। गोर पारसी भाषामें जंगली गदहेका नाम है।

कवद (४८७-४९८ ई०)

कवदके समयमें भी हूणोंका आतंक बहुत भारी था। ईरानमें उन्हें (हूणोंको) कर देनेपर मजबूर किया गया था। कवदका सबसे बड़ा काम था खजार (एक तुर्की जाति जिसका निवास कस्पियन समुद्रके आसपास था)को करारी हार देना।

मजदक—इसी समयमें साम्यवादी विचारक मजदक पैदा हुआ था। उसका सिद्धान्त था कि, सभी मनुष्य समान पैदा हुए हैं और जीवन भर उन्हें समान ही रहना चाहिए। सम्पत्ति ही नहीं स्त्री तकपर भी व्यक्तिका अधिकार उसकी दृष्टिमें अनुचित था। इस समाजवादी उपदेशकके भाषण और युक्तियोंमें इतना आकर्षण था कि, हजारों आदमी उसके

अनुयायी हो रहे थे। अुसकी आध्यात्मिक शिक्षा थी—संयम, श्रद्धा और जीव-दया। अुसके विचारोका कितना अधिक प्रभाव पळ रहा था, यह अिसीसे जाहिर होता है कि, शाहानुशाह कवद स्वयं अुसका अनुयायी बन गया।

मजदकको शिक्षाके प्रचारमें जैसी सफलता प्राप्त हो रही थी, वैसी ही विरोधियोकी शक्ति भी बढ़ रही थी। कवद तरह तरहसे बदनाम किया जाने लगा और अन्तमें प्रधान पुरोहित तथा दूसरे सामन्तोंने षड्यन्त्र करके कवदको गद्दीसे अुतार दिया। अुसका भाअी जामास्प गद्दीपर बैठा। कवदको प्राण-दण्ड देनेके लिअे अुसे बहुतेरा अुकसाया गया; किन्तु अुसने अुसे स्वीकार नही किया और कवद जेलमें बन्द कर दिया गया। कुछ समयके बाद किसी तरह कवद जेलसे निकल भागा और हूणोंकी सहायतासे वह फिर गद्दी पानेमे समर्थ हुआ। यद्यपि अब भी वह मजदककी शिक्षाका अनुगामी था; लेकिन सरकारी तौरसे अुसका समर्थन करना अुसने छोळ दिया।

कवदके समय रोम और अीरानके बीचकी ६० वर्षकी सुदीर्घ शान्ति भंग हुअी। ५०३ अी०मे जो रोम और अीरानका झगळा आरम्भ हुआ, वह बराबर चलता रहा और दोनो शक्तियाँ अन्तमे अितनी निर्बल हो गयी कि, सातवी शताब्दीमें अरब दोनोंको दबानेमें सफल हुअे।

कवदके फिरसे गद्दीपर बैठनेपर मजदकके अनुयायियोंका प्रभाव फिर बढ़ने लगा और फिर वही तानातानी शुरू हुअी। मजदकके अनुयायियों ने अिसपर षड्यन्त्र करके अपनी शक्तिको मजबूत करना चाहा। अिसपर कवद भी विरोधी बन गया और अुसकी आज्ञासे हजारों मजदकी तलवारके घाट अुतारे गअे।

हूणोंको अुसने पूरी सफलताके साथ परास्त किया। यद्यपि यही बात रोमके सम्बन्धमे नही कही जा सकती; तो भी अुसके ४० वर्षके शासनमें अीरानका वैभव बढ़ा ही था घटा नहीं।

अनवशिरवान (५३१-५७८ ई०)

यह सासानी वंशके बड़े प्रतापी राजाओंमें है। बाप (कवद द्वितीय)की इच्छा नौशेरवाँको ही गद्दी देनेकी थी। उसकी मृत्युके बाद उसके बड़े लड़केने ही गद्दी सँभाली; किन्तु महामन्त्रीने मृत शाहकी इच्छाको उपस्थितकर नौशेरवाँका पक्ष लिया और इस प्रकार वह राजा उद्घोषित हुआ। अब भी भाइयों और सम्बन्धियोंने बड़े-बड़े षड्यन्त्र जारी रखे और नौशेरवाँको एकको छोड़कर अपने सभी भाइयों और उनके पुत्र-सन्तानोंको मरवा डालनेपर मजबूर होना पड़ा। मजदक अब भी जीवित था और उसके अनुयायियोंकी संख्या भी काफी थी। नौशेरवाँने इन्हें भी अपने रास्तेका काँटा समझा और मजदकके साथ उसके एक लाख अनुयायी मार डाले गए। नौशेरवाँका नाम पहले खुशरो था। मजदकियोंकी हत्याके बाद ही उसने नव-शिरवान (नया राजा)की उपाधि धारण की थी।

नौशेरवाँ अपने न्यायके लिए बहुत प्रसिद्ध है। उसके न्यायकी कितनी ही कहावतें आज भी प्रसिद्ध हैं। वह एक अच्छा शासक ही नहीं था बल्कि एक अच्छा योद्धा भी था। पूर्वोत्तरमें हूण और पश्चिममें यूनान अब भी जबर्दस्त शत्रु थे। उसने रोमसे शान्ति स्थापित करनेकी कोशिश की। इसमें पहले कुछ सफलता हुई, लेकिन फिर दोनोंकी स्वाभाविक शत्रुता रोके रुक न सकी। ५४० ई०में नौशेरवाँने रोमको हराकर इस शर्तपर सुलह करना मंजूर किया—"पाँच हजार पौण्ड सोना हर्जाना देना होगा। पाँच सौ पौण्ड सोना प्रतिवर्ष सेनाके खर्चके लिए देना होगा।" लेकिन यह शर्त बराबर नहीं चल सकी। नौशेरवाँको रोमके खिलाफ कई बार तलवार उठानी पड़ी।

५७२–५७९ ई०में तीसरी बार नौशेरवाँको रोमसे लड़ना पड़ा। उस समय नौशेरवाँ बहुत बूढ़ा हो चुका था और शायद इसी लिए रोमको

फिरसे छेळखानी करनेकी हिम्मत हुअी; लेकिन नौशेरवॉमें अब भी वह पुरानी शक्ति मौजूद थी। अुसने रोमन सेनाको हराते हुअे भूमध्यसागर तक खदेळ दिया। रोम सम्राट् जस्टिनको तिवेरियसके पक्षमे गद्दी छोळनी पळी और अुसने ४५ हजार स्वर्ण-खण्ड देकर अेक सालके लिअे नौशेरवॉसे शान्ति मोल ली। तिवेरियसने अेक वार औरानके खिलाफ तैयारी करनी भी शुरू की; लेकिन अन्तमे अुसकी हिम्मत नही हुअी और ३० हजार स्वर्ण-खड नजर दे तीन सालके लिअे सुलह की। अूपरके वर्णन से नौशेरवॉकी युद्ध और शासन-कुशलता प्रकट है। अिसके अतिरिक्त वह विद्या और कलाका भी बळा प्रेमी था। अुसीके समयमे पंचतत्रका पारसी भापामे अनुवाद हुआ था।

खुश्रो परवेज (५९०-६२८ ओ़०)

कुछ पीढ़ियोके बीत जानेपर हम औरानके सिहासनपर अेक और महान् शासक खुश्रो परवेजको आसीन होते देखते है। परवेजका अर्थ है विजयी। सासानी वशका यह अन्तिम विजेता वीर था। आरम्भमें अुसे अपने अेक प्रभावशाली सेनापतिके विद्रोहको दबानेमें बहुत मुश्किल पळी थी लेकिन रोमने अुस वक्त अुसकी मदद की और खुश्रोने सेनापति बहरामको हराकर राज्यपर अधिकार किया। सम्राट् मोरिश्की सहायताके लिअे खुश्रो बळा कृतज्ञ रहा। मोरिश्की हत्या (६०२ औ०)से खुश्रो बळा क्रुद्ध हुआ और अुसने अुसका बदला लेना चाहा। अुसने क्षुद्र-अेसियाके रोमक प्रदेशपर हमला किया और हर जगह अुसकी सेना विजयी रही।

खुश्रोके शासनकी अेक और बळी महत्त्वपूर्ण घटना है। अुस समय अरबी सरदार नोमनकी कन्या शीरीके सौंदर्यकी ख्याति चारों ओर फैली हुअी थी। जब अिसकी खबर खुश्रोको लगी, तो अुसने अुसके पिताके पास याचना की; लेकिन अरबी सरदारने इन्कार कर दिया। अेक बळी सेना

(६११ ई०) उसके खिलाफ भेजी गई। नोमनने अपनी कन्याको शैवानीके सरदार दानीको सौपकर शाहके पास आ बहुत प्रार्थना की; किन्तु एक भी न सुनी गई और उसे कत्ल कर दिया गया। शैवानीको हुक्म हुआ कि वह शीरीको लेकर उपस्थित करे; किन्तु उसने इन्कार किया। इसपर चालीस हजारकी सुदृढ़ सेनाने जिसमें अरब और यूनानी दोनो शामिल थे—हमला किया। छोटी-मोटी कई लड़ाइयाँ हुई। अन्तिम निर्णय जूकरके मैदानमें हुआ। शाहकी अरबी सेनाने ऐन वक्तपर साथ छोड़ दिया और ईरानी सेना पूरी तरहसे परास्त हुई। ईरानी सेनाकी इस भयंकर पराजयने जहाँ एक तरफ अरबोंकी दृष्टिमें ईरानके सम्मानको बहुत नीचा गिरा दिया, वहाँ साथ ही उसने अरबोंकी हिम्मतको बहुत आगे बढ़ा दिया। यह वह समय था जब कि, पैगम्बर मुहम्मद अपने इस्लामके प्रचार से अरबोमे एक नयी तरहकी जागृति उत्पन्न कर रहे थे; तथा मक्का और मदीनामें एक नई राज्यशक्तिकी नीव डाल रहे थे।

जूरकरके मैदानमे यदि अरबोकी हार हुई होती, तो इसका प्रभाव सारी दुनियाके इतिहासपर पड़ता और शायद अरबी तलवार वही ठण्ढी पड़ गई होती और इस्लामको उत्थानका मौका न मिलता। उस समय इस छोटी घटनाको उतना महत्त्व नही दिया गया था; लेकिन इतिहासमें कभी-कभी छोटी-छोटी घटनाएँ भी भविष्यके लिए बहुत व्यापक फैसला देती है।

रोममे गृह-कलह फिर जोर पकड़ रहा था। ऐसे मौकेसे फायदा उठाकर खुश्रोने फिर रोमक साम्राज्यपर धावा किया। उसने उसके क्षुद्र-एसियाके प्रान्तोको ही दखल नही किया बल्कि सिरिया और फिलिस्तीन, (६१६ ई०में) तथा सिकन्दरियापर भी अधिकार कर लिया। इस प्रकार नौ शताब्दियोके बाद एक बार फिर नील-नदकी उपत्यकामें ईरानी विजय-ध्वजा फहराये और मिश्र ईरानी प्रान्त बना। उत्तरमें अर्मेनिया तथा दूसरे प्रदेशोंको खुश्रोने अधिकृत किया। ६२२ ई० तक

अीरानका सितारा अूपर अुठता गया। अिसी समय रोमका शासन-सूत्र हेराक्लियस् जैसे निपुण सेनापतिके हाथमें गया। वह अैसा समय था जब कि, किसी वक्त भी अीरानी सेनाके यूरप पहुँचनेका डर था। अेक बार फिर कोरोश और दारयोशके विजय-यात्राकी आवृत्ति होनेवाली थी; लेकिन ६२२ अी०में—अिसी साल पैगम्बर मुहम्मदकी मृत्यु हुअी—हेराक्लियस्को खुश्रोके सेनापति शह्लबराजसे मुठभेळ हुअी और रोमन सेना विजयी हुअी। अगले सालका युद्ध और घमासान रहा और खुश्रोको मैदान छोळकर भागना पळा। शह्लबराजने ६२४ अी०मे अेक बार फिर कोशिश की; लेकिन असफल रहा। ६२५ अी० मे चौथी बार हेराक्लियसने शह्लबराजकी सेनापर हमला किया। यद्यपि अिसमें शश्रबराजकी पराजय हुअी; लेकिन अिसी युद्धमें अन्तिम फैसला नही हुआ। ६२७ अी०में खुश्रोने अन्तिम बार अपनी सारी शक्ति लगाकर हेराक्लियस्का मुकाबिला किया। १२ दिसम्बरको निनेवे (मेसोपोतामिया)के पास महत्त्वपूर्ण लळाअी लळी गअी; जिसमें खुश्रोकी पराजय हुअी। अुस वक्त देखनेमें यद्यपि अीरानके भाग्यका फैसला था और रोम विजयी खयाल किया जाता था; लेकिन रोम और अीरान दोनोने आपसमे लळकर अपनी शक्ति अितनी कमजोर कर ली थी कि, कुछ ही वर्षो बाद अरबी तलवारने दोनोंहीको आसानीसे खतम कर दिया।

खुश्रोने अपनी अुन्नति और अवनति दोनोंकी पराकाष्ठा अपनी आँखों देखी। कहाँ अुसकी विजयिनी सेना, काला सागर, भूमध्यसागर और नील नदीके किनारोंपर अव्याहत गतिसे बढ़ती ही चली गअी थी और वह समय नजदीक था, जब, वह भी कोरोश और दारयोश अैसे विजेताओंकी पंक्तिमें बैठाया जाता; और कहाँ अुसकी अपनी राजधानी तक को रोमक सेनाने लूटा और जलाया। अब अुसका सारा सन्मान धूलमें मिल गया। अन्तमें अिस पतनने अुसके दिमागपर अैसा बुरा प्रभाव डाला कि, अुसने शह्लबराज जैसे कितनेही चतुर सेना-नायकों और सामन्तोंको मरवा दिया। अुसका

अत्याचार अितना बढ चुका था और साथ ही जनतामे प्रतिष्ठा अितनी गिर चुकी थी कि, लोगोने अुसके विरुद्ध विद्रोह किया और खुश्रोको पकड़कर जेलमे डाल दिया गया; जहाँ घुल-घुलकर अुसे मरना पळा।

यज्दगर्द तृतीय (६३४-४२ ओ०)

खुश्रो परवेजकी मृत्युके बाद ओरानमें अराजकता-सी फैल गओ। अेकके बाद अेक राजकुमार या राजकुमारी गद्दीपर बैठे, अुतारे और मारे गअे। कअी बार राजवशमे कत्ल-आम हुअे। अन्तमे सासानी वंशका अन्तिम शाह यज्दगर्द तृतीय गद्दीपर बैठा। तृतीय दारयोशकी तरह यह भी अुस समय राजा बना, जब कि, अुसके वंशका सितारा डूब रहा था। वह वंश, जिसने अपने चार शताब्दियोके शासनमें अेकके बाद अेक अनेक बहादुर योद्धाओ और शासकोको पैदा किया; आपसकी कलह, दुर्व्यसन और अदूर-दर्शितासे नाशोन्मुख हो रहा था। यह वह समय था जब पैगम्बर मुहम्मदकी मृत्युके बाद खलीफा अबूबकर अरबके शासक थे। अरबी योद्धाओमें रेगिस्तानी बद्दुओंको निर्भीकता, परिश्रमशीलता और फुर्ती थी। अिस्लामने अुनके भीतर अपने धर्म-प्रचारका जोश पैदा कर दिया था। अुसने अुनके दिलमे विश्वास पैदा कर दिया था कि, मरनेपर तुम्हारे लिअे बहिश्त और अुसका सुख है; और जीतनेपर पृथ्वीका साम्राज्य और अुसकी अपार सम्पत्ति। यह भाव अुनके भीतर कितना कूटकर भरा हुआ था, यह अेक छोटीसी घटनासे मालूम होता है। कोओ भूखा अरब खजूर तोळकर खाना ही चाहता था कि, अुसी समय युद्धका आह्वान हुआ। अुसने खजूरको यह कह कर छोळ दिया—"मरने पर तो वहाँ (बहिश्तमें) अंगूर मिलेगे ही फिर क्या परवाह।" जूकरकी लळाओसे अरबोकी हिम्मत बढ गओ थी, यह हम लिख चुके है। नजदीकके पळोसी होनेसे अरब ओरानकी कमजोरियोंको भली प्रकार जानते थे।

६३३ अी०में अरबोंने पहले पहल अीरानके प्रान्त अिराक और सीरिया-पर धावा किया। खालिद जैसा चतुर सेनापति अुनका नेता था। सारी सेना अरबके बद्दुओंकी थी। खालिदने पारसकी खाळीके तटवर्ती अीरानी प्रदेशपर आक्रमण करते हुअे वहाँके क्षत्रपके पास लिखा—"अिस्लाम स्वीकार करो तो खैर; नही तो तुम और तुम्हारे लोगोको कर देना पळेगा। अगर अिन्कार करोगे, तो सारा अपराध तुम्हारे अूपर होगा। तुम्हारा अैसे लोगोंसे पाला पळा है जो मृत्युसे वैसाही प्रेम करते है, जैसा तुम जीवनसे।"

अरबी सेना संख्यामें कम थी और वह अधिकतर घोळ-सवारों की थी। अीरानी सेना संख्यामें बहुत बळी थी और युद्ध-सम्बन्धी अस्त्रशस्त्रके अतिरिक्त अुसमें जंगी हाथी भी थे। खालिदने अीरानी सेना-नायक होर्मुजको द्वंद्व-युद्धके लिअे आह्वान किया और फुर्तीले अरब अपने प्रतिद्वन्दियोको मारनेमें सफल हुअे। अरब सेना अब अपने प्रतिपक्षियोंके अूपर टूट पळी। अीरानियोंके पैर अुखळ गअे। अरबोको अिस युद्धमें बहुत सम्पत्ति हाथ लगी और अुसमे अुन्हे अेक हाथी भी मिला; जिसे अुन्होने मदीना भेज दिया। यह युद्ध जिसे जंजीरोंका युद्ध कहते है, क्योकि अिसमें अीरानी कैदियोको भागनेसे रोकनेके लिअे जजीरोंसे बाँधा गया था। यह अिस्लामकी पहली जबर्दस्त सफलता थी, जिसे अुसने अेक बळी ही जबर्दस्त राजशक्तिके मुकाबिलेमे प्राप्त किया था। युद्धका यह सिलसिला जो आरम्भ हुआ वह बराबर जारी रहा। ६३४ अी०में मुसन्नाने नौ हजार सेनाके साथ शाहके अूपर आक्रमण किया। बाबुलके पास दोनों सेनाओंका सामना हुआ। हिन्दुस्तानी हाथियोने अरबी घोड़ोंको अितना डरा दिया था कि, वह सामने आनेकी हिम्मत नही करते थे। संख्यामें भी शाहकी सेना बहुत भारी थी। मुसन्नाने अपनी कमजोरी समझ ली थी। अुसने मदीनामें जाकर खलीफा अबूबकरको सारी परिस्थिति समझाओ और मृत्यु-शय्यापर पळे हुअे खलीफाने अपने अुत्तराधिकारी अुमरको अीरान-विजयके लिअे अुत्साहित किया। अब अीरान भी सशंक हो

चुका था। बाबुलके पास अेक जबर्दस्त लळाओी हुओी। चार हजार अरब युद्धक्षेत्रमें काम आओे और दो हजार भाग कर मदीने चले गओे। यदि ओीरानी सेना अुस समय पीछा करती तो सारी अरब सेनाको नष्ट कर सकती थी; लेकिन अुसी समय राजधानीमें विद्रोह होनेकी खबर आओी और विजेताको पीछे लौटना पळा। अुमरको जब अिस भीषण दुर्घटनाकी खबर लगी, तो वह अिससे हताश नही हुआ बल्कि अुसके लिओे पूरी तैयारी करने लगा। कूफामें दोनों सेनाओंका फिर मुकाबिला हुआ। आरम्भमें ओीरानी सेना सफल होती जान पळी, खास कर जंगी हाथियोंने अरबके घोळ-सवारोंमें आतंक मचा दिया था; लेकिन थोळी ही देर बाद पलळा पलट गया। सेनापति **मुसन्ना** घायल हुआ और कुछ ही महीनों बाद मर गया; तो भी विजय अरबोंके हाथ रही। अिस वक्त तक अरबोंने ओीरानियोंको ही हराया नहीं था बल्कि **दमश्क** तथा दूसरे रोमक प्रान्तोंको दखलकर अुन्होंने अपनी शक्ति और प्रतिष्ठाको बढ़ा लिया था।

अरबों द्वारा अिस्लाम स्वीकार करने के लिओे कहे जाने पर, यज्दगर्दने घृणाके साथ कहा था—"क्या, दरिद्र, बच्चोंको मार डालने वाले गिरगिट-खोर, तुम लोगोंके धर्मको स्वीकार करें ?" अरबोंने शाहके आक्षेपको स्वीकार करते हुओे कहा—"हॉ, हम अैसे ही थे; लेकिन अब हालत बदल गओी है। हम गरीब और भूखे है; लेकिन अल्लाह हमें धनी और खुशहाल बनायेगा। क्या तुमने तलवारको पसन्द किया ? अच्छा तो हम दोनोंका फैसला तलवार ही करेगी।" अरबोंने अब अन्तिम युद्धकी तैयारी की। ओीरानने भी अेक लाख बीस हजार सेनाके साथ कदसियाके मैदानमें अुनका मुकाबिला किया। यह युद्ध संसारके बळे-बळे भाग्य-निर्णायक युद्धोंमेंसे है। चार दिनके घोर युद्धके बाद ओीरानी पराजित हुओे। युद्धमें अरबोंको अपार सम्पत्ति हाथ लगी; जिसमें ओीरानका राष्ट्रीय ध्वजा दुर-अफ़शानी

था।* अिसमें नाना प्रकारके हीरा-मोती जड़े हुअे थे, जिनकी कीमत चार लाख होती। कदसियाके युद्धके बाद अरबको फिर वैसे जबर्दस्त मुकाबिलेका सामना नही करना पळा। अरबोने मेसोपोतामिया जीतनेके बाद अेकके-बाद-अक करके पारस, कर्मान, कुर्दिस्तान, सीस्तान तथा खुराशानको जीतते हुअे बेलूचिस्तानकी सीमाके पास मकरानके रेगिस्तान तक दखल कर लिया। अिस प्रकार प्रतापी सासानी-वंशके अन्तके साथ-साथ अीरानियोने अपनी स्वतंत्रता खोअी। यज्दगर्दने व्यक्तिगत रूपसे किसी युद्धमें भाग नही लिया। अुसमें न अुतना अुत्साह था और न अुतना कौशल ही था। सासानी वंशका प्रभाव जनतापर अितना अधिक था कि, कोअी भी सेनापति पुराने राजवंशको हटाकर नया राजवंश स्थापित न कर सका और चार शताब्दियोंकी निर्बलताओ और दोषोने अेकत्रित हो सासानी वंशको बिल्कुल निकम्मा कर दिया था। यदि अिस समय कोअी योग्य अीरानी अेक नये राजवंशको स्थापित करनेमें सफल होता, तो मुमकिन था वह अीरानके भाग्यको पलट सकता; क्योकि अीरानी जातिमे वह सभी गुण अिस वक्त भी मौजूद थे, जो अेक शासक और स्वतन्त्र जातिके लिअे आवश्यक है। यज्दगर्द अपने प्रान्तोंको अुनके भाग्यपर छोळ भागता फिरता रहा। अीरानसे भागकर वह बलख गया। वहाँके तुर्कोने पहले अुसकी सहायता की; किन्तु पीछे अुन्होंने भी साथ छोळ दिया। अन्तमें मर्वकी अेक झोपळीमे

***प्रागैतिहासिक कालमें अीरानकी गद्दीपर जोहाक नामक अेक बळा अत्याचारी शासक बैठा था। अुसके अत्याचारके प्रतिशोधके लिअे काब नामक अेक लोहारने बीळा अुठाया। अुसने अपने चमळेकी लुँगीका झण्डा बनाकर लोगोंको अत्याचारीके खिलाफ विद्रोह करनेकी उत्तेजना दी। जोहाकने जबर्दस्ती हक न रहते हुअे राज्यपर अधिकार किया था। विद्रोह की सफलताके बाद असली हकदार गद्दीपर बैठाया गया और वही लोहार वाली चमळेकी लुँगी अीरानका राष्ट्रीय झण्डा बनी।**

धनके लालचसे किसीने अुसे मार डाला। यज्दगर्दके साथ-साथ अीरानी अीरानका अितिहास समाप्त होता है। आजकलका अीरान अुसी अीरानी अीरानका अभिमान करता है। अखामनशी और सासानी-वंशके कारनामे अुसके लिअे सबसे बळी प्रतिष्ठाकी बात है और आज वह अपने राष्ट्रीय पुनर्जीवनमें अुस गौरवपूर्ण अितिहासका पूरा अुपयोग कर रहा है।

६——अन्-ओीरानी ओीरान (६४२-१४६६ ओी०)

अरब शासन (६४२—१०३७ ओी०)——ओीरानने अरबकी अधीनताके साथ-साथ अिस्लाम कबूल किया; लेकिन अुसे यह समझते देर न लगी कि, अपनी जातीयताके प्रति अन्याय करके अुसने गलती की है। ओीरानी सभ्यता जो अुस समय संसारके सर्वोत्कृष्ट सभ्यताओमें थी; अुसे अरबकी रेगिस्तानी सभ्यताकी दासी बनना पळा। ओीरानी अितिहासका जिसमें नामोनिशान न रहे, अिसके लिअे विजेताओने पूरा प्रयत्न किया। ढूँढ़-ढूँढकर ओीरानका साहित्य जला दिया गया। ओीरानके प्राचीन स्मृति-चिन्हो और पूजा-स्थानों को नष्ट किया गया। स्वयं ओीरानी भाषाको अुपेक्षित और अपमानित करके छोळ दिया गया। ओीरानी दिमाग भला अिस अत्याचारको कहाँ तक सह सकता था। खास कर जब कि, अपनी योग्यताके बलपर वह खलीफाके दर्बारमें बळे-बळे पदोपर पहुँचने लगा। सातवी शताब्दीके बादके अिस्लामके धार्मिक साहित्य और अुसके नेताओको देखे, तो अुनमे ओीरानका हाथ सबसे ज्यादा मिलेगा।

शुअुबिय्या (अरब-भिन्नोके पक्षपाती)——ओीरानी शुअुबिय्या दलके थोळे ही दिनोमें नेता हो गअे। अिस्माअिल-बिन्-अियासारको अपने ओीरानीपनका कितना अभिमान था, यह अुसकी निम्न-पक्तियोसे जाहिर होता है——"अुदार राजकुमार, श्रेष्ठ कुलीन क्षत्रप और मेरे पूर्वज थे। जब खुश्रो, शापोर और **हरमुजान**के समान प्रसिद्ध और सन्मानित वीर युद्धमें सिहकी तरह लळाओीके समय धावा बोलते थे, तव तूरान और यूनानके बादशाह हताश हो जाते थे। दृढ़ कवचको धारणकर खूँखार शेरकी तरह वह झपटते थे। यदि तू चाहता है, तो तुम्हे मालूम हो कि, हम अुस जाति-की सन्तान हैं, और सबसे श्रेष्ठ है।" खलीफा हिसाम (७२४—४३ ओी०)

ने अिस्माअिलके अिसी कसूरपर अुसे पानीमें डुबाकर मरवा डाला; लेकिन अीरानकी आत्माको पानीमें डुबाया नही जा सकता था। अीरानके अिस स्वाभिमानमें अेक और बात मददगार हुअी। यज्दगर्दकी कन्या शह्रबानू युद्धमें पकळी गअी और मदीना पहुँचनेपर जब यह मालूम हुआ कि, वह शाहकी कन्या है, तो पैगम्बर मुहम्मदके नाती हुसेनके साथ अुसे ब्याह दिया गया। पैगम्बर मुहम्मदके देहान्तके बाद मुसलमानोंमें अुत्तराधिकारके लिअे वैमनस्य पैदा हो गया। वह वैमनस्य यहाँ तक बढ़ा कि, पहले चार खलीफों (अबूबकर ६२२–४२, अुमर ६४२–४४, अुस्मान ६४४–५६ तथा अली ६५६–६१ अी०)के शासनके समाप्त होते ही अमीर यज़ीदने खलीफा बनना चाहा। अुधर पैगम्बरके नाती और अलीकी सन्तान होनेसे हुसेनका बहुत काफी प्रभाव था। यजीदने अधीनता स्वीकार करनेके लिअे धोकेसे अुन्हें कूफा (मेसोपातामियाकी राजधानी)में बुलाया और रास्तेमें करबलाके मैदानमें यजीदियोंने बळी नृशंसताके साथ हुसेन और अुनकी जमातको मरवा डाला। हुसेन और अुनके साथियोंका सिर काटकर यजीदके पास भेजा गया। अुसने अुन ७० मुण्डोंमें जिस वक्त हुसेनके सिरको अपने डण्डेसे हटाया, अुस वक्त अेक बूढ़े अरबसे न रहा गया और वह चिल्ला अुठा—"आह ! धीरे-धीरे ! यह पैगम्बरका नाती है। अल्लाहकी कसम, मैंने खुद अिन्ही ओठोंको हजरतके मुँहसे चुम्बित होते देखा है।" करबलाके हत्या-काण्डने, जो खिलाफतके सम्बन्धसे हुअे अुन दो दलोको और मजबूत कर दिया। हुसेन और अलीके अनुयायी शिया कहे जाते है और दूसरे सुन्नी।

हुसेनके दो छोटे-छोटे बच्चे अली अस्गर और हुसेन दमश्क भेज दिअे गअे और वहाँसे फिर वह मदीने चले गअे। अली अस्गरको ही सज्जाद और जैनुल-आबेदीन भी कहते है। अली अस़्गरकी माँ शाह यज्दगर्दकी लळकी शह्रबानू थी। अिस प्रकार अस्गरमें अेक तरफ अिस्लामके पैगम्बरका पवित्र रक्त बह रहा था, तो दूसरी तरफ सासानी-वंशका सन्मानित रुधिर

भी संचारित हो रहा था। अिसी वजहसे शिया लोगोंका अुनके प्रति अधिक सन्मान-भाव होना स्वाभाविक था और यही मनोभाव आगे चलकर सारे ओरानको शिया बनानेमें सहायक हुआ। ओरानियोंने अली अस्गरके प्रति अपना पूज्य भाव प्रकट करनेमें ओरानके प्रति कृतज्ञता प्रकट करनेका अच्छा अवसर देखा। और यज़ीद तथा अुसके अनुयायियोंकी निन्दामें अरबके अत्याचारसे पीळित ओरानी आत्माको सान्त्वना मिली। ओरान में खलीफोंका राज्य ६४२–१०३७ ओ० तक रहा। १०वी शताब्दीके अन्त तक पहुँचते-पहुँचते ओरानी आत्माकी आवाज कवियों और लेखकोंके मुँहसे स्पष्ट होकर निकलने लगी और पारसी भाषाने फिर अपना स्थान ग्रहण करनेके लिअे जोर लगाया। पारसी भाषाका प्रथम महाकवि रूदगी (सासानी राजकुमार नस्र द्वितीय ९१३–९४२ ओ०) है। अुसके बाद कितने और भी कवि हुअे; किन्तु पारसी भाषा और ओरानी राष्ट्रीयताके महान् कवि होनेका सौभाग्य फिरदौसीको है। अुसने शाहनामाके रूपमें भूलते जाते ओरानको अुसके भव्य अितिहासका फिरसे पाठ पढ़ाया।

फिरदौसीके लिअे ओरानी जाति कितनी ऋणी है, यह फिरदौसीके सहस्र-वार्षिक अुत्सवके समय (१९३४ ओ०) कहे गअे शाहंशाह पहलवीके अिन शब्दोंसे मालूम होता है—"मुझे बळी खुशी है, जो फिरदौसीके सहस्र वार्षिक अुत्सवके सम्बन्धसे यह ओरानी जातिको अेक चिरन्तन अिच्छाको पूरा करनेका मौका मिला। अिसके द्वारा हम अपनी कृतज्ञता और ओरानी राष्ट्रके सत्य प्रेमको प्रकट करें। मुझे अफसोस है कि, फिरदौसीने जो सेवायें की हैं, ... अुनके लिअे ठीक तौरसे अब तक अुसका हक अदा नहीं किया जा सका। ......अिसमें शक नही कि, शाहनामाके कर्त्ताके लिअे ओरानियोंने अपने दिलके भीतर स्थान निर्माण किया है; लेकिन यह वाजिब था कि, बाहर भी अुसका कोओी साकार रूप होता।"

अरबके शासनके बाद सेल्जुक तुर्कोंने १०३७ ओ०में ओरानपर अधिकार किया। यद्यपि पारसी साहित्यमें नव-जागृति कुछ पहलेसे ही

ما نداریم از رضای حق گله   عار ناید شیر را از سلسله
یادگار رولوسیون ایران
اولین مقتولین آزادی

१६०६ की क्रान्ति में
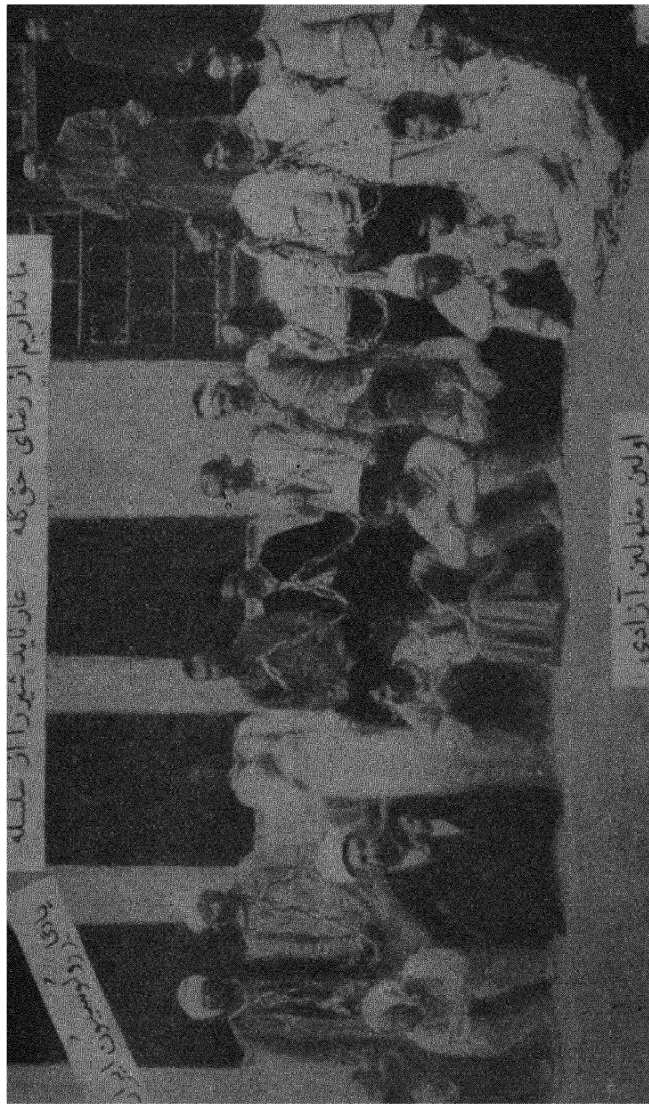
७—अीरानी राजवंश (१४६६——)

सेल्जुकोके बाद अीरान मगोलो और तेमूरके वशमे कितने ही समय तक रहा। १४९९ अी०मे अेक अीरानी खान्दान **सफावी** (१४९९–१७३६ अी०) राजवंश अीरानके सिहासनपर बैठा। अिस नये वंशकी स्थापनाके साथ-साथ शिया अिस्लाम-अीरानका राष्ट्रीय धर्म स्वीकार किया गया। सफावीके बाद अफसरिया (१७३६–५० अी०), **जन्दिया** (१७५०–८७ अी०) और फिर **काजारिया** (१७८७–१९२५ अी०) राज्य-वशोने अीरानपर शासन किया। अिनमें सफावी-वंशने पहला अीरानी-वंश होनेसे अीरानी राष्ट्रके लिअे बहुत कुछ किया और अिसीलिअे यह खान्दान भी अधिक दिनों तक राज्य करता रहा। अब्बास महान् (१५८७–१६२९ अी०) मुसलमानी अीरानका सबसे बळा शासक है। आज भी उसकी बनवाअी बळी-बळी अिमारते अस्फहान और तेहरानकी शोभा बढ़ा रही है। काजार-वंशके साथ साथ अीरानका सम्बन्ध युरोपकी जातियोसे होने लगा और १८वी शताब्दीमे अीरान अँग्रेज और रूस दो प्रधान शक्तियोके लोभका शिकार बना।

१९०५-६ की क्रांति

१८वी शताब्दीके अन्तमे रूसने काकेशस्, जार्जिया, आर्मेनिया, दागिस्तान और आजुर्बाअिजान प्रान्तोको दखल कर लिया अुसी समय मौका पाकर अँग्रेजोने बलूचिस्तानमे अपना पैर बढाया। अँग्रेजोने मिट्टीके तेलके कुओका अधिकार भी अपने हाथमे ले लिया और धीरे-धीरे दक्षिणी अीरान अँग्रेजोके प्रभावमे चला गया। अिसी प्रकार अुत्तरी अीरानपर रूसने अपना सिक्का जमा लिया। अीरानी शिक्षित समाज देख

रहा था कि, किस प्रकार अेक तरफ अुनका देश विदेशियों द्वारा पद-दलित हो रहा है; और दूसरी तरफ अुन्होने यह भी देखा कि, अुनके शाह मुजफ्फरुद्दीन विदेशोंकी सैर और अपने अेशो-आराममे मुल्ककी सम्पत्तिको बर्बाद कर रहे है।

अवस्था यहाँ तक बिगळ गअी कि, प्रजाने अपना अधिकार माँगना शुरू किया। अिसी समय रूस और जापानकी लळाअी हुअी थी। जापानकी विजयने—अेसियाके और देशोंकी तरह ओीरानियोंमें भी आशा और हिम्मतका संचार किया। धीरे-धीरे तरुण ओीरानकी माँग और बढ़ती गअी। अिसपर शाहकी सरकारने कळाअीसे काम लेना शुरू किया। १९०५ ओी०-के अन्तमे क्रान्तिने बळा रूप धारण किया। हजारों देश-भक्त जेल भेजे गअे और कितने ही गोलीसे उळा दिये गअे। शाहकी सरकारने हर तरहसे क्रान्तिको दबा देना चाहा किन्तु अन्तमें वह असफल रही। शाहने प्रजाको पार्लियामेंट द्वारा शासनका अधिकार देना स्वीकार किया। अिस तरह अक्टूबर १९०६ ओी०को मजलिसे-मिल्ली (राष्ट्रीय सभा)का अुद्घाटन हुआ।

अधिकार दे देनेपर भी शाह और अुसके पिट्ठुओंकी कोशिश यही रही कि, प्रजा अपने अधिकारका अुपयोग नही करने पावे। मुजफ्फरुद्दीनका अुत्तराधिकारी मुहम्मद अली शाह भी वैसे ही रंगीला निकला। प्रजाने फिर आन्दोलन शुरू किया और अुसने अपने १२ वर्षके लळके अहमदशाहको अपना स्थानापन्न बना गद्दी छोळ दी। अहमद शाहकी भी हालत वही निकली और अुसने फ़्रांसको अपना घर ही बना लिया। महायुद्धके बाद और देशोंकी तरह ओीरानी लोगोंके भावमें भी बहुत परिवर्तन हुआ। ओीरानी राष्ट्र अेक अैसे नेताकी खोजमें था, जो अुन्हें पळोसियोके मुँहसे बचाये और राष्ट्रमें नया जीवन डाले। अुन्हे जेनरल रजा खाँ जैसा बहादुर और दूरदर्शी नेता मिला। फरवरी १९२१ ओी०को रजाखाँने अपनी सेनाको लेकर राजधानी तेहरानपर अधिकार कर गवर्नमेंटकी बागडोर अपने

१९०६ की क्रान्ति में

हाथमें ले ली। नयी गवर्नमेंटमें अुन्होने युद्ध-मन्त्रीका पद ग्रहण किया। अुन्होने १९२४ अी०में अपना प्रसिद्ध पहलवी-मन्त्रि-मण्डल कायम किया; देशकी अवस्थामें बहुतसा सुधार किया। तो भी सदा विदेशमें रहनेवाले अहमदशाहके बादशाह होनेके कारण स्थिति चंचल ही रहती थी। अन्तमें ३१ अक्टूबर १९२५ अी०को अीरानी जनताने रजा शाह पहलवीको अीरानके सिंहासनपर आसीन किया। अुन्होने देशको अँग्रेज़ों और रूसके प्रभावसे मुक्त किया।

अनिवार्य सैनिक सेवाका कानून जारी किया। आयात-करको विदेशियोंके हाथसे छुळाया। कानून और न्याय विभागका सुधार किया। देशकी आर्थिक अुन्नतिके लिअे बैंक स्थापित किअे। सेना पुलिसका आधुनिक ढंगसे संगठन किया। जल-सेना और हवाअी सेनाकी स्थापना की। पुराने ढंगके नाप-तौलको मात्रिक (दशमलव) प्रथाके अनुसार परिवर्तित किया। शिक्षाके लिअे सब जगह आयोजन किया। अीरानी लोगोंको यूरोपीय पोशाक पहननेके लिअे कानून बनाया। धार्मिक कट्टरता तथा कितनी ही दोषपूर्ण प्रथाओंको अुठा दिया। स्त्रियोंको राज-आज्ञासे पर्देके बाहर कर दिया; और शुक्रबारकी तातीलको बदलकर अितवार कर दिया। देशमें सौर सम्वत् और तिथियोंका प्रचार किया।*

---

*Persia: Romance and Reality (1935) *By* O.A. Merritt-Hawkes. Ivor Nicholson and Watson Limited, London.

"It is impossible to be long in Persia, to talk to many of the young, educated Persians, without realizing that Islam will go sooner or later." P. 262

"The new spirit of nationalism in Persia has some of the elements of Fascism, for it looks back, largely, regardless of historical sequence and values, to the time when Persia was greater and more powerful than now and especially to

pre-Islamic days—a period of 1,300 years ago. There is a strong feeling of antagonism to even annoyance with, anything Arabian, as if the influence of thirteen centuries could be wiped out in a day."

"It is Arabian influence that has spoilt Persia, her material greatness, her moral tone, is also a statement heard every day. . . .Many Persians are sure that all their faults, especially their tendency to lie, and no Persian denies that, although their ingenious explanations almost make lying a virtue, are due to Islamic influence, for Islam allows, through prayers and pilgrimages wiping out of evil deeds, both for one's self and one's ancestors, which, some say, encourages anti-social and immoral behaviour. This attitude of 'blaming it on' Mahomet is accused of having a degenerating influence upon daily conduct . The Moslem heaven is to some, only a perfect brothel. . . . ." P. 266.

"Educated people in Persia are at present very few,. . . . ., and amongst those a tiny handful are enlightened, enthusiastic, capable of the sacrifice. . . . one of that handful said, 'one per cent of us will save Persia. Perhaps Islam will go; it does not matter, but our ideals will spread.' " P. 269

अेक भारतीय मुसल्मान लेखक श्री मुहम्मद अिसहाक़ The Twentieth Century (June 1937) **मे लिखते है ।**

"One of the great signs of this new life is the awakening of her (Iran's) interest in her ancient glory, in her ancient kings, in her ancient religion and her great prophet Zarathushtra." (P. 823)

"To throw off the yoke of Arabic influence in every sphere of national life is the keynote of the trend of modern Persian literature." (P. 824)

"The omission of religion in modern Persian literature is a very noticeable feature." (P. 824)

८—ओीरानके राजवंश

ओीरानी

१—मद्र (Medes)

		ओी०पू०
१.	दयाहक्कू (देवक)	–६५५
२.	फ्रवर्त्तिश ..	६५५–
३.	हुअक्षत्र ..	–५८५
४.	इष्टवेगु ..	५८५–५०

२—अखामनशी (Achaemenes)

१.	कोरोश (Cyrus)	५५९–२९
२.	कंबोज ..	५२९–२१
	(गोमत ..	५२१)
३.	दारयोश (१)	५२१–४८५
४.	क्षयार्श (१)	४८५–६६
५.	अर्तक्षत्र (१)	४६६–२५
६.	क्षयार्श (२)	४२५
७.	दारयोश (२)	४२४–४
८.	अर्तक्षत्र (२)	४०४–३५८
९.	अर्तक्षत्र (३)	३५८–३६
१०.	दारयोश (३)	३३६–३०

३—यूनानी

		ओी०पू०
१.	सिकन्दर (१)	३३०–२३
२.	सिकन्दर (२)	३२३–१२
३.	सेल्यु कुस् ..	३१२–२८१
४.	अन्तियोकुस् (१)	२८१–६२
५.	अन्तियोकुस् (२)	२६२–४६

४—पार्थी

१.	अर्शक (१)	२४९–४७
२.	अर्शक (२) (तीरदाद)	२४७–१४
३.	अर्शक (३) (अर्दवान्)	२१४–१८१
४.	फ्रयायत् (Phraates I)	१८१–७०
५.	मिथ्रदात (१)	१७०–३८
६.	फ्रयायत् (२ फरहाद)	१३८–१२४
७.	मिथ्रदात (२)	१२४–८८
८.	सनद्रूक (Sinatruces)	८८–६९
९.	फ्रयायत् (३)	६९–६०
१०.	मिथ्रदात (३)	६०–५६
११.	अुरुद (१)	५५–३७

	ई०
१२. फ़यायत् (४)	३७–३३
१३. तीरदाद ..	३३–३०
१४. फ़यायत् (४)	३०–२ ई०
१५. अुरुद (२)	२–६
१६. वानान् (१)	७–१६
१७. अर्दवान् ..	१६–४२
१८. वारदान ..	४२–४६
१९. गोदर्ज ..	४६–५१
२०. वानान् (२)	५१
२१. वल्गश् (१)	५१–७७
२२. पाकुर (२) २३. अर्दवान (४)	७७–१०५
२४. खुश्रो ..	१०५–३३
२५. वलगश् (२) २६. वल्गश् (३)	१३३–९१
२७. वलगश् (४)	१९१–२०८
२८. वल्गश् (५)	२०८–१६
२९. अर्दवान् (५)	२१६–२६

५—सासानी (ईरानी)

१. अर्देशीर (१)	२२६–४०
२. शापोर (१)	२४०–७१
३. होर्मुज (१)	२७१–७२
४. बहराम (१)	२७२–७५
५. बहराम (२)	२७५–८२
६. बहराम (३)	२८२
७. नरसी ..	२८२–३०१
८. होर्मुज़ (२)	३०१–९
९. शापोर (२)	३०९–७९
१०. अर्देशीर (२)	३७९–८३
११. शापोर (३)	३८३–८८
१२. बहराम (४)	३८८–९९
१३. यज्दगर्द (१)	३९९–४२०
१४. वहरामगोर	४२०–४०
१५. यज्दगर्द (२)	४४०–५७
१६. होर्मुज (३)	४५७–५९
१७. फीरोज (१)	४५९–८३
१८. वल्गश् (वलाश्)	४८३–८७
१९. कवद (१)	४८७–९८
२०. जामास्प ..	४९८–५०१
कवद (१)	५०१–३१
२१. खुश्रो (१) अनोशीरवाँ	५३१–७८
२२. होर्मुज्द ..	५७८–९०
२३. खुश्रो (२) पर्वेज़	५९०–६२८
२४. कवद (२)	६२८–२९
(अराजकता	६२९–३४)
२५. यज्दगर्द (३)	६३४–४२

(अरब-खलीफ़ा)

६—हाशिमी

१. अुमर ..	६४२–४४

		ओी०
२.	अुस्मान ..	६४४–५६
३.	अली ..	६५६–६१
४.	हसन ..	६६१

७—अुमय्या

१.	म्वाविया ..	६६१–८०
२.	यज़ीद (१)	६८०–७१७
३.	अुमर (२)	७१७–२०
४.	यज़ीद (२)	७२०–२४
५.	हिशाम ..	७२४–४३
६.	वलीद ..	७४३
७.	यज़ीद (३)	७४३–७४४
८.	अिब्न म्वाविया	६४४–४७

८—अब्बासी

१.	अब्दुल् अब्बास	७४९–५४
२.	अबूजाफर मंसूर	७५४–७५
३.	मेहदी ..	७७५–८५
४.	हादी ..	७८५–८६
५.	हारूँ रशीद	७८६–८०९
६.	अमीन ..	८०९–११
७.	मामून ..	८११–३३
८.	मुतासिम् ..	८३३–४२
९.	वासिक ..	८४२–४७
१०.	मुतवक्किल	८४७–६१
११.	मुन्तसिर ..	८६१

		ओी०
	(अराजकता	८६१–७०)
१२.	मोतमिद् ..	८७०–९२
१३.	मोतज़िद् ..	८९२

ओीरानी

९—सफ्फारी

१.	याकूब-बिन्-लैस	८७१–७८
२.	अम्रुल-लैस	८७८–९०३

१०—सामानी

१.	अिस्माओील	९००
२.	अहमद ..	–९१३
३.	नस्र ..	९१३–
४.	नस्र (२)	
५.	नूह ..	
६.	अब्दुल् मालिक (१)	
७.	मंसूर (१)	
८.	नूह ..	
९.	मंसूर (२)	
१०.	अब्दुल् मालिक (२)	–९९९

११—ज़ियारी

१.	काबूस ..	९९९–१०१२

१२—बुवायही

१.	अली-बिन्-बुवायही	–९३२
२.	अहमद (मुओी-जुद्दौला) ..	–९६७

ई०

३. आज़ादुद्दौला ९६७–
४. मज्दुद्दौला

१३—गजनवी

१. महमूद .. –१०३३
२. मसऊद ..१०३३–

१४—सेल्जूकी

१. तोग्रल् बेग १०३७–६२
२. अल्प आर्स्लन १०६२–७२
३. मालिकशाह (१) १०७२–९२
४. महमूद (१) १०९२–
५. बर्कियारुक् १०९४–
६. मालिकशाह (२) –११०४
७. मुहम्मद (२) ११०४–१८
८. सन्जार .. १११८–५७
९. तुग्रल .. –११९४

१५—ख्वार्ज़मी

१. अिल्-अर्स्लन –११७३
२. तेकिश ..
३. शाहमहमूद
४. अलाअुद्दीन-
मुहम्मद .. १२००–२०
५. जलालुद्दीन १२२०–३१

ई०

मंगोल

१६—चंगेज़ी सम्राट्

१. चंगेज .. १२२१–२७
२. ओगोते .. १२२७–४१
३. कुयुक् .. १२४६
४. मंगू .. १२५१–

१७—अिल्खानी

१. हलागू .. १२५१–६५
२. अबजा .. १२६५–८१
३. अहमद (मुस्लिम) १२८१–८४
४. अरगून .. १२८४–९१
५. गेरवातू .. १२९१–९५
६. बैदू .. १२९५
७. गज़न (मुस्लिम) १२९५–१३०४
८. अुल्जाअित् १३०४–१६
९. अबू-सअीद १३१६–३५
१०. अर्पा .. १३३५
११. मूसा .. १३३६
१२. मुहम्मद .. १३३६–८
१३. तुगा-तेमूर.. १३३८–
१४. जहान-तेमूर १३३९–४१
१२. सती बाग (रानी) १३३९–
१३. सुलेमान .. १३३९–४३

औ०

१४. नौशेरवाँ .. १३४४–

१८—अिलखानी

१. शेख हसन बुजुर्ग –१३५६
२. आवेस ..१३५६–८२
३. सुल्तान अहमद १३८२

१९—तेमूरी

१. तेमूर ..१३८०–१४०४
२. खलील सुल्तान १४०४–९
३. शाह रुख .. १४०९–४७
४. अुलुग बेग १४४७–४९
५. अब्दुल् लतीफ १४४९–५२
६. अबू सअीद १४५२–६७
७. सुल्तान अहमद १४६७
८. सुल्तान हुसेन ..

२०—अक्कुयुनल्

१. अुजुन हसन –१४७८
२. याकूब ..
३. अलमूत .. –१४९९

औीरानी

२१—सफावी

१. अिस्माअील (१) ..१४९९–१५२४

औ०

२. तहमास्प .. १५२४–७६
३. अिस्माअील (२) १५७६
४. मुहम्मद खुदाबन्दा १५७८–८७
५. अब्बास (१) महान् १५८७–१६२९
६. शफी .. १६२९–४२
७. अब्बास (२) १६४२–६७
८. सुलेमान .. १६६७–९४
९. सुल्तान हुसेन १६९४–१७२२
१०. तहमास्प ..

(अफगान)

२२—गिल्‌जअी

१. महमूद .. १७२२–२५
२. अशरफ .. १७२५–३०

१०. तहमास्प .. –१७३२

औीरानी

२३—अफ्शारी

१. नादिरशाह १७३६–४७
२. आदिलशाह १७४७–४८
३. अिब्राहीम १७४८
४. शाहरुख ..

२४—जन्दी

१. करीम खाँ.. १७५०–७९

	ई०
२. ज़की खाँ ..	१७७९
३. अबु तालेह	
४. अली मुराद	१७८२–
५. जाफर ..	१७८५–८९
६. लुत्फ अली	१७९०–९४

२५—काजार

१. आगा मुहम्मद	१७९४–९७
२. फतेह अली	१७९७–

	ई०
३. मुहम्मद शाह	–१८४८
४. नासिरुद्दीन	१८४८–९६
५. मुज़फ्फरुद्दीन	१८९६–१९०६
६. मुहम्मद अली	१९०६–९
७. अहमद शाह	१९०९–२५

२६—पहलवी

१. रजा शाह	१९२५–

नवीन ईरान

नवीन अीरान

१——बाकूसे प्रस्थान

बाकूमें अीरानी कौसल-जनरलसे हमने अपने पासपोर्टका वीसा (देशमे आनेकी स्वीकृति) करवा लिया था। ११ सितम्बर (१९३५ अी०) को हमारा जहाज खुलने वाला था। हम अपने सामानके साथ २।। बजे बन्दरपर पहुँचे। रूसमें सभी काम योग्यता होनेपर सभीके लिअे खुले हुअे हैं। बळेसे बळे पदके लिअे भी न स्त्री पुरुषका ख्याल है, न अेसियाअी या यूरोपियनका ख्याल। कस्टम आफिसर अेसियाअी थे और फारसी जानते थे। अुन्होने बळी शिष्टतापूर्वक हमारा सामान देखा, रुपयोको भी गिनकर देख लिया। थोळी देर बाद हम अपने जहाज़में पहुँचे।

पहले पहल सोवियतके जहाज़को देखनेका मौका मिला। हमारे छोटेसे जहाज़का नाम "फोमिन्" था। हम दूसरे दर्जेके यात्री थे जिसके लिअे बाकूसे पहलवी तक १९ डालर (प्राय: ५० रु०) देना पळा। किरायेमें दो वक्तका भोजन भी शामिल था। हमारे केबिनमें तीन सीटें थीं, लेकिन यात्री हमारे सिवा कोअी नही था। चार बजे शामके करीब हमारा जहाज़ छूटा। धीरे धीरे वह किनारेसे दूर हटने लगा। और कास्पियन समुद्रके धनुषाकार तटपर बसा सारा बाकू शहर दिखाअी देने लगा। शहरके पीछेकी ओर नंगी-नाटी पहाळियाँ हैं। अेक छोरपर हजारों तेलकूपोंके अूपरी ढाँचेका जंगल है, और दूसरे छोरपर मिट्टीके तेलको सफा करने वाली तेलकी टंकियाँ और कारखाने हैं।

हमारे जहाज़के सहयात्रियोंमें दो चार अीरानी थे। बाकी सब सोवियत-प्रजा। डेकपर अेक जला-वतन अीरानी जा रहा था। कह रहा

था—बारह बरससे गंजा कस्बेमें रहता रहा हूँ। मेरे बीबी बच्चे वहाँ हैं। अितने दिनोंसे यहाँ काम करता रहा। अब हड्डी बाकी रही तो कह दिया गया—तुम्हारी यहाँ ज़रूरत नही, तुम अपने देशको चले जाओ। ज्यादा पूछ ताछ करनेपर पता लगा कि जनाब अपनेको अुस वायु-मंडलके अनुकूल नही बना सके जो रूसमें क्रांतिके बाद स्थापित हुआ। अपनी पुरानी सनातनी धार्मिक बातोके कट्टर पुजारी थे और बच्चोंके बारेमे आप वही पुराने विचार रखते थे। बारह वर्ष रहनेपर भी जब अपनेको ठीक नही कर सके तो सोवियत वालोंको क्या पळी है कि अैसी बलाको अपने सिरपर रखें।

रातको रेडियोमे आजुरबाअिजानी गाना सुनाअी देता था। अेकदम तो नहीं कुछ कुछ हिन्दुस्तानी गज़लसे मेल खाता था। भाषा तो तुर्की थी, अिसलिअे वह समझमें नही आती थी। अुस रात हवा कुछ ज्यादा तेज थी। जहाज़ कुछ ज्यादा हिलता था। हम जल्दी ही जाकर लेट रहे।

बाकूसे ही जहाज मध्य-अेसियाके रास्तेके लिअे भी जाता है और वहीसे अीरानके बन्दर पहलवीको भी।

सबेरे आठ बजे दूर अीरानकी काली तटभूमि दिखाअी देने लगी, किन्तु हमे किनारे चल कर पतली झीलके तटपर पहुँचते पहुँचते दस बज गये। अिसी झीलके अेक तरफ काजियानका पुराना कस्बा और दूसरी तरफ पहलवीकी नअी बस्ती है, नामकरण अीरानके वर्तमान बादशाह रज़ाशाह पहलवीके नामपर हुआ है। बाकूकी सूखी जगह देखनेके बाद यह हरा भरा प्रदेश बळा सुन्दर मालूम होता था। ज़ारशाहीने अिस नगरको पहले पहल आरम्भ किया था। अुस समयके बने कितने ही मकान रूसी ढंगके हैं। सड़क चौळी और साफ। जनसंख्या चौदह हजारसे अूपर है। निवासियोमें सोवियत-प्रजाकी संख्या काफी है। अिनके लिअे सोवियतने एक अलग स्कूल खोल रखा है। जहाज़से अुतरते ही कस्टम-वालोंने सामानकी जाँच की। पासपोर्ट देखा। अभी कस्टम-गृहसे

हम बाहर भी नहीं होने पाये थे कि मोटरवालोने जान खानी शुरू की। जापान और रूसके रास्ते आनेसे हम मोल-तोलकी बात ही भूल गये थे। एक आदमीने अपनी अच्छी साफ मोटर दिखला कर कहा—"आिअे तेहरानके लिअे १५ तुमान (१५ रु०)।" हमने कहा—"यदि अिससे सस्ती मोटर न होगी, तब।" दो अेक आदमियोसे पूछनेपर मालूम हुआ पाँच तुमान अधिक माँग रहा है। फिर अेक दूसरे आदमीने १० तुमान कहकर अपनी टैक्सीपर हमारा सामान रख लिया। वह अेक होटलमें ले गया जिसमें अुसका अपना आफिस भी था। बाजारमें जानेसे पहली बात तो यह मालूम हुअी कि मीठे सफेद अंगूर टके सेर हैं। हमने कुछ अंगूर लेकर जलपान किया। धीरे धीरे ग्यारह बजा, बारह बजा, अेक भी बजने लगा। दूसरी टैक्सियाँ दनादन तेहरानके लिअे छूट रही है। हम बार बार अुकता रहे है। लेकिन वह आदमी कह रहा है। ठहरिअे, दूसरी टैक्सी जा रही है। यही हालत जेकोस्लावाकियाके दो स्त्री-पुरुषोंकी भी हो रही थी। रहस्य मालूम हुआ कि वह किराया बढ़ाना चाहता है। आखिर हम तीनोने सलाह करके १३ तूमान देना तै किया। अीरानका यह पहला तजर्बा था।

रूसकी तरह अीरानमें भी मीलकी जगह किलोमीतर का अिस्तेमाल होता है। मील प्रायः डेढ़ किलोमीतरका होता है। कास्पियनके किनारे वाला अीरानका यह प्रान्त जीलान बहुत ही हरा भरा है। अिसके हरे भरे जंगल, बळे बळे वृक्ष, लहलहाते चावलके खेत बळे सुन्दर मालूम होते थे। लेकिन अिस सौन्दर्यका महत्त्व हमें अुस समय नही मालूम हुआ। हम समझ रहे थे सारा अीरान ही अिसी तरहका है। पीछे देखनेपर मालूम हुआ कि अीरान प्राकृतिक सौन्दर्यकी दरिद्रतामें तिब्बतका छोटा भाअी है। और पीछे यह भी ख्याल आया कि हातिमताअीमें माज़िन्दराँका प्रान्त—परियोंका देश—क्यों अितना सुन्दर चित्रित किया गया है। अीरानी तो अिसके प्राकृतिक सौन्दर्यसे अितने मुग्ध है कि अिसे "हिन्द कोचक" (छोटा हिन्दुस्तान)

नाम दे रखा है। किन्ही किन्ही बातोंमें अिसकी अुत्तरी विहारसे समानता है। मकानोंकी छतें अधिकतर फूसकी है। गाँवमें अभी कोट-पतलून धीरे धीरे आ रहा है और अुसीके अनुसार मेज़-कुर्सी भी। अिस प्रान्तमें पहुँचकर अेक बार भारत याद आने लगा। लेकिन दूसरे दिनसे फिर कुछ दिनोंके लिअे भूल गया। २६ मील चलकर हम रेश्त शहरमें पहुँचे। यह ओीरानके पुराने शहरोमे है। शाह-पहलवीके १० वर्षके शासनमें ओीराननने अनेक क्षेत्रोमें बळी अुन्नति की है। अुनमें सळकोका सुधार भी है। **रेश्त**की सळकें भी खूब चौळी है। चौरास्ता भी विस्तृत और सुन्दर है। मकानोंकी छतें लाल खपळैलकी है। अुनको देखनेसे तो मालूम हो रहा था कि अुत्तरी भारतसे किसी सैयदका घर अुठकर चला आया है। सळकोपर दूकानें नअे ढंगसे सजी हुअी हैं। ओीरानी तो वैसे भी काफी गोरे होते है और अुनमें भूरे बालों, नीली आँखवालोकी कमी नही है; और अब जो अुनके शाहने हैट पहननेका कानून जारी कर दिया है, अुससे तो बहुतोंको पहचानना मुश्किल हो गया कि यह यूरोपियन नहीं है। दूकानोंमें सलमानी या बाल बनानेकी दूकानें बहुत है और क्यो न हो जब कि स्त्रियो तकने बालका बायकाट जारी कर दिया है। हमारी मोटर ज़रा देरके लिअे रास्तेमें ठहरी और हम फिर रवाना हुअे। आगे मीलों तक जंगलसे गुज़रना पळा। मोटरकी सळकोंके लिअे ओीरान आदर्श देश है। हर जगहपर पक्की सळकके लिअे सामान है। सळके बहुत अच्छी हालतमें रखी गअी है और अुनपर पाँच पाँच टनकी छः पहिअे वाली लारियाँ दिन रात दौळती रहती है। अेक सौ बाअीसवें किलोमीतरपर मंजिल गाँव पळा। यहाँ हरियालीका राज्य समाप्त हो जाता है। और आगे हम पहाळपर चढ़ते हुअे सूखे ओीरानकी तरफ अग्रसर होते है। अिस पहाळी दर्रेमें हमेशा तेज हवा चला करती है। पासमें सपेदरूद नदी है। अिसपर अेक अच्छा लोहेका पुल बना हुआ है। पहाळकी अुँचाअीके साथ साथ सर्दी भी बढ़ती जाती थी। शामको पहाळ और बिना छिले पत्थरोंके ढेरवाले मकानोंको देखते गुज़र रहे थे। अुन्हें

देखकर तो मुझे बाल्तिस्तान और लदाख याद आ रहे थे। नौ बजे कुहीन (१९४ किलोमीतर) गाँवमें पहुँचे। यहाँ कअी भोजनालय और फलकी दूकाने है। हम तीनोने यही मुर्ग-मुसल्लम् और हाथीके कान जैसी रोटियोंका भोजन किया।

कास्पियनसे तेहरान आते समय कुहीन सबसे अूँची जगह है। बरफके मारे जाळेमे कभी कभी यहाँका रास्ता रुक भी जाता है। भोजनोपरान्त हम फिर रवाना हुअे। रातका समय था और मोटर खुली हुअी नही थी अिसलिअे आसपासकी भूमिको नही देखा जा सकता था। तो भी स्थान हरा भरा नही मालूम होता था। ग्यारह बजे बाद हम कजबीन पहुँचे। पहलवीसे यह स्थान २३२ किलोमीतर है। अेक बार यह नगर अीरानकी राजधानी भी रह चुका है। अब भी विशाल घर और पुरानी अिमारतें अिसके पुराने गौरवको प्रदर्शित कर रही है। सळकें खूब चौळी है और नगर में बिजलीकी रोशनी है। यहाँ भी पुलिसकी चौकीपर हमारे पासपोर्टकी जाँच हुअी। दो घंटे और चलनेके बाद कराज (३७७ किलोमीतर) पहुँचे। दूध सी चाँदनी चारो ओर छिटकी हुअी थी। सळकके किनारे कही कहीं बाग़ दिखाअी पळे। अन्तमे दो बजे रातको २५० मील (३७७ किलोमीतर) चलकर हम तेहरान पहुँचे। अुस रातके वक्तमे भी बिजलीकी रोशनीमें स्वच्छ चौळी सीधी सळके और नअे ढंगकी अिमारते बतला रही थी कि तेहरान अेक सुन्दर शहर है। हमारे साथी जेकोस्लोवाकीय महाशय मेहमान-खाना-कस्र (Palace hotel)से परिचित थे और अुनके साथ हम भी अिसताम्बूल सळकके अुक्त होटलमे ठहरे।

२—तेहरान

१३ सितम्बरको सबेरे मुँह हाथ धो नाश्ता कर बाहर निकले। सबसे पहले आवश्यकता पळी किसी अैसी पथप्रदर्शक पुस्तककी जिससे अीरानके बारेमें अधिक जाना जा सके। पूछनेपर मालम हुआ खयाबान् (सळक)-फिरदौसीपर बेगन्-लिट् कम्पनी है। वहाँ अंग्रेजीमें अेक गाअिड मिली। थी तो १९३१की छपी, लेकिन तो भी अुससे कुछ काम चल जाता था। फिरदौसीकी सळक खूब चौळी है। दोनों तरफ अूँचे अूँचे मकान बने और कुछ बन रहे है। आगे बढ़नेपर हमें कितने ही सरकारी दफ्तर और अीरान-राष्ट्रीय-बैंककी विशाल अिमारत मिली। म्युनिस्पेल्टीके सामने बहुतसी मोटर-बसें खळी थी। अिनके रंग और बनावटको देखकर मालूम होता था कि भारतकी अपेक्षा यहाँ अिन बातोंपर अधिक ध्यान जाता है। यही अेक आर्मेनियन सज्जन मिले। वे अेक बसके ड्राअिवर थे। अुनकी बस १५वें, १६वें नम्बरपर थी। आगेकी बसोके छूट जानेपर अुनका नम्बर आनेवाला था, अिसलिअे अभी अुसके जानेमें देर थी। सभी बसोंपर शमिरान लिखा हुआ था। आज शुक्रवार छुट्टीका दिन था, अिसलिअे लोग तेहरानसे १० मील दूर शमिरानको सैर करनेके लिअे जा रहे थे। है तो शुक्रवारकी छुट्टी जुमाकी नमाजके लिअे लेकिन शराबकी बोतलों और फोनोग्राफके साथ मित्रमण्डली (स्त्रीपुरुष दोनों) जितनी संख्यामें शमिरानकी सैरके लिअे जा रहे थे, अुसीसे पता लग जाता था कि नया अीरान धर्मके लिअे कितना ख्याल रखता है।

दो रियाल (=पाँच आना) देकर भोजन किया और हम भी उक्त सज्जनके साथ शमिरानकी सैरके लिअे चले। यह स्थान अीरानके अत्यन्त सुन्दर हिमाच्छादित पर्वत अल्बुर्ज़के सानुपर अवस्थित है। वैसे तो तेहरान भी समुद्र तटसे ४००० फीटसे अधिक अूँचा होनेसे ठंढा है। तो भी दोपहरको

तेहरान—कोह-दमावन्द

घरसे बाहर गर्मी मालूम हो रही थी। शमिरान तेहरानसे ८०० मीटर अधिक अूँचा है, अिसलिअे अुससे अधिक ठंढा है। गर्मीके दिनोंमें बादशाह अधिकतर यहीं वास करते हैं। तेहरानसे यहाँ तकके रास्तेमें ६३ गॉव पळते हैं। जगह जगह बहुतसे सेब, बिही, अंगूर और अनारके बागीचे हैं। रास्तेमे हमें क़िलानुमा पुराना जेल सैनिकोंकी छावनी और बेतारके खम्भे मिले। बाहरकी सळकोंको देखनेसे मालूम हुआ कि सरकार-का अिस ओर बहुत ध्यान है।

मर्दोकी पोशाक देखनेमें सभी अंग्रेजी ढंगकी थी। सिरपर हैट थी। किसी किसीकी छज्जेदार टोपी (कुलाह-पहलवी) थी। स्त्रियोंका चेहरा खुला हुआ था। पैरका जूता और मोज़ा बतला रहा था कि वह भीतरसे भी यूरोपीय पोशाकमें है, सिर्फ अूपर अेक काली चादर थी, जिसका अेक भाग सिरपर पळा था। ललाटपर अेक काला छज्जा था और चेहरा बिल्कुल खुला हुआ। मेरे मित्रने बतलाया कि यह ओढ़नी भी जल्द हटने वाली है, और अीरानसे परदा हमेशाके लिअे बिदा होनेवाला है। अळ्बुर्ज़का स्तूपाकार हिमाच्छादित शिखर अीरानके अत्यन्त सुन्दर दृश्योंमें है। अिसकी मनोहारिता जापानकी फूजीयामासे किसी प्रकार कम नही। यदि यह कहीं जापानमे होता तो फूजीयामाकी तरह अिसके भी चित्र और फोटो घर घरमें टँगे होते।

चौदह तारीखको घूमकर शहरके कितने दर्शनीय स्थानोंको देखा। बादशाहके पहलवी महलके द्वारपर पंखवाली पीतलकी दो मूर्तियाँ प्रकट कर रही थी कि उनका राजा पुराने अीरान अर्थात् अीरानी अीरानका कितना भक्त है।

होटलोंमें पूछनेपर मालूम हुआ, दश पन्द्रह आने रोजमें किसी होटलमें अच्छी कोठरी मिल सकती है। अब तक जिस होटलमें हम ठहरे थे अुसका किराया ४) रोजसे अधिक पळता था। खानेका खर्च तो सभी जगह अलग होता है। चिराग़े-बर्क़ सळकपर कुछ सिक्ख और दूसरे

पंजाबी भाअिओंकी दूकानें देखनेमें आअी। यही सरदार रणवीर सिंहसे परिचय हो गया। हम भी अपना सामान यहीके मेहमानखाना-अहवाज़में अुठा लाअे।

ओीरानमें हम अेक महीना रहकर अस्फहान, शीराज़, मशहद आदि शहरोको देख लेना चाहते थे, और फिर काबुलके रास्ते भारत लौटनेका अिरादा था। काबुलके कौसलके पास वीसा (देशप्रवेशकी आज्ञा) लेने गअे। अुन्होंने बतलाया, हिरातसे होकर काबुलका रास्ता अच्छा नही है। अच्छा होगा, आप मशहदमें अफगान कौसलसे अिसके बारेमें पूछें।

हमारे पास अमेरिकन-अेक्सप्रेस-कम्पनीका चेक था। बैंक-मिल्ली (राष्ट्रीय बैंक)में जाकर १० डालरका ओीरानी सिक्का भुना लाअे। अुस दिन सरदार रणवीर सिहके यहाँ दोपहरका भोजन था। भोजन ही पंजाबी नही था बल्कि अुसके साथ पंजाबका अकृत्रिम अतिथि सत्कार भी सम्मिलित था। पूछनेसे ज्ञात हुआ, अेक शहरसे दूसरे शहरमें जानेके लिअे जावाज़ (आज्ञापत्र, राहदारी) लेना पळता है। अुसे लेने पुलीसके दफ्तरमें गअे। देखनेसे मालूम हुआ कि जावाज लेना विदेशी-स्वदेशी सभीके लिअे आवश्यक है। दफ्तरमें अेक बातका और अनुभव हुआ, जो कि करीब करीब सभी ओीरानी दफ्तरोंमें देखा जाता है, वह था खामखा मुसाफिरोंको खळे रखकर हैरान करना।

यह ज़रूर सुननेमें आया कि सरकारका अिसे दूर करनेकी ओर बहुत ध्यान है तो भी, जान पळता है, पोशाक बदलनेके साथ साथ यह काम नही हो सका। लूट-मार और अशांति जैसी शाह पहलवीके शासनसे पहले थी, अुसे दूर करनेके लिअे यात्रियोंपर विशेष दृष्टि रखना सरकारके लिअे अवश्य ज़रूरी था। तो भी विदेशी यात्रियोंको अिसके कारण जो तरद्दुद अुठानी पळती है अुसका ख्याल ज़रूर रखना चाहिअे। जापान और रूसमें देशके भीतर प्रवेश करते तथा निकलते समय ही पासपोर्टकी छानबीन होती है, लेकिन यहाँ तो बार बार अेक शहरसे दूसरे शहरमें जाते वक्त घण्टे आध घंटे

तेहरान पार्लियामेंट (मजलिस)

रोककर जाँच पळताल होती रहती है। बादशाहके सैकळों नअे धार्मिक और सामाजिक सुधारोके कारण कितने ही कट्टरपंथी अवश्य नाराज हैं और सरकारी अुच्च कर्मचारियों और बादशाहको अुनसे सुरक्षित रखनेके लिअे भी यातायातपर कुछ निर्बन्ध रखना वर्तमान कालमें ज़रूरी है तो भी अेक विदेशी यात्रीसे क्या डर हो सकता है। जिस वक्त जावाजके लिअे कितने ही मुसाफिर जंगलेपर खळे थे; उस समय कर्मचारी साहब रजिस्टर मिलानेका काम कर रहे थे।

३—अिस्फ़हानको

२६ रियाल (४ रु०) देकर हमने अिस्फ़हानका टिकट लिया। होटलमें ओढ़ना बिछौना मिल ही जाता है, अिसलिअे हमने अपना सब सामान तेहरानमें ही छोळ दिया और सिर्फ़ अेक हैन्डबेग और शरीरपरके कपळेके साथ रवाना हुअे। चार बजेसे करते करते आठ बजे रातको मोटर-बस रवाना हुअी। दो दर्जनसे अूपर आदमी ठूसकर भर दिअे गअे थे। अैसा न होने देनेके लिअे पुलीसको कळी आज्ञा है तो भी बसवाले हाथ गरम करके अुनका मुख चुप करा दिया करते हैं। नगरके फाटकपर पुलीसने मुसाफिरों-की गिनती की। अुनका पास देखा। कुछ मील चलनेपर अेक जगह और पास दिखलाना पळा। अुस जगह तीन अीरानी, जो बिना जावाजके ही सफर कर रहे थे, चौकीसे थोळा पहले ही उतर गअे और रास्ता काटकर आगे आ मिले। रूसकी भाँति अीरानमें भी हरेक आदमीको फोटोके साथ सरकारी प्रमाण-पत्र साथ रखना होता है।

कुम्—दो बजे रातको हम कुम पहुँचे। पाँच आना देनेसे चारपाअी बिछौनाके साथ सोनेकी जगह मिल गअी। यह स्थान तेहरानसे १४९ किलोमीतरपर है। समुद्रतलसे ३२०० फीट अूँचा है। आबादी ३००००। बीबी फातिमा (**मशहद** वाले अिमाम-रजा (७७०–८१८) की बहिन) की समाधि होनेके कारण यह स्थान अीरानके बळे तीर्थोंमें है। अिसका सुनहला गुम्बज दूरतक दिखाअी पळता है। शताब्दियोंतक हरेक श्रद्धालु मुसलमानकी अिच्छा रही है, कि मरनेपर अुसकी कब्र बीबी फातिमाकी दरगाहकी छायामें रहे। और अिसी लिअे दरगाहके सामने कअी हजार कब्रें बन गअी थी। अगर कुछ साल पहले हम यहाँ आते तो वह हमें देखनेको मिलती, लेकिन अब तो वह कानोंसे सुननेकी बात है। शाह पहलवीने अुन सारी कब्रोंको खुदवाकर फेंकवा दिया और अुनकी जगहपर अेक विशाल

राष्ट्रीय-अुद्यान (बाग़े-मिल्ली) बनवाया। अभी वृक्ष छोटे हैं, अुनका सौन्दर्य तथा शीतल छाया नही मिल रही है, तो भी आनेवाली सन्तान अुनसे अुसी तरह लाभ अुठाकर कृतज्ञ होगी जैसे अपने बादशाहके और कितने ही राष्ट्रोपयोगी कामोंसे।

अीरानका यह अूँचा मैदान हरियालीसे वैसे ही बंचित है जैसे तिब्बत। दोनोंमें फर्क अितना ही है कि यहाँ मिहनत करनेसे कुछ अच्छे फल और मेवे पैदा किअे जा सकते हैं। अीरानमें लकळीकी कमी है, अिस लिअे गॉवोके मकानोंमें अुसका बहुत कम अुपयोग किया जाता है। गाँवों मे दीवारें मिट्टीकी होती हैं और छत कच्ची अीटके मेहराबकी। अीरानी गॉवोंकी यही गोल गोल छतें, मालूम होता है, पीछे मस्जिदोंके लिए नमूनोंकी छतोंके तौर पर अुपयुक्त हुअी। अीरानमें वर्षा भी बहुत कम होती है और जो पानी नदी या वर्षासे प्राप्त होता है अुसे बेकार न जाने देनेकी पूरी कोशिश की जाती है। नदीके पानीको जिन नहरोंके जरिअे ले जाया जाता है वह भूमिके भीतर भीतर जाती हैं। थोळी थोळी दूरपर खुदे कच्चे कुओंको भीतर ही भीतर सुरंग खोदकर मिला दिया जाता है, और यही अीरानी नहरे हैं। बरसातके पानीको जमा करनेके लिअे हरअेक घरमें पक्का चहबच्चा होता है। नहाने धोनेका सब काम अिसी पानीसे लिया जाता है।

कुमके पुराने बाज़ारको हम देखने गअे। साराका सारा बाज़ार मेहराबी छतके नीचे बसा हुआ है। डाकखानेपर सशस्त्र पहरा पळ रहा था, जिससे जान पळता था कि अभी कल तक यहाँ डाकुओका डर रहता था। कुमके पास अेक छोटीसी नदी है। नदी तो काफी चौळी है किन्तु पानीकी धारा पतली है। घूमते हुअे कुछ होटलोंके साअिन-बोर्डकी ओर नज़र दौळाअी। अेक पर लिखा था—**"मुसाफ़िर-खाना नज़ाफ़त, अज़् आकायान् मुसाफिरीन बाकमाल-अेहतराम् पज़ीराअी मीशवद्।"**

जिस होटलमें हम ठहरे थे, अुसपर लिखा था—“**मुसाफिरखाना-अिक़्तिसार, बाकमाल-अेहतराम् अज़-आक़ायान् मुसाफरीन् पजीरा-अी मीशवद् ।**’

अेक **हम्माम** (स्नानागार)पर लिखा था—“**हम्माम नुम्रा अुम्के-जदीद अज़् आक़ायान् वारेदीन बाकमाल अेहतराम व नज़ाफ़त पजीरा-अी मीशवद् ।**”

अेक मोटर बसपर लिखा था—“**मुवस्ससा हम्ला व नक्ल जनूब-तेहरान**”

खुले बाज़ारमे बहुत मीठे **सर्दे** (अीरानी खरबूजे) बहुत सस्ते बिक रहे थे। हमारे यहाँके खरबूज़ोंसे भी सस्ते। आजकल अंगूरकी फसल न थी तो भी मीठे, लम्बे, सफेद अगूर टके सेर बिक रहे थे। तीन बजे तक हम कुममे ही रहे। फिर अस्फहानके लिअे नअी बस मिली। शहरसे बाहर फिर पासपोर्ट देखा गया। नदी पार होनेपर हमारी सळक दूर तक अेक नहर के किनारे चलती रही। मै सोच रहा था, ज़मीनके भीतर चलने-वाली नहरोके तटपर क्यों नही वृक्ष लगा दिअे जाते । लकड़ीका जैसा अभाव अिस देशमे है अुसको देखनेसे यह बळे लाभकी बात है। आगे रास्ता सुनसान वृक्ष-वनस्पति-शून्य मैदानोंमें से ही चलता रहा। दस पन्द्रह मीलपर बादामी रंग की मिट्टीकी छतों वाले गाँव पळते थे। कही कही सिगरेट या चाय पीनेके लिअे बस थोळी देर ठहर जाती थी।

दिनमें तो हमे कुछ नही मालूम हुआ, लेकिन सूर्यास्तके बाद यात्रा करते वक्त मालूम हुआ कि ओढ़नेका सामान तेहरानमें छोळकर हमने बळी ग़लती की। कमसे कम ओवरकोट तो ज़रूर रखना चाहिअे था। काफी ठंढक थी। आधी रात तक गाळी चलती रही। फिर अेक मुसाफिरखानेमें हम लोग आराम करनेके लिअे ठहर गअे। अीरानमें जहाँ ओढ़ना बिछौना तथा ठहरनेका अच्छा अिन्तजाम रहता है अुसे मेहमान-खाना कहते हैं। पुराने ढंगके पळाव या सरायको मुसाफिरखाना कहते है। यद्यपि सरकारकी तरफ-से बहुत रुकावट है तो भी हर अेक मुसाफिरखानेमें चन्डू पीनेका बाक़ायदा

अस्फ़हान—चहले सतून
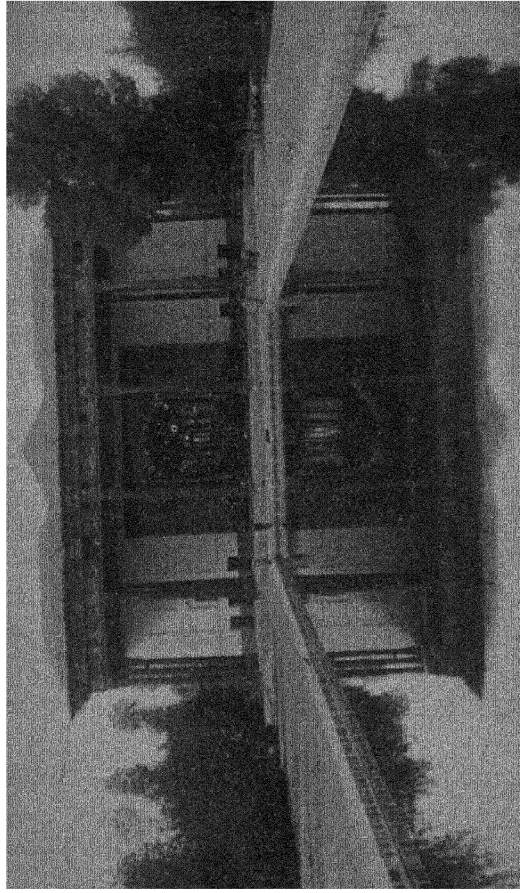
अिन्तज़ाम है। वहाँ ड्राअिवर लोग मज़ेसे अफीमका दम लगाते है। चंडू-का दम लगा कर चालीस मील घंटेकी चालसे अंधेरी रातमे अुस पहाळी मार्गपर ड्राअिवरोको मोटर दौळाते देख मेरे तो रोंगटे खळे हो जाते थे।

अिस्फहान——अिस्फहानके पास जानेपर हमे कुछ घने गाँव भी मिले। यहाँके खेत खूब हरे भरे थे। सर्दोसि लदे गदहे शहरकी ओर जा रहे थे। रास्तेमे पत्थरकी नीव वाली अेक सराय मिली। साथियोने बळे अभिमानके साथ कहा——अिसे अनवशेरवानने बनवाया था। नौ बजेके करीब हम अस्फ-हान पहुँचे। यहाँकी भी सळकें तेहरानकी तरह ही प्रशस्त और सीधी है। सळकोंके किनारे चिनारके वृक्ष लगाअे गअे है और किनारेके साथ साथ बहती पतली नहर छिळकावमे मदद देती है। अिन सळकोको चौळी और सीधी करनेके लिअे दर्जनो मसजिदे और हजारो कब्रे गिराअी गअी है। अीरानके शहरोमें टैक्सीके अलावे घोळा-गाळियाँ भी सैर करनेके लिअे मिलती है। घोळागाळीके लिअे रूसी भाषाका शब्द दुरुश्की अिस्तेमाल किया जाता है। मंचूरियामे भी अिसके लिअे यही शब्द है। गाळियोंका किराया बहुत सस्ता है। यद्यपि मोल-भाव करनेमें विदेशीको हमेशा ड्योढा सवाया देना पळ जाता है। तीन तूमानमे मैने पाँच घटेके लिअे अेक दुरुश्की किराअेपर की। गाळीवानका क़द छः फीटसे अधिक था। २४ वर्षके भूरे बालो, नीली आँखों और गुलाबी गौर वर्णवाले अुस तरुणको देखकर हिटलर भी अुसे "आर्य" जर्मनोमे शामिल होनेकी अनुमति दे देता।

पहले हम चहलेसतूनको देखने गअे। चहलेसतूनका मतलब चालीस खम्भा है लेकिन है वस्तुतः बीस ही खम्भे। सामने पानीसे भरा अेक बड़ा हौज है जिसमे परछाअी के बीस खम्भे और दिखाअी देते है और अिस प्रकार अिस अिमारतका नाम चालीस खम्भा पड़ गया। खम्भे लकळीके है। छतपर बहुतसे चित्र बने हुअे है जो कलाकी दृष्टिसे अच्छे है। चारों ओर अेक सुन्दर बाग़ है। बागमें कुछ पत्थरकी मूर्तियाँ भी रखी हुअी है।

अस्फहान चिरकालतक अीरानकी राजधानी रहा है और अुस समय-

की बनी हुओी ओीमारतें यहाँपर अब भी मौजूद है। राजधानीका सौभाग्य तेहरानके हाथमे जानेसे अब यहाँकी वह श्री नही रही तो भी यहाँ कुछ कपळे-की मिलें और कारखाने बन गओे है और आगे और भी बननेकी सम्भावना है। अिस तरह अस्फहानका भविष्य सर्वथा अंधकारमय नही है। आगे हम मैदान-शाहमे गओे। ओेक लम्बा मैदान है, लेकिन बहुत चौळा नही है। अिसकी चारों तरफ पुरानी अिमारतें है। शाह पहलवी भी मैदान-शाहको अच्छी हालतमें देखना चहते है। अिसीलिओे टूटी फूटी अिमारतोंके मरम्मतका काम जारी है। दक्षिणकी ओर मसजिदे-शाहकी भव्य अिमारत की मरम्मत हो रही है। पूर्वमे मस्जिदे-शाह-लुत्फुल्ला—अुत्तर तरफ सरया। जिस वक्त हम मैदानमें थे अुस वक्त स्कूलके छात्रोंकी टोली आ पहुँची। सबकी पोशाक ओेक सी थी। स्कूलके छात्रोंकी ओेक तरहकी पोशाक रखनेका ख्याल जापानमें भी है और यूरोपके बहुतसे देशोंमे भी। भारतमें ओैसा किया जा सकता है। ओेक तरहकी पोशाकका यह मतलब नही कि वह बहुमूल्य कपळोंकी बनाओी जायँ। हिन्दुस्तानमें ओैसी पोशाकके लिओे १० या १५ रुपओे सालसे काम चल जायगा। ओेक मेहदी लगी दाढ़ीपर हैट देखकर मुझे बळा आश्चर्य हुआ; लेकिन आश्चर्यकी ज़रूरत क्या? शाही हुक्म है कि सारी ओीरानी जाति हैट पहने। हैट न पहननेवालोंको जेलकी हवा खानी पळती है। फिर बिचारी मेहदीवाली दाढ़ी क्या करे? हाँ, मौलवियोंके लिओे पगळी और काला चोंगा पहननेका लाअिसेंस मिल सकता है; लेकिन अुस लाअिसेंसके मिलनेमें हिन्दुस्तानमें बन्दूकके लाअिसेंससे भी ज्यादा कठिनाओी है। अिस चोंगाके पहिरनेमें ओेक और भी दिक्कत है। तरुण ओीरान अरबको अपनी सभ्यता और स्वतन्त्रताका बळा दुश्मन समझता है। अुसको मुल्लाओंके चोंगा और दस्तारमें अरबीपनकी गंध आती है और अिसीलिओे अुसे अच्छी निगाहसे देखना पसन्द नहीं करता। तेहरानकी तीन लाखकी जनसंख्यामें सौ दो सौ पगळी और काले चोगोंवाले लोग देखनेमें चिळियाखानेके जानवर जैसे मालूम होते हैं।

दूसरी जगह हारून-वलायत थी, जिसे हम देखने गअे। हातेमें हज़रत हारून (ज़ाफ़रके पौत्र, मूसाके पुत्र)की कब्र है। बहुतसी गलियोमें होते हम मस्जिद-अलीमें पहुँचे। मस्जिदकी हालत अच्छी नही है और न मरम्मत करनेका विशेष प्रयत्न है। अस्फहानकी मस्जिदे-जामा अेक बड़े लम्बे चौळे हातेवाली अिमारत है। बीचमें पानीसे भरा हौज है। पुरानी अिमारतमें मरम्मतका काम जारी है। सर आग़ा अखुनके मक़बरेमें श्रद्धालुओकी बळी भीळ रहती है। वैसे जगह छोटीसी है किन्तु पुत्रार्थीको पुत्र, धनार्थीको धन आदि सभी अिच्छाओकी पूर्ति होनेसे यहाँ पूजकोंका अधिक जमघट होना स्वाभाविक ही है। मकबरा-अिमामजादा-अिस्माअिलकी दीवारोंपर कितनी ही तस्वीरे बनी हुअी है। स्थान अच्छी हालतमें नही है। जिस वक्त मै वहाँपर था अुसी वक्त अेक नौजवान भी वहाँ आया; और हैट अुतारकर सर झुका मुँहमें कुछ बोल रहा था। यह बतला रहा था कि, सभी हैटवाले अिस्लामकी अुपेक्षा करनेवाले नही हैं। गलियोंमें मैंने कुछ देहाती औरतोको देखा। पोशाक और शरीरमें वह पंजाबी औरतोंसे मिलती-जुलती मालूम होती थी। आज ही शामको हमको शीराजके लिये रवाना होना था। कोचवानने बताया था, मोटर शामको मिलती है; अिसलिये हम निश्चिन्त होकर घूम रहे थे। हम कुछ फोटो लेनेके लिये अेक फोटोग्राफरकी दूकानमें गये। अुक्त सज्जन आर्मेनियन थे और कलकत्तेमें वर्षो रह चुके थे; अिसलिये अंग्रेजी और थोळी हिन्दी भी जानते थे। अुनसे मालूम हुआ कि, हिन्दुस्तानमें रहनेवाले आर्मेनियनोंमेंसे अधिकतर अीरानके रहनेवाले है; और, अुनमें भी ज्यादा अस्फहानके मुहल्ला जुल्फाके रहनेवाले हैं। अुनके यहाँसे पर्सेपोलिस् (तख्ते-जमशीद) तथा दूसरे अीरानके प्राचीन अितिहास-सम्बन्धी चित्र खरीदे। आर्मेनियन स्त्रियाँ अीरानमें भी पहलेसे ही पर्दा नही करतीं; और, बाल कटे यूरोपियन पोशाकमें अुन्हें देखकर कितनोंहीको यूरोपियनका भ्रम हो सकता है यदि रंग काफी गोरा हो। आर्मेनियन सज्जनका कहना था कि, अीरानी

मुझे तो कितनी ही जगह अिसके कारण प्यासा रह जाना पळता था। आँखके ओझल चाहे वह सौ आदमियोंका जूठा पानी लाकर क्यों न दे दे अुसे पी जाता था; पर आँखसे देखकर मक्खी निगलना सचमुच ही मुश्किल था। मुमकिन है तिब्बतकी तरह यहाँ भी मनको समझाया जा सकता था यदि अधिक समय तक रहनेका मौका होता; लेकिन प्यास मारनेका काम सर्दा अच्छी तरह कर रहा था, वह भूख और प्यास दोनोकी दवा थी। सर्देका बीचका हिस्सा ही मीठा होता है; अिसलिये छिलकेके पासका अेक-अेक अंगुल मोटा भाग छोळ दिया जाता है। अुस दोपहरके समय शीतल और मिश्री जैसे मीठे सर्देको खाते समय परियोकी याद आनी जरूरी थी। वस्तुतः अुस हरे बाग, बहती नहर, शीतल छाया और सुस्वादु फलको चखकर मेरा खयाल कुरानमे वर्णित बहिश्तकी ओर गया। बहिश्त और हूरोंका घनिष्ट सम्बन्ध है। फिर अीरानके सम्बन्धसे विचार-धारा परियोंकी ओर झुक गअी। मैंने अस्गरसे कहा—"आगा अस्गर! मैंने बचपनमे कितनी ही अीरानी कहानियाँ पढ़ी थी। हातिमताअीमें माज़न्दराँ, अुसके हरे-भरे जंगलों और सौन्दर्यकी प्रतिमूर्ति परियोका बहुत वर्णन आता है। कोहकाफ़ तो खास परियोंकी भूमि है। अब भी वहाँ परियाँ जरूर रहती होंगी।" अस्गर और घरवाले सज्जन बळी कोशिशके साथ हमे समझा रहे थे—"वह सिर्फ किस्सेकी बात है। परियाँ न पहले थी न अब है।" मैंने कहा—"न, पहले थी—"यह आप कैसे कह सकते है? मेरी समझमें तो अब भी माज़न्दरामें अच्छी तरह तलाश करनेपर परियाँ मिल जायँगी। सम्भव है आदमियोके अधिक आवागमनसे वह घने जंगलोंमे चली गअी हों या कोहकाफ़की ओर बढ़ गअी हों। कोहकाफ़में आजकल साम्यवादियोंका बोलबाला है; लेकिन वह भी तो बारहों मास हिमसे आच्छादित रहनेवाले अुसके सभी पर्वत-शृंगों तक नहीं पहुँच सके हैं। परियाँ ज़रूर वहाँ होंगी। अुन्हें वहाँसे कोअी नहीं भगा सकता। क्या जाने आज भी जब शाम होती है अेक भिश्ती आकर

वहाँ छिळकाव करता होगा, झाळूवाला झाळू देता होगा, फ़र्राश फर्श बिछा देता होगा फिर राजा अिन्दरका सिंहासन और अुसके पासमें दरबारियोंका आसन रखा दिया जाता होगा और फिर सब्ज़, नीले, हरे, पीले वस्त्रों और अलंकारोंसे सुसज्जित त्रिभुवन-सुन्दरी परियाँ अपने नृत्य और गानसे रात भर अपने मालिक अिन्दरको सन्तुष्ट करती होंगी।" मेरे दोस्तोंने कहा—"अिस तरहके जलसेके लिये कोहकाफ जानेकी क्या ज़रूरत है? ईरानी बादशाहोंके ज़मानेमें वर्तमान शाहके आनेसे पहले अभी हाल तक अिस तरहके जलसे महलोंमें बराबर हुआ करते थे।" जान बचानेके लिये मैंने अुस समय कह दिया—"तो शायद वह परियाँ यही गुलाबी मुखवाली ईरानी सुन्दरियाँ ही होंगी।"

भोजनोपरान्त हम मीनार-जुम्बाँ देखने गये। अेक छोटी-सी मस्जिद है, जिसके नीचे अबू-अब्दुल्ला (महमूदके पुत्र)की समाधि है। अिसके दो मीनार हैं। छतपर जाकर आदमीने मीनारको हिलाया। सचमुच ही दोनों मीनार धीरेसे हिलने लगे। ईटके ये मीनार कैसे हिलते हैं और हिलनेपर भी ये शताब्दियोंसे कैसे वैसेके वैसे खळे हैं, यह बळी विचित्र सी बात है। पश्चिमी लोगोंने भी अिसपर बहुत माथा-पच्ची की है; किन्तु अभी तक अिसका रहस्य खुल नही सका। क्या जानें यहाँके मुल्लाका ही कहना ठीक हो। वह कहते है, ये शाह अबू अब्दुल्लाकी तपस्याका चमत्कार है।

यहाँसे कुछ दूरपर कुह-आतिशगाह है। आतिशगाह अेक छोटी-सी पहाळी है। महात्मा जरथुस्त्रसे शताब्दियों पहले यहाँ मंगलका देवालय था। यह अपने समयके सात महान् मन्दिरोंमेंसे अेक था। पीछे जरथुस्त्रके धर्मके फैलनेके बाद वही मन्दिर अग्नि-मन्दिरके रूपमें परिणत कर दिया गया, अिसकी अग्नि निरन्तर सातवी शताब्दी तक जलती रही। सातवीं सदीमें ईरानके अरबोंके हाथमें चले जानेके बाद भी अेक शताब्दी तक जलती रही, बुझी नही और तबतक पारसी धर्मका यह पहाळ अेक पवित्र
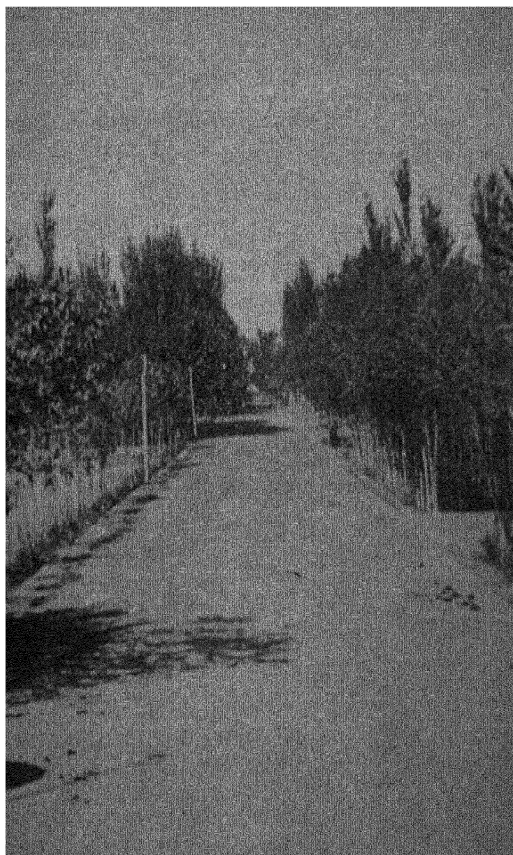
अस्फहान—बहार बाग़

तीर्थ समझा जाता। आज अुस नंगी पहाळीपर अुसकी कुछ दीवारें ही रह गअी हैं।

अस्फहानके भीतरके स्थानोंको देखकर हम शहरसे बाहर निकले। अस्फहान अेक विशाल पहाळी मैदानमें बसा हुआ है। अिसके चारों तरफ़ छोटे-छोटे नंगे पहाळ अिनपर वनस्पतिका नाम नही। शायद बरसातमें तिब्बतकी तरह यहाँ भी छोटी-छोटी घास जम जाती हो और अुस वक्त आँखोंको हरियाली देखनेका आनन्द मिलता हो। बाहरसे देखनेमे अस्फहान सचमुच बागोंका शहर मालूम होता है। अिसकी सळकोंपर सफेदों और चिनारकी पंक्तियाँ लगी हुअी हैं, जो नगरके सौन्दर्यको बढ़ानेके साथ-साथ अपनी शीतल छायासे भी पथिकोंका अुपकार करती हैं। शहरके बाहर चारों ओर मीलों मेवेके हरे-हरे बाग है। शहरके भीतर मस्जिदों, दरगाहोके नीले खपळैलोसे ढके सैकळों गुम्बज दूरसे देखनेमें बहुत सुन्दर मालूम होते है। नगरके बाहर अब कितने ही कारखानोंकी अूँची चिमनियाँ खळी हो गअी है, जो बतला रही है कि, नव-अीरान नवीन युगके लिये तैयार है। नगरसे कुछ मीलपर कुह-सुपेद (श्वेत पर्वत) पहाळ हैं। अिसीके पाससे शीराजका रास्ता गया है। जाळेमें यहाँ कुछ बर्फ़ पळ जाया करती है। बरसातमें हरियालीसे कुछ रौनक भी ज़रूर आ जाती होगी। अिसके पासमें कुछ आर्मेनियन लोगोंके घर है। किसी वक्त अस्फहान बहुत दूरतक फैला था। अब भी अुस वक्त की कुछ दीवारें खळी है।

हम लोग फिर शहरको लौटे। जायन्दे-रूदके पुलको पार करते ही सामने वृक्षोंके बीच चाहारबाग़ सळक दिखायी पळी। सळकपर पहुँच गअे। अस्फहानकी यह अेक बळी सुन्दर सळक है और सळकका नाम ही चाहार-बाग़ रख दिया गया है। बग़लमें मद्रसे-शाह है। यह अस्फहानकी सुन्दरतम अिमारतोमेंसे है। दरवाज़ेपर संगमर्मरका काम है। भीतर अेक लम्बा-चौळा आँगन है, जिसमें साफ़ पानीका अेक बळा हौज़ और कितने ही विशाल वृक्ष खळे हैं। अिसी आँगनके चारों ओर विद्यार्थियों और अध्यापकोंके रहने

और पढ़नेका स्थान है। नीली भूमिपर संगमर्मरके सुफेद शिला-लेख, रंग-बिरंगकी पच्चीकारी और सुन्दर बेलबूटेके काम, गगनचुम्बी मीनार और अुनके सुन्दर गुम्बज बळे ही मनोहर मालूम होते है।

जुल्फा अस्फहानका अेक महल्ला है, जो नदीके दूसरे तटपर बसा हुआ है। ९ हज़ारकी बस्ती, सभी आर्मनियन लोगोकी है। अीरानकी सीमापर आर्मेनिया देशमें जुल्फा नामका अेक नगर भी है, अिसका अधिक भाग सोवियत-सीमाके भीतर है और कुछ अीरानकी सीमाके भीतर भी। आर्मेनियन लोगोने अपने अिस महल्लेका नाम भी जुल्फा रखा है। अस्फहानसे अिसके आदमियो, मकानो और बळे-बळे कलीसिया (गिर्जों) को देखनेसे भिन्नता मालूम होती है। असली जुल्फाको तो मैंने नही देखा है; किन्तु जान पळता है, अस्फहानमें आर्मेनियाके किसी नगरका अेक टुकळा लाकर रख दया गया है। आर्मेनियन लोग अीसाअी धर्मके माननेवाले है। अिनका चर्च अीसाअी धर्मके बहुत पुराने सम्प्रदायसे सम्बन्ध रखता है। अिनकी जाति आर्य-भाषा-भाषी जातियोकी अेक बहुत पुरानी शाखा है। यहूदियोकी तरह आर्मेनियन भी शताब्दियोसे अपनी राष्ट्रीय स्वतन्त्रता खो बैठे है, लेकिन दोनोमें अेक फर्क अवश्य है। जहाँ यहूदी अपने जन्म-देश फीलस्तीनको छोळकर दुनियाके भिन्न भिन्न देशोमें बिखर गये है और कुछ वर्षोसे ही फीलस्तीनपर अपना राष्ट्रीय भवन बनानेके प्रयत्नमें है; वहाँ आर्मेनिया देश बराबर आर्मेनियन रहा। आर्मेनियाका कुछ भाग तुर्कीमें, कुछ भाग अीरानमें, और बहुत अधिक भाग सोवियत प्रजातन्त्रके भीतर है। अिस्लामी शक्तियोंने आर्मेनियन लोगोंपर तरह-तरहके अत्याचार किये है। लळाअीके अन्तमें तुर्कीने जैसे जुल्मके पहाळ उनपर ढाहे थे, अुनकी कथा अुस वक्त हमने अखबारोमें पढ़ी थी; लेकिन ज़ारके शासनके अन्त होनेपर जबसे रूसमें प्रजातन्त्र स्थापित हुआ, तबसे आर्मेनियाके भाग्यने भी पलटा खाया है। साम्यवादी सोवियत प्रजातन्त्र संघके भीतर आर्मेनियाका अपना प्रजातन्त्र है। आर्मेनियन संस्कृति और
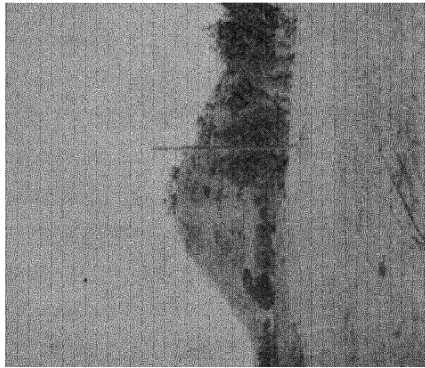
अस्फहान कोह—आतशगाह
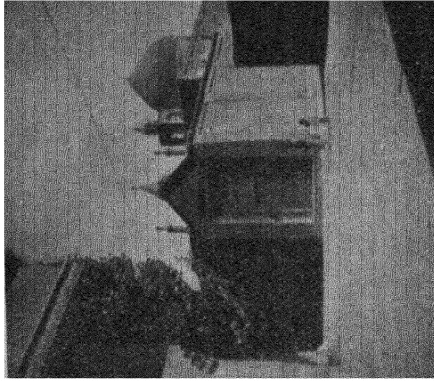
अस्फहान—कलीसिया (जुल्फा)

आर्मेनियन भाषाका वहाँ सर्वाधिक मान्य है। अुनकी भाषामें हज़ारों पुस्तकें, कितने दैनिक और मासिक पत्र निकल रहे है। बाकूमें रहते मैंने दो आर्मेनियन बोलते-चित्रपट देखे थे। सोवियतकी अपार सम्पत्ति जिसकी पीठपर हो, अुस चित्रपटकी सुन्दरताके बारेमे क्या कहना है। आर्मेनियन प्रजातन्त्रने सिर्फ़ अपने भीतर रहनेवाले पहलेके वाशिन्दोका ही अुपकार नही किया है; बल्कि ओरान और तुर्कीमे रहनेवाले आर्मेनियन भी लाखोकी संख्यामे वहाँ पहुँच कर आनन्द और गौरवके साथ जीवन बिता रहे हैं।

ओरानमें रहनेवाले मुट्ठी भर पारसी और आर्मेनियन पहले भी अपनी स्त्रियोको परदेमे नही रखते थे और आज जबकि, सारा ओरानी स्त्री-समाज ही अुसे देश-निकाला दे चुका है, तो अुसके बारेमें विशेष क्या कहना। हाँ, अुस वक्त (१९३५ ओ०) ओरानी स्त्रियोने सारी पोशाकके यूरोपियन रहते हुए भी सिरकी काली ओढ़नीको नही छोळा था, इसलिये बालकटे पश्चिमी भेषमे मुँह खोले खुली घूमती आर्मनी रमणियोको देखनेपर विशेषता ज़रूर मालूम होती थी। मै कओ गिरजों (कलीसिया) में गया। अुनके भीतर पाश्चात्यकी अपेक्षा पूर्वी कलाका वायुमण्डल अधिक है; और कुछ मूर्तियाँ तो बौद्ध मन्दिरोंका स्मरण दिलाती थी। किसी समय, आर्मनी जातिका पश्चिमी वेश-भूषाकी ओर अधिक झुकाव ओरानी लोगोंके दिलोमे घृणा पैदा करनेका कारण बना होगा। अुन पूर्वजोंको क्या पता था कि, अुनकी सन्तान अिन्ही घृणास्पद आर्मेनियनोंका आगे चलकर अनुसरण करेगी। यहाँका सबसे बळा कलीसिया शाह-अब्बासके समयमे सोलहवी शताब्दीमे बना था। यह कितने ही सुन्दर चित्रोसे अलंकृत है। जुल्फाकी अंगूरी शराब सारे ओरानमें मशहूर है।

४—शीराज़को

अस्फहानसे शीराज़ तक कितनी ही कम्पनियाँ अपनी मोटरें चलाती हैं। मोटरके पुर्ज़ोको बेचनेका कारबार बहुत-सा हमारे पंजाबी भाअियोके हाथमें है; लेकिन अुनसे मिलनेके खयालको लौटते वक्तके लिये छोळकर हमने शामको शीराजके लिये प्रस्थान करनेका निश्चय कर लिया था। खैयाम कम्पनीने २८ रियाल या ४।।।) में शीराजका टिकट दे दिया। ४९३ किलोमिटर (३०० मीलसे अूपर)के लिये यह किराया अधिक तो नही है। ४ बजे मोटर छूटनेवाली थी; लेकिन अुसके लिये हमें आठ बजे रात तक अिन्तजार करना पळा। अेक मुसाफिर तो दो दिनसे टिकट कटाये बैठा था; लेकिन भीळके मारे मोटरबसमें अुसे जगह नही मिलती थी। हमसे किराया पहले ५० रियाल कहा गया और मोल-भाव करते-करते २८ रियालपर तै हुआ। हमारी बस मुसाफिरोसे ठसाठस भरी हुअी थी। अितनी लम्बी यात्राके लिये यह बहुत कष्टकर बात थी; लेकिन चारा ही क्या था? टैक्सी करनेमें किराया चौगुना हो जाता; और, सो भी और मिलने पर।

हमारे सहयात्रियोंमें अली अस्गर शीराजी और शहरयार यज़्दी भी थे। पहले सज्जन अिराकसे आ रहे थे और अंगरेजी जानते थे। शहरयार अुन थोळेसे अीरानियोमें है, जिन्होंने अीरानमें जरथुस्त्रके धर्मदीपको बुझने नहीं दिया। वह बम्बअीमें वर्षो रह चुके है और हिन्दी तथा गुजराती समझ सकते हैं। अिन दोनोंके कारण शीराज तककी यात्रा बळे मजेमें कटी। अुस रातको भी चण्डूका दम लगाकर बेतहाशा मोटर छोड़ते ड्राअिवरको देखकर जी कॉप रहा था। हमारे सामने अेक और भी कठिनाअी थी और वह थी कपड़ोंकी। अपने कपळेको तेहरानमें छोळ आनेके कारण, सर्दी हमारी गत बना रही थी। रातको आधी रातके बाद हम लोग अेक जगह

विश्राम करनेके लिअे ठहर गये।

चाय-पानी करके आठ बजे (१८ सितम्बरको) हम फिर रवाना हुये। रास्ता पहाळी है, तो भी चढ़ाअी-अुतराअीमें अुतनी कठिनाअी नही है। वृक्ष और हरियाली सिर्फ गॉवोमें देख पळती थी। दोपहरको भोजनके लिये ठहरे। गोश्त-रोटी, बिना दूधकी चाय और अँगूरका डट कर भोजन हुआ। दो आदमियोपर सिर्फ पाँच आना ख़र्च आया। हिन्दुस्तानमें अुसपर डेढ़ रुपयेसे क्या कम खर्च पळता। अीरानमें चावल खानेका बळा रिवाज़ है; लेकिन अीरानमें चावल गीलान और माजन्दरान जैसे समुद्री तटोंपर ही होता है। चावलको विरंज कहा जाता है, जो संस्कृत व्रीहि शब्दसे मिलता जुलता है। सळकपर हर जगह १०-१०, १२-१२ मीलपर पथ-रक्षक अर्मानिया सैनिकोंकी चौकी थी। अिन नीली वर्दी वाले जवानोके अुपकारको अब लोग भूलसे गये हैं। अुनको क्या मालूम है कि, शाह पहलवीके यही नीले सैनिक हैं, जिनके प्रतापसे हमारी मोटरें रात-दिन सनसना रही हैं। हमारी गाळीमें अेक पलटनके हवलदार साहब भी थे। वे अपनी विशेषता-को अच्छी तरह अनुभव करते थे। अुनकी तेवरी हमेशा चढ़ी और गर्दन तनी रहती थी। वह सर्व साधारणसे अपनेको अलग रखनेकी कोशिश करते थे। हमारी गाळीमें ९ औरतें भी थी। ये सभी देहातकी थीं और अिनमें बुर्काका खयाल कुछ अधिक था।

मोटर-लारियोंमें अेक चीज़की बळी तकलीफ थी, वह थी रास्ते भर धूल फाँकना और कपळोंपर अंगुल-अंगुल भर धूल जमा हो जाना।

पर्सेपोलीस—हम दाराकी राजधानीके नजदीक पहुँचते जा रहे थे। लोगोंने बतलाया तख्ते-जमशीद (पर्सेपोलीस) आ रहा है। अेक छोटेसे डाडेको पार होते ही पहाळ दूर-दूर भागने लगे और बीचकी भूमि विस्तृत होने लगी। दाअी ओर दूरके पहाळोंमें कुछ पुरानी अिमारतोंके चिह्न मालूम होते थे। लोग अिसे नख्से-रुस्तम कह रहे थे। चार बजे

हम तख्ते-जमशीदके किनारे पहुँचे। पासमें सळकपरही अेक छोटा-सा गाँव है। महान् दारयोशकी राजधानीके खँडहर बाअी तरफ थोळा हट करके है। २३०० वर्ष हुए जब सिकन्दरने पर्सेपोलीसको बर्बाद किया। अुसीके साथ-साथ अुसने अीरानके भी भविष्यको, अपनी समझमें, कुचल दिया था; किन्तु दो ही शताब्दियों बाद अीरान फिर अुठ खळा हुआ। हाँ, पर्सेपोलीसको अपना पुराना गौरव प्राप्त करनेका सौभाग्य फिर प्राप्त नही हुआ। शताब्दियोतक दारयोश और कोरोश जैसे प्रतापी सम्राटो की राजधानी होनेसे यह अीरानी राष्ट्रीयताकी तीर्थ रही; लेकिन सातवी शताब्दीमे, जब अीरानकी स्वतन्त्रता और संस्कृति दोनों अरबों द्वारा तबाह कर दी गयी तबसे तेरह शताब्दियोतक तो वह बिलकुल अुजाळ और अुपेक्षित रही। बग़दादके खलीफोंके समय अेक मरतबे यह भी प्रस्ताव हुआ था कि अुसके विशाल स्तम्भो, सुदृढ़ पाषाणोंको ले जाकर कोअी मसजिद या महल बनवाया जाये। अैसा होनेमे कोअी देर भी नही थी। तब वर्तमान अीरानी जातिको अपना यह सर्वोत्तम तीर्थ हमेशाके लिये खो देना पळता। अीरानी जाति बरामकाकी बळी कृतज्ञ है और वह बड़े गर्वसे कहती है कि अगर खलीफाके दरबारमे यह अीरान-वंशी महामन्त्री नही होता, तो पर्सेपोलीसका स्मरणीय ध्वश सर्वदाके लिये लुप्त हो जाता। बरामकाने जब अपने जातीय चिह्नके मिटानेका यह प्रस्ताव सुना तो अुसने खलीफासे बात बना दी—"हुजूर, जहाँपनाह तख्त-जमशीद वह जगह है जहाँ हजरते अली रजी अल्लाहो अन्हुने नमाज अदाकी थी।" अिस प्रकार पर्सेपोलीसके भव्य ध्वंसावशेष जालिम मानवी हाथोंसे बच गये। नवीन अीरानके तरुणोंमे पहाळीकी जळमें सूखे मैदानके पास अुपस्थित पर्सेपोलीस रूह फूँक देती है। अिसके विशाल पाषाण-स्तम्भोंकी छायामें खळा होते ही अीरानी बच्चा आजकी अपनी अवनत अवस्थाको भूल जाता है। अुसकी बेबशी काफूर हो जाती है और वह ख्याल करने लगता है—जिन्होंने अिन स्तम्भोंको बनाया, जिन्होंने अिन विशाल शिलाओंकी दीवारोंको चुना, वे कौन थे? अीरानी;

जिनकी विजय-ध्वजा सिन्धु-तटसे यूनानतक, अबीसीनियासे पामीरतक फैली हुअी थी। अुससे पहले दुनियामे अितना बड़ा, साम्राज्य स्थापित नही हो सका था। अिस तरहके विस्तृत साम्राज्योके संचालनकी विद्या अुन्होने दुनियाको पढ़ाई। अुन्होने बलखसे मंफी और अेथेन्ससे तक्षशिलातक सुरक्षित राज-पथों और डाकका अिन्तजाम किया था। दुश्मनतक अुनके बारेमे कहते थे--ओरानी जाति झूठ बोलना नही जानती, मिथ्या भाषण अुसके कोषमे नही है। वह मृत्युजय है। इन भव्य चित्रोके सामने आते ही ओरानी तरुणका दिल फळक अुठता है—हम कहाँसे कहाँ पहुँच गये? कहाँ हम दुनियाके शासक, शिक्षक और सभ्यताप्रचारक थे और कहाँ हमने अपना सब कुछ गँवाकर अुसके बदलेमे अरबकी रेगिस्तानकी रेत मोल ली! ये भाव पैदा होते ही नादिरशाह और शाह अब्बास अुसकी नजरोसे हटने लगते है। वह सीधा अखामनशी और सासानी बहादुरोकी ओर जाता है। वह शुद्ध ओरानी, सोलहो आने ओरानकी पवित्र भूमि, ओरानकी प्रतापी सभ्यता और संस्कृतिमें पले वीरोंको अपना यथार्थ पूर्वज मानता है। वह कह अुठता है—"ओरान जिन्दाबाद, दारयोश बुजुर्ग जिन्दाबाद, कोरोश कबीर पायन्दाबाद।" वह अर्देशीरके रोमक-विजयपर फूला नही समाता। शाहपूर ओरानके समुद्रगुप्तको रोमन सम्राटके पकळनेपर अुसका दिल बल्लियों अुछलने लगता है; और फिर अनवशिरवानकी विश्वप्रसिद्ध न्याय-प्रियताकी तारीफ सुन हृदय स्वाभिमानसे भर जाता है। अपने अन्तिम बहादुर खुश्रो परवेजको रोम साम्राज्यपर चढ़ाअी करते, अपने प्रतिद्वन्दियोके पवित्र सलीव—जिसपर ओसा मसीहको फाँसी दी गअी थी—को छीनकर ओरान लाते देख अेक बार फिर वह स्वागतके लिये आगे बढ़ता है, अेक बार फिर हृदयोद्गार प्रकट करता है। किन्तु यह जानकर अुसके हृदय में तीखा तीर चुभने लगता है कि सन् ६५२ ओ० ओरानकी वीरताका अन्तिम साल है। तो भी जब अुसका अन्तिम शाहानुशाह यज़्द-गिर्द अपनी बिखरी शक्तिको अेकत्रितकर अुमरके असभ्य अरब सवारों-

का मुकाबिला करने निकलता है, तो अुसकी सारी सहानुभूति, अुसकी सारी शुभकामना यज्दगिर्दके साथ जाती है। वह भूल जाता है कि अुसका धर्म अुन्ही अरबके बर्बर विजेताओंकी देन है। अेक मरतबे वह अपने अुन बुजुर्गोंको धिक्कारने लगता है। पराजित होना था पराजित भले ही हो जाते; लेकिन अरबोंके हाथ औरानके सर्वस्वको बेंच देनेका अुन्हें क्या अधिकार था? जिस यज्द और अहुर मज्दने अुसे दारा और नवशेरवाँ दिये अुसे छोळकर अल्लाहको अुन्होंने क्यों अपनाया? शुद्ध और मधुर औरानी भाषा (पहलवी) में हजारों कर्ण-कटु और नीरस अरबी शब्दोंको भरकर क्यों अुसे गन्दा किया? अुसे अिन सभी बातोंमें अपने देशके प्रति किये गये विश्वासघातकी गंध आती है। वह समझता है, यज्दगिर्दके पतनके साथ औरान अन्तर्धान हो जाता है। पिछली तेरह शताब्दियाँ अुसके लिये कोअी अर्थ नही रखती। वह दासता, अपमान, वंचनाकी अँधेरी रातें है। असका औरान शाह पहलवीके साथ फिर प्रकट होता है। वह फिर अेक बार अपने **प्रतापी शाहकी** हाँमें हाँ **मिलाते औरानको दाराका औरान बनाना चाहता है। गुस्तास्पका औरान बनाना** चाहता है **जर्तुस्त** और **अहुर्मज्दको** फिर ख्यालमें लाने लगता है।

जिस पर्सेपुलीसको अेक नज़र देखते ही औरानी संतान अैसी भावनाओसे भर जाती है अुसका सन्मान वर्त्तमान औरानी राष्ट्रीयतामें कितना होगा यह अनुमान करना कठिन नही है। १९३२ अी०की खुदाअीमें **तख्ते-जमशीदसे** दो सोनेके लेखपट्ट मिले हैं। यह महान् सम्राट् शाहन्शाह भूपति दारयोशके अभिलेख हैं। औरानी लोग असका अर्थ लगाते हैं कि बीचकी तेरह शताब्दियोंमें किसीको यह पट्टियाँ न मिलकर शाह पहलवीके समय जो मिली हैं; अुसका खास मतलब है। वह बतला रही हैं कि तेरह शताब्दियों बाद शाह रज़ाही अैसे शासक पैदा हुये हैं जो यथार्थमें पुराने औरानके उत्तराधिकारी हैं। दारयोशनामाके नामसे अिन पट्टियोंके सम्बन्धमें औरानके चोटीके कवियोंने कवितायें की हैं। अेक
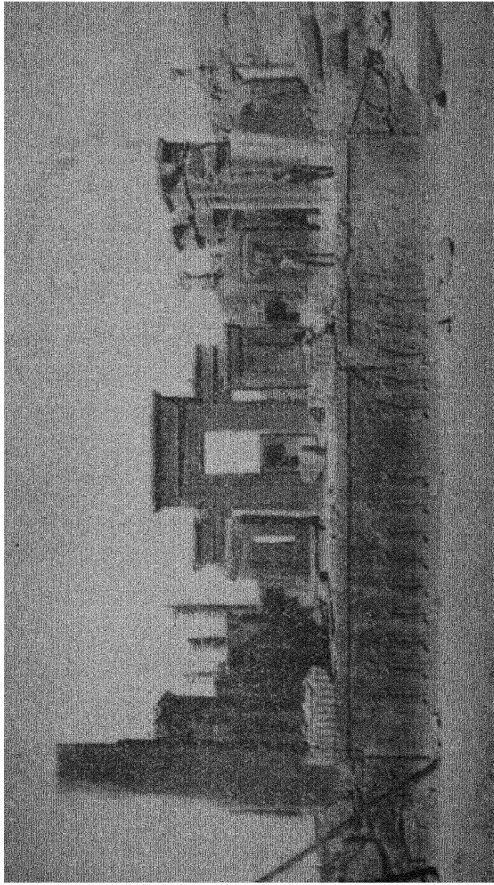
तख़्ते जमशीद (पर्से पोलीस)

कवि कहता है—

बस् ख़राबीहा कि दीदीं मुल्क अजबेगानगाँ।
आँचुनाँ कर् चार जानिब् ओफ़्ताद्-अन्दर् फ़शार्॥
अेक आख़िर काख़् अिस्तक़्लाल औरीराँ न सोख़्त।
आतिश्-अस्कन्दर् व अेराब वो अफ़्गाँ वो ततार्॥

तख़्ते-जमशीदके सामने यद्यपि मीलों लम्बा मैदान है लेकिन अुस सूखी जनशून्य भूमिको देखकर ख्याल होता था—तीन महाद्वीपोंमें फैले अुस महान साम्राज्यकी जब पर्सेपोलीस राजधानी रही होगी, क्या तब भी यह मैदान अैसा ही वीरान रहा होगा। औरानी सरकार अेक बळे लम्बे-चौळे टुकळेको साफ़ करवा रही है। शायद अुसका अिरादा बाग़ या दूसरा स्मारक बनवानेका है। कहने सुननेपर ड्राअिवरने कुछ मिनटके लिये बस खळी की। हमने भी अेक दृष्टिसे अुस ओर देखा और पुराने औरानकी स्मृतिमें सादर शिर झुका फिर यात्रा आरम्भ की।

शीराज—चिराग़ जलते हम अुस डाँडेपर पहुँचे जिससे अुतरते ही शीराज नगर आता है। सादी, हाफिज जैसे कितने ही कवियों और सन्त-महात्माओंकी जन्मभूमि होनेसे शीराज अेक तीर्थ समझा जाता है। नगरके गुम्बजोंके सामने आते ही कुछ बूढ़े यात्रियोंने अल्लाहो-अकबर कर हर्षोल्लास प्रकट किया। पुलीसकी चौकीपर सबका जावाज़ और पासपोर्ट देखा गया। नगरमें पहुँचते ही फिकर पळी ठरहनेकी जगह तलाश करनेकी। अेक साथीने मेहमान-खाना-औरानका नाम बतलाया। आर्क (किला)के समीप प्रधान सळकपर यह होटल अवस्थित है। संचालक कभी बम्बअीमें भी रहे हैं अिसलिये हिन्दुस्तानी बातें अुन्हें कुछ मालूम हैं। अुन्होंने अेक अच्छा साफ़ कमरा दिखलाया जिसमें कुर्सी, मेज़, पलंग, विस्तर सभी चीज़ें साफ़ और कायदेके साथ रखी हुअी थीं। बिजलीकी रोशनी थी। नहानेका अलग अिन्तज़ाम था। किराया पूछनेपर पाँच रियाल (साढ़े बारह आना) प्रति दिन कोठरीका और स्नानका हरबार पाँच पैसा।

कहनेपर संचालकने चार रियाल लेना स्वीकार किया; किन्तु अिन्तिज़ाम अितना अच्छा और अितना सस्ता मालूम हुआ कि हमने पाँच रियालके दरहीसे अपना हिसाब चुकाया। अैसी कोठरी यूरोपके किसी होटलमें लेनी होती तो पाँच रुपयेसे कम देना नही पड़ता। खानेका खर्च अलग था। वह भी चार पाँच आने प्रति बार से अधिक नही पळता था। ओरानमें झूठ-साँच बहुत चलती है किन्तु मेहमानखाना-ओरानकी नीली आँखोंवाले प्रौढ़ वयस्क प्रबन्धकर्तामें मैंने अैसी कोअी बात नही देखी। यदि अिन्हीकी तरह ओरानके सभी होटल-संचालक होते तो हरअेक विदेशी यात्री अपने साथ ओरानकी मधुर स्मृति लेकर ही जाता। अुस रातको गरम पानीसे स्नान किया और भोजन करके सवेरेही सो गये। तेहरान छोळनेके दिनहीसे दिल भरकर सो नही सके थे। यहाँ सारी कसर पूरी हो गयी।

सवेरे (१९ सितम्बर) नाश्ता करनेके बाद शहर घूमनेकी सलाह हुअी। रास्तेमें अली अस्गर साहबने बिना कहे ही कितनी ही बार कहा—हम ये दिखायँगे, हम वो दिखायँगे, अपने घरपर ले चलेंगे। आप वहाँकी रहन सहन देखेंगे। यहाँ आनेपर अेक आध बार यदि अुनका दर्शन भी हुआ, तो वह यही कहते आये—माफ कीजियेगा हमें यह काम है। खैर, मुझे अुतनी अवश्यकता भी नही थी। जापान, मंचूरिया तथा रूसकी अपेक्षा यहाँ भाषाकी कठिनाअी बहुत कम थी। मोल-भावकी बातको मै जान गया था। हर अेक चीज़का दाम दूना कहा जाता है यह मै समझता था। होटल-के प्रबन्धकने कह दिया था कि हाफिज और सादीके समाधियोंको देखनेमें आसानी होगी यदि कोतवाली (नज़्मिया*) जाकर वहाँसे आदमी ले लें। हमारे होटलसे कोतवाली दूर नहीं थी। नज़्मियाके अफसरने बळी नम्रतासे बातचीत की और हमारे साथ अपना अेक आदमी

*अुस समयतक कोतवालीके लिये यही अरबी शब्द अिस्तेमाल किया जाता था। किन्तु मेरे सामने ही अुसे निकालकर शह्रबानी कर दिया गया।
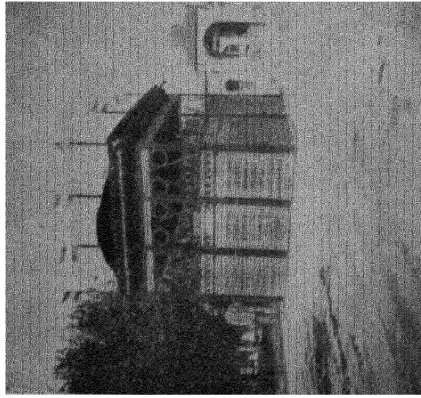
शीराज़ हाफ़िज़ की समाधि

अस्फहान—असगर ख़ाँ (कोचवान)

कर दिया। हाफिजकी कब्र शहरसे दूर नही है। अिस सळकका नाम ख्याबाने-हाफिज रखा गया है। कविता और विचारकी दृष्टिसे हाफिज और सादी कितनेही अूँचे हों पर औरानमें अुनको वह सम्मान प्राप्त नही, जो फिर्दोसीको है। तो भी वर्तमान औरानी सरकार जिस किसी तरह भी औरानी स्वाभिमान बढ़े, अुसका पोषण करती है। शताब्दियोसे अुपेक्षित हाफिजका मकबरा फिरसे मरम्मत किया जाने लगा है और रविशें सँवारी जा रही हैं। अरबसे आये मजहबपर छिपे तौरसे जितना भी प्रहार किया जा सके अुससे बाज नही आया जाता। हाफिज और सादी दोनोंकी समाधियोंपर अिन महान् कवियोंकी तसवीरोंका टाँगना अिसी भावको प्रकट करता है। हाफिजकी कब्रसे हम सादीकी ओर चले। वह वहाँसे १ मीलपर करिया-सादी गाँवमें है। अुस वक्त धूप तेज़ थी। दूरसे हमें अेक पहाळकी जळमें कुछ पीले पत्ते वाले पौधे दिखायी पळे। पहले तो हम समझ नही सके कि यह क्या है। वह अुस बादामी रंगकी पहाळी भमिपर थोळे थोळे फासलेसे लगे हुये थे। पूछनेपर कोचवानने बतलाया ये अंगूर है। यहाँ अंगूरोंको लताकी सूरतमें नही लगाया जाता। जमीन-से हाथ भर छोळकर बेल काट दी जाती है और वह तना वर्षों बाद काफी मोटा हो जाता है। अिसी तनेसे हर साल फूट कर नयी पतली डालियाँ निकलती हैं, जो पीछे काट दी जाती हैं। अिन्ही डालियोपर अंगूरके गुच्छे लगते हैं। शीराजके अंगूरोके बारेमें क्या कहना है! डेढ़ डेढ़ अिंच मोटे बहुत मोटे, सोनहले फल। तुर्शीका नाम नही। लेकिन मिठास अिस प्रमाण में कि पेट भर जानेपर भी जी न अूबे। अुस वक्त फसलको खतम हुये दो महीने हो गये थे; लेकिन शीराजकी सळकोंपर गदहे वालों-से तब भी अेक आनेमें अेक सेर मिल जाते थे। सचमुच दिल तो चाहता था कि रह जाओ यही। क्या अिधर-अुधर डोलते-फिरते हो। शाह रजाके शान्तिमय राज्यमें अन्धेर नगरीके चौपट राजाका भी भय नहीं था। शीराज छोळते शीराजके अँगूरोंकी याद तो ताज़ी थी। आज १५

महीने बाद जब यह पंक्तियाँ लिखी जा रही हैं, तब भी याद आने पर मुँहसे पानी आने लगता है। फसल बीत जानेपर तो अितने सस्ते, फसलके वक्त क्या धेले सेर तो नहीं बिकते ?

आगे हमें पानीकी अेक छोटीसी नहर आती दिखायी पळी। यह धार सादीकी समाधिसे आती है। वहाँ अेक चश्मा है जिसे "आबे-सादी" कहते हैं। अिस नहरका नाम भी आबे-सादी है। देखा, दो दर्जनसे अधिक स्त्रियाँ अुसी पानीमें कपळे धो रही हैं। अुनमें कुछ बूढ़ी कुछ जवान थीं। सभीके बाल कटे हुये थे। बूढ़ियोंके बाल सामनेसे तो कटे मालूम होते थे लेकिन पीठपर चोटी भी गुँथी हुअी थी। पहले जब हमसे कहा गया था कि सैकळेमें सैकळे अीरानी औरतोंने बाल कटा लिया है, तो अिसपर विश्वास नहीं हुआ था; लेकिन अब कमसे कम शहरकी औरतोंके लिये तो विश्वास करना ही था। कुछ दूर और अूपरकी ओर चलकर हम अेक गाँवमें पहुँचे यही सादीका मकबरा है। अेक छोटासा बाग़ है। बाग़ क्या है, कोअी थोळेसे दरख्त हैं, जिनमेंसे कुछ चीळके हैं। सामने हरी घास और कुछ फूल लगे हुये हैं। यहाँ अींटकी अेक-दो तल्लेकी अिमारत है, जिसके भीतर महाकवि शेख़ शादीकी समाधि है। हम लोग समाधिके कमरेमें घुसे। कब्रपर संगमर्मरकी जालीका घेरा है। द्वारपर सादीके अेक पुराने चित्रका फोटो है। समाधिके सामने खळे रहते समय तरह तरहके ख्याल आते रहे और वह क्यों न हो जब कि हम अुस भूमिपर खळे थे जिसके भीतर पश्चिमी अेसियाका अेक महान् कवि अनन्त निद्रा में सो रहा था। सादीका देहान्त किसी दूसरी जगह हुआ था और अुनकी लाश भी किसी दूसरी जगह दफनायी गयी थी। फिर पीछे वह अुनकी जन्म-भूमिमें लायी गयी। लौटते वक्त अुस चटियाल नीरस भूमिको देखकर ख्याल आता था—प्रकृतिने अिस प्रदेशको तो प्राकृतिक सौन्दर्यसे सर्वथा वंचित कर रखा है। अैसी सौन्दर्य-हीन भूमि कैसे हाफिज और सादी जैसे कवियोंको पैदा कर सकी। नीरस भूमिसे सरस कवि ! क्या यह आश्चर्य-

शीराज़ सादी की समाधि
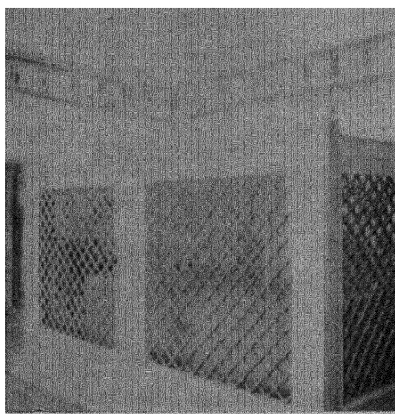
जनक नहीं है ? संभव है नीरस भूमिका कवि प्रकृतिके सौन्दर्यको देखनेके लिये तरसता रहता हो और जब कभी वह प्रकृति-नटीके मधुर शृंगारको देख लेता है, तो वह तन्मय हो जाता है। नया होनेसे वह अुसकी ओर अधिक आकृष्ट होता है और अिस प्रकार वह अुसके सुन्दर गुण-गानमें भी सफल होता है।

२० सितम्बरको शुक्रका दिन था। (यद्यपि अेक दिसम्बर सन् १९३६ के स्टेट्समैनसे मालूम हुआ कि अीरानी सरकारने शुक्रवारको छुट्टीका दिन न मानकर, अुसके लिये अितवार छुट्टीका दिन घोषित किया।) मुसलमानोके लिये शुक्रवार जुम्माके नमाजका दिन होनेसे बहुत पवित्र दिन है; लेकिन अीरान तुर्कीकी तरह अेक दूसरेही धुनमें है। अिस्लाम क्या कहेगा, अिसकी अुसे परवाह नही। दिलसे तो वह चाहता है कि अुन सभी बातोंको कान पकळकर निकाल दिया जाय, जो कि अरब विजयके बाद जबरदस्ती अीरानके अूपर लादी गयी। अीरानका बादशाह खूब समझता है कि अीरानी हृदयमें सुप्त स्वजात्यभिमानको पहले जगानेकी अवश्यकता है। अेक बार अुसके जग जानेपर चाहे जो सुधार या क्रान्ति की जाय मजहब और अुसके मुल्ले सर नही अुठा सकते। रजाशाह अमानुल्लाकी तरह ग़लती करने वाले नही है। अुन्हीकी तरह यह भी अीरानको जल्दसे जल्द समुन्नत देखना चाहते हैं; लेकिन सभी चीज़की अच्छी तरह थाह लगाकर और फिर बज्र-संकल्पके साथ। लेकिन जिस समय मै अीरानमें था अुस समय शुक्रवार छुट्टीका दिन माना जाता था। अुस दिन बहुतसी दूकानें भी बन्द रहती थी। शाहरज़ाकी पीठपर सारा शिक्षित तरुण अीरान है। अीरानी पलटन अुन्हें देवता की तरह मानती है। सिपाहियों और आफिसरोंकी वर्दियाँ खूब साफ और प्रभावोत्पादक हैं। सिपाहीकी तन्ख्वाह पन्द्रह रुपये महीने है; जो खाने पीनेकी चीज़ोंके सस्तेपनसे काफी अच्छी है। तन्ख्वाह वक्तपर मिल जाती है। पलटनकी तरह पुलीस भी शाहकी विश्वासपात्र है। पलटन, पुलीस और

देशका तरुण संघ जिसके पीछे हो अुसका कोअी क्या बिगाळ सकता है ? शाहके अक़बालके बारेमें अेक दिन अेक देहाती आदमी मुझसे कह रहा था—सारा अीरान शाहके हाथमें आ गया किन्तु सूबा फारस (जिसकी राजधानी शीराज है) अधीनता स्वीकार करनेसे अिनकार करता था। अुसके खिलाफ पलटनपर पलटन भेजी गयी। लेकिन सभी असफल रहे। अन्तमें शाहने स्वयं तोपके मोर्चेपर खळा गोला दागनेका हुकुम दिया। फारस वालोंकी तोप बन्द हो गयी; और अिस प्रकार सूबा फारसने भी शाहपहलवीकी अधीनता स्वीकार कर ली।

शहरमें कभी कभी बन्दूक लादे अिक्के-दुक्के सिपाही भी आते जाते दिखायी पळते थे।

अीरान में भी सिनेमा देखनेका बहुत शौक है। बोलते और मौन दोनों तरहके चित्र-पट आते हे। यद्यपि ताजिकिस्तान सोवियत प्रजातंत्रने, जिसकी भाषा फारसी है, बळे अच्छे फारसी बोलते चित्र-पट तैयार किअे हैं, लेकिन सोवियतके साथ अच्छा सम्बन्ध रखते हुअे भी दूसरे पळोसी राज्योंकी तरह अीरान भी साम्यवादसे डरता है। सोवियतमें तैयार अैसा फिल्म कहाँ हो सकता है जिसपर साम्यवादकी छाप प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूपसे बिलकुल न हो। ताजिकिस्तानके फारसी फिल्म यदि अीरानमें दिखलाये जाते तो लोग अुसे खूब समझते। अीरानमें दिखलाये जानेवाले फिल्म अधिकतर फ्रेंच या अमेरिकन होते हे। दर्शक-मंडली शब्दोंको बिल्कुल नही समझती। अुनके लिये वे मौन चित्रपट जैसे ही हैं। लेकिन दर्शकोंकी आसानीके लिये सभी घटनायें पर्देपर फारसी और रूसी भाषामें लिखी आ जाती हैं। रूसी क्रान्तिके बाद लाखों रूसी अपना देश छोळ बाहर चले गये। आज वे यूरोप, मञ्चूरिया आदि में फैले हुये हे। अुनमेंसे हज़ारों अीरान चले आये हैं। पहलवी, तेहरान और मश्हदमें अुनकी काफी संख्या है। अीरानके छोटे छोटे शहरोंमें भी ये बस गये है। अिन सफेद रूसियोंकी बहुतसी लळकियाँ अीरानी होटलोंमें

परिचारिकाका काम करती है; और शाघाओकी तरह यहाँ भी हज़ारों रूसी तरुणियाँ वेश्या-वृत्तिसे अपनी जीविका अुपार्जित करती हैं। अिन्हीं रूसी दर्शकोंके लिये सिनेमामें रूसी हेडिंग दिखाये जाते हैं। किसी किसी जगह घटनाका हेडिंग कोअी आदमी खळा होकर सुना देता है।

अीरानी शहरोंकी सळकें खूब साफ और चौळी हैं; और वे अितनी सीधी निकाली गयी है कि मालूम होता है पहलेसे नकशा तैयार करके शहरको बसाया गया है। सचमुच अीरानी सळकोंका मुकाबला हिन्दुस्तानमें सिर्फ नअी दिल्लीकी सळके ही कर सकती है। और जब हमें मालूम होता है कि यह सब काम दस वर्षके छोटे समयमें किया गया है तो आश्चर्य हुये बिना नही रहता। शीराज़में भी यही देखनेमें आती है। तेहरानसे बूशायर होकर जहाजसे करांची या बम्बअी आया जा सकता है; लेकिन मैंने स्थलकी राह लौटनेकी कसमसी खा ली थी। अिसलिअे अुधर जानेका कोअी सवालही नही था। मालूम हुआ, बूशायर जाते वक्त पहाळी रास्ता बहुतसा अुतराअीका है। शीराज़ समुद्र तलसे ५२०० फीट अूँचा है, अिसलिअे अुतराअी काफी होनी ही चाहिये। शीराज़मे हमें दो पंजाबी मुसलमान यात्री मिले। चलते वक्त अुनसे मुलाकात हुअी। दोनों सज्जन पंजाब विश्वविद्यालयके ग्रेजुअेट और सरकारी नौकर थे। अिनमें अेक कोआपरेटिव विभागमें थे। छुट्टी लेकर दोनों सज्जन घूमने आये थे। वे अपने साथ रस गारनेके हथियारको लेते आये थे; और बळे कौतूहलसे कह रहे थे, अेक रियाल (ढाअी आने)की अंगूरसे अेक बोतल रस निकला। भारतमें अुसकी कीमत कितनी होती?

अुनमेंसे अेक सज्जन पंजाब विश्वविद्यालयकी फारसीकी सर्वोच्च परीक्षा मुन्शी-फाजिल भी पास थे। बिचारे शिकायत कर रहे थे अीरानकी फारसी समझमें ही नही आती। मैने कहा—तब तो आपसे मैं ही अच्छा रहा। मुझे कामकी बात समझनेमें कोअी दिक्कत नही यद्यपि मेरी फारसीकी शिक्षा दो अेक छोटी छोटी पुस्तकें और गुलिस्ताँ तक ही सीमित

है। बात यह है कि किताबें चाहे अुन्होंने कितनी ही बळी बळी पढ़ी हों और समय भी लगाया हो लेकिन देश और समयके अनुसार अुच्चारणमें कैसे परिवर्तन होते हैं, कैसे व्याकरणके नियमोंमें हेरफेर होता है, अिसे वह नहीं जानते थे। मैं तो हर जगह हर अेक शब्दको भाषातत्वकी मददसे परखना चाहता था। मुझे मालूम हो जाता था कि कैसे कम कम चम चम हो जाता है। अर्थात् क का च, ग का ज कैसे बनता है। किस प्रकार अरबी लिपि स्वीकार करनेपर प च ग को फ़ क़ ज़ बना दिया गया। ओीरानी लोगोके फारसी अुच्चारणमें अेक और विचित्रता मैंने देखी। छपरा-बलिया-वालोंकी तरह वहाँ भी वाक्यके अन्त वाले स्वरको लम्बा किया जाता है। और संगीतमय स्वरसे अुसका अुच्चारण होता है। "अपने कहाॅ जा ता नी ा ा ा" और "शुमा कुजा रवी ा ा ा" के अुच्चारण में अत्यन्त समानता है। अिस समानताका क्या कारण हो सकता है, नही कहा जा सकता। हमारे अिस स्वदेशी भाओीको ओीरानकी कुछ बातें अजब-सी मालूम होती थी। राष्ट्रीयताके सामने मजहबकी जो दुर्गति बन रही थी वह अुनके लिये नओी बात थी। अुनको ख्याल था कि भारतीय मुसलमानोंकी तरह दुनियाके सभी मुसलमान अिस्लामको पहले और देशको पीछे रखते होंगे; और जहाँ किसीने दूर देशसे आये वशीर अहमदका नाम सुना कि अुसपर जादूका असर हुआ। वह तो शिकायत कर रहे थे कि ओीरानी क्यों अितने बे-मजहब होते जा रहे है। अुन्हें समझानेकी कोओी अवश्यकता नही थी। ओीरानकी भूमिमें पहुँचे अेक ही हफ्ता हुआ था, अभी अुन्हें बहुत देखना था। हाँ हमने अुनसे यह जरूर कह दिया था कि आप समुद्रके रास्ते क्यों भारत लौटेंगे। अस्फहान, तेहरान और मशहद तो देखना ही होगा, फिर मशहदसे जितने खर्च और समय में आप समुद्रके किनारे पहुँचेगे उतनेमें लाहौर पहुँच जायँगे। आगे जाकर जब अुन्होंने लाखों कब्रों और सैकळों मस्जिदोंको तोळकर फेंक देनेकी बात सुनी होगी तो अुनके दिलपर कैसा असर हुआ होगा। वे दोमेंसे

एक भाव लेकरके ज़रूर लौटें होंगे, या तो समझे होंगे कि किसी जीती जातिको उन्नत होनेके लिये हमें वही रास्ता अख्तियार करना होगा जो अीराननें किया है; अथवा यह विश्वास लेकर लौटे होंगे कि कयामत आनेवाली है और अिसीलिये इस्लामपर यह आफ़तें आये दिन आ रही हैं।

मेरी तरह अुन दोनों भाअियोंको भी अफ़सोस रहा कि हम पहले न मिल सके।

५—तेहरानको वापस

२१ सितम्बरको सूर्यास्तके बाद हमारी मोटर रवाना हुअी। तेहरानके लिये सत्तावन रियाल (साढ़े नौ रुपये)मे विलेत् खरीदा। साढ़े छ सौ मीलके मोटर बसके सफ़रके लिये साढ़े नौ रुपया कोई अधिक नही है। रातके नौ बजे गाळी रवाना हुअी। दो बजे रातको आरामके लिये हम ठहर गये। सवेरे सात बजे फिर रवाना हुअे। रास्तेमें आबादाका कस्बा आया। यह समुद्रतलसे ६००० हज़ार फ़ीट अूँचा है, अिसलिये शीराजकी अपेक्षा अधिक ठंढा है। जनसंख्या ५०००से अधिक है। आगे हम यज़्दखास्तमें पहुँचे यह पौने सात हज़ार फ़ीट अूँचा है। अेक अच्छा बळा गाँव है। किसी समय यह अेक वैभवशाली स्थान रहा होगा। किन्तु आज अवलम्ब सिर्फ़ खेती ही है। गाँव अेक ऐसी छोटी-सी पहाड़ीपर बसा हुआ है, जिसके कुछ हिस्सेको सहस्रों शताब्दियोसे पानीने काट-काटकर ऐसा बना दिया है कि दूरसे वह विशाल प्रासादोंका खड्ड मालूम होता है। गाँवके नीचे नालेसे लम्बे खेत चले गये हैं। लहलहाते लहसुनकी तरहके हरे खेत देखनेमें अत्यन्त सुन्दर मालूम होते थे।

सूर्य डूब चुका था और अँधेरा फैल रहा था, जब हमें अस्फहानकी पहली झाँकी मिली। हज़ारो विद्युत-प्रदीपोंसे नगर जगमगा रहा था। सात बजे हम शहरमें दाखिल हुये। चार रियाल रोजपर अेक कमरा लिया। २३ सितम्बरको तो वैसे भी हम रहना चाहते थे क्योंकि जाते वक्त हम शहरको बळी जल्दी जल्दीमें देख पाये थे। जिस सळकपर हम ठहरे थे अुसीपर बहुत-सी मोटर-कम्पनियोंके आफ़िस है। इसीपर दो तीन भारतीयोंकी दूकानें भी है। अिनमें तिजारतखाना-साहेबसिंह सबसे बळा है। अिसकी शाखा तेहरान तथा कुछ और शहरोंमे भी है। अुस दिन हमारे अेक सिक्ख नौजवान कह रहे थे—कि, जानते हैं बादशाहने

हैटका रवाज क्यों चलाया? मुझे अज्ञता प्रकट करते देख अुन्होंने कहा—सरकार ओीरानियोंको नमाज नही पढ़ने देना चाहती; अिसीलिये पहले छज्जेवाली गोल टोपी पहरनेका हुक्म हुआ। बिना सर ढाॅके नमाज पढ़नेपर खुदा अुसे स्वीकार नही करता और नमाज पढ़ते वक्त ललाटका पृथ्वी छूना आवश्यक है। छज्जेदार टोपीके कारण ललाट धरती तक पहुँच नही सकता। अिस प्रकार नमाजका पढ़ना बेकार हो जाता है। लेकिन कुछ लोग अुस्ताद निकले। वह नामाज पढ़ते समय टोपीका छज्जा पीठकी ओर घुमा देते थे और अिस प्रकार ललाट पृथ्वी तक पहुँच जाता था। जब अिस चालाकीका पता बादशाहको लगा तब अुसने हुक्म निकाला सबको हैट पहरना पळेगा। हैटकी तो चारों ओर छज्जा होता है। अब देखें, लोग कैसे नमाज पढ़ते हैं? नौजवानकी व्याख्या बळी रोचक मालूम हुअी। सिक्ख लोग शूकर-मांसके बळे प्रेमी हैं और ओीरान जैसे मुसल्मानी देशमें, जहाॅ अुसका नाम लेनेसे भी लाहौल निकलता है, अुसके मिलनेकी कहाँ सम्भावना। लेकिन अुक्त सिक्ख तरुणने बतलाया, पालतू सूअर तो नही लेकिन जंगली सूअर ओीरानमें बहुत है। और नयी रोशनीवाले ओीरानी अुसे चावसे ग्रहण करने लगे है। वे लोग लळकोंके स्कूली इतिहासकी किताबोमें छपे खुश्रो परवेज़के अुस पाषाण-चित्रको अिस बातके लिये प्रमाणके तौरपर पेश करते है कि ओीरानी लोगोके लिये जंगली सूअर हराम नही है। हराम होता तो खुश्रो परवेज़के अुस शिकार-चित्रमें सूअरोंको उतना प्रधान स्थान क्यों दिया जाता? और फिर ओीरानी सरकार अुसी चित्रको स्कूली किताबोमें क्यों छापने देती?

२४ सितम्बरको ढाई बजे (दिन) हमारी मोटर रवाना हुअी। मोटर बिलकुल नयी थी। भीतर गद्दियाॅ भी साफ़ थी और मुसाफ़िरोंकी भीळ भी ज्यादा नही थी। देखकर दिलको बळा आनन्द हुआ। आगेकी यात्रा सानन्द समाप्त होगी। लेकिन बारह बजे रातको किसी पुर्ज़ेके टूटनेकी आवाज़ आयी और मोटर तुरन्त खळी हो गयी। अगला पळाव

सात मील दूर था। पासमें दूसरा गाँव-गिराँव न था। ओीरानके दस वर्ष पहलेकी अवस्थाका तो हमें अनुभव नही था, लेकिन यात्री कह रहे थे कि अुस समय तो शून्य स्थानमें दिनको भी यात्रा करना खतरेसे खाली नहीं था। १२ बजे रातको अिस बयाबानमें पळकर तो अुस समय हममेंसे अेक भी जीता न बचता। अुस रात सर्दीकी कुछ मत पूछो। नीद कहाँसे आती। बराबर अपनी बेवकूफ़ीपर क्रोध आ रहा था। बार-बार ख्याल आता था कि कमसे कम ओवरकोट क्यों नही लेते आये। ड्राइवरने पहले कोशिश की कि मोटरको बनाकर ले चलें; लेकिन पुर्जा ऐसा बेढब टूटा था कि मरम्मत की गुंजाइश ही न थी। साथी लोगोंमेंसे बहुतसे मोटरसे अुतरकर नीचे सो गये थे। हमने बाकी रात सीटपर बैठे ही बैठे बितायी। सवेरा होने-पर आगे 'कुम' जानेका निश्चय किया। ड्राइवर कहता रहा कि ठहरिये दूसरी मोटर आती है, भेज देते है। लेकिन दूसरी मोटर कब आती अिसका ठिकाना नही था।

आज ही 'तेहरान पहुँचनेका भी इरादा था। अन्तमें हम चल पळे। हमारे साथ नौजवान ड्राइवर भी चल पळा। रास्तेमें अेकआध जगह हमें उजळे मकान दिखायी पळे। साथीने अँगुलीसे अिशारा करते हुये कहा—"महायुद्धके वक्त सारे ओीरानमें अंग्रेजी पलटनें पळी हुयी थी और अिन घरोमें हिन्दुस्तानी सिपाही रहते थे। हम ओीरानियोंको अपने घरमें ही बेगानोंकी तरह् रहना पळता था। अेक जगहसे दूसरी जगह जानेमें अिन चौकियोंमें राहदारी दिखलानी पळती थी। रास्तोंपर चलनेके लिये टैक्स देना पळता था।

वैसे तो बहुत दिनोसे ओीरानी राष्ट्र अपमानित था। पलटनके नामपर कुछ थोळे-से काजार-वंशी शाहके दरबान थे। शाहको अपने खर्चके लिये प्रजासे और अेंग्लो-पर्शियन तेल कम्पनीसे काफ़ी रुपये मिल जाते थे, अुससे वह वाजिदअली शाह बने हुये थे। यूरोप और एसियाकी विलासिताके संबन्धमें पुराने और नये जितने भी आविष्कार हुये थे अुन सबका अुपभोग
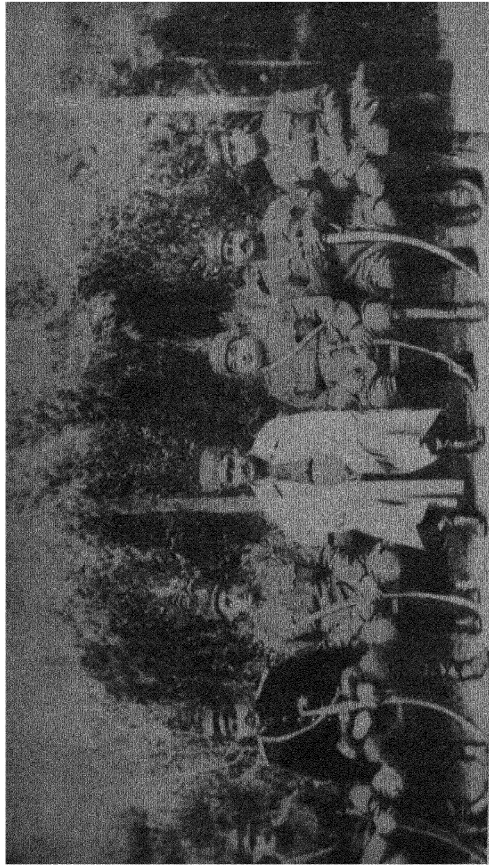
रज़ा ख़ाँ पहलवी का मन्त्रिमण्डल

करना ही अुनका लक्ष्य था। लळाईके दिनोंमें और अुससे दो तीन वर्ष पीछे तक तो ओीरानका सम्मान बिलकुल मिट्टीमें मिल गया था। लळाईसे पहले रूस और इंगलैण्डके साम्राज्य-वादियोंने ओीरानको तीन हिस्सोंमे बाँट दिया था। दक्षिणी भाग इंगलैण्डके प्रभाव-क्षेत्रमें था, अुत्तरी रूसके प्रभाव-क्षेत्रमें और बीचके थोळे-से भागको दोनोंने अिसलिये छोळ रखा था कि दोनों शक्तियोंके प्रभाव-क्षेत्र एक दूसरेसे मिलने न पावें। जिस वक्त ओीरानकी ऐसी दुर्दशा हो रही थी अुसी समय ओीरानका एक गुमनाम सिपाही अपनी शक्ति और प्रभावको बढ़ा रहा था। कहते हैं, रज़ाखाँको एक बार अपने शाहसे विरोध करना पळा था। अुसने रूसमें रहकर वहाँके सेना-संगठनका अच्छी तरह अध्ययन किया था। समय आनेपर वह अपने देशवासियोसे अैसे आ मिला कि वह अुनकी नज़रमें बहुत अूँचा हो गया धीरे धीरे रज़ाखाँ अपनी सेनाका अत्यन्त विश्वासपात्र बन गया। जहाँ और शाही पलटनोकी तन्ख्वाह महीनों बाकी रहती थी और अुनकी वर्दी भी फटी-पुरानी होती थी वहाँ जेनरल रज़ाखाँके अधिकारकी सेनाका वेतन अच्छा था और वह बिल्कुल समयपर मिलता था। अुनकी वर्दी भी भळकीली और प्रभावशाली थी। १९२१ में फ़रवरीका महीना था, जब जेनरल रज़ाखाँने ओीरानकी राजधानी तेहरानको घेर लिया।

अुन्होंने स्वयं मंत्रिमंडल बनाया और वह खुद ही युद्ध-मंत्री बने। १९२४ ई० में अुन्होंने पहला पहलवी मंत्रिमंडल बनाया। यद्यपि अभी ओीरानकी गद्दीपर अहमद शाह मौजूद था तो भी वह बराबर फ्रांसमें रहता था। ३१ अक्टूबर १९२५ ई० को वह गद्दीसे हटा दिया गया और मजलिस या ओीरानी पार्लियामेंटने अपने बहादुर जेनरलको अुसकी देश-सेवाके लिये अपना बादशाह बनाया। गद्दीपर बैठनेके बाद शाह पहलवीने अपने देशको अंग्रेज़ों और रूसियोंके पंजेसे छुळाया। पहले सोवियत-प्रजातंत्रने अुनकी बात स्वीकार की। अुसने अपने सारे विशेषाधिकार छोळ दिये और अिस तरह अप्रत्यक्ष रूपसे अंग्रेज़ोंको भी

मजबूर किया कि वे भी अपने विशेषाधिकारको छोळ दें। शाहने ईरानमें अनिवार्य्य सैनिक सेवाका नियम चलाया। अुसने दीवानी और फ़ौजदारी कानूनमें सुधार किये। सारे ईरानमें यातायातके लिये, जो अितनी मज़बूत और सुरक्षित सळकें हैं, यह शाह पहलवीकी कृपा हैं। अुन्होंने राष्ट्रीय, कृषि और पहलवी नामके तीन बेंक निर्म्माण किये जो ईरानके पुनर्निर्माणमें बहुत भारी सहायता कर रहे हैं। हवाई और समुद्रीसेनाका नाम भी शाह पहलवीके पहले सुना नही जाता था। अुन्होंने सेना और पुलीसका फिरसे संगठन किया, ळळाकू जातियोंका निरस्त्रीकरण किया। टेलीफोन, तार और बेतारसे सारे ईरानको मिला दिया। तेहरानसे बूशायर, पहलवी, हम्दान, अस्फहान, करेमानशाह, मशहद और शीराज़ शहरोंको हफ्तेमें दो बार हवाई जहाज़ छूटते हैं। नाप और तौलका भी सुधारकर मात्रिक नियमके अनुसार अुसे स्वीकार किया। ईरानी जनताके मनोभावमें क्रान्ति लानेके लिये ही अुन्होंने सबके हैट लगानेका कानून बनाया और अिसीलिये स्त्रियोंका परदा कानूनसे हटा दिया। शुक्रवारकी तातील हटाकर अुसकी जगह अतवार करना उसी दिशाकी ओर अेक और लम्बा पग है। संक्षेपमें दस-ग्यारह बरसके थोळेसे समयमें शाह पहलवीने जैसा काम किया है; अिसके लिये ईरानी जाति क्यों न अुनके लिये कृतज्ञ हो।

साढ़े नौ बजे कुमसे हमें तेहरानके लिये बस मिली। आते वक्त हम रातको आये थे, लेकिन अब दिनमें लौट रहे थे। कितने मील बाद हमें दाहिनी तरफ़ खारेपानीकी कुम झील मिली। झील बळी विशाल है। अेक छोटासा समुद्र ही समझिये। आसपासके सभी पहाळ और नदियोंका पानी खीचकर रख लेना ही अिसका काम है। यह कंजूस झील अेक बूंद भी पानी प्रसन्न मनसे नहीं देती। और अुसीका दंड है जो अल्ला मियाँने अिसके पानीको खारा कर दिया। रास्तेमें कई जगह अुजळे मकान मिले। लोगोंने बतलाया, पहले जब यात्रा पैदल घोळे या अूँटसे होती

थी, तो यात्री लोग अिन पळावोंमें ठहरा करते थे; और मेहमान-मुसाफ़िरखानोंको काफ़ी पैसा मिलता था। लेकिन आज मोटरके युगमें अितने नज़दीक-नज़दीक, पळावकी ज़रूरत नही रह गयी, अिसलिये सब अुजाळ हो गये। अब पळाव दूर-दूर हैं। अिनमें चाय और खाने-पीनेकी चीज़ें मिल जाती है। औरानी लोग चायमें चीनी छोळ और कुछ नहीं डालते। चीनी बळी महँगी है; क्योंकि बाहरसे भारी टैक्सके मारे बहुत कम आती है। औरानी सरकारने चुकन्दरसे चीनी बनानेके कई कार-खाने शुरू किये है। सरकारकी यह नीति है कि जिस किसी अुद्योग-को वह अपने देशमें बढ़ाना चाहती है, अुसे प्रतिद्वन्दितासे बचानेके लिये बाहरी मालपर बळा-बळा टैक्स रख देती है। औरानको अपने काममें अेक और बळी मदद मिली है। अन्य साम्राज्यवादी देशोंकी तरह सोवियत सरकारको व्यापारिक साम्राज्य स्थापित करनेका ध्यान नही। अपने लिये नये बाज़ारोके दखल करनेका न ख्याल होनेपर भी वह यह ज़रूर चाहती है कि दुनियाके दूसरे देशोके बाजार भी साम्राजीय शक्तियोके हाथसे निकल जायें; अिसीलिये वह तुर्की और औरान जैसे राष्ट्रोंके उद्योग-धंधोंको बढ़ानेमें हर तरहकी सहायता दे रही है। तुर्की और औरानके लोगोंको भिन्न-भिन्न उद्योग-धंधोंकी शिक्षा देनेके लिये सोवियत सरकारने बहुत सहायता दी है। विशेषज्ञ सलाहकार भेजकर चीनी और कपळे जैसे उद्योगोके संगठन करनेमें मदद दी है। जहाँ भारत जैसे साम्राज्यके आदमियोंके साथ भी इंगलैण्डके कारखाने काम सिखानेमें दुरावका भाव रखते है, वहाँ सोवियत सरकार दिलसे चाहती है कि कब तुर्की और औरान अपने पैरोंपर खळे हो जायँ, और दूसरी पूँजीवादी शक्तियाँ अुनका शोषण न कर सकें। तुर्की और औरान साम्यवादी राज्य नही हैं; और अिसीलिये वह अिसका बराबर ध्यान रखते हैं कि रूसके साम्यवादका असर कही अुनके देशमें न चला आवे। लेकिन साथही वे यह भी जानते हैं कि आर्थिक और राजनीतिक

वर्ष पहले तो यही अक्षर आपके यहाँ भी बरता जाता था। अुन्होंने कहा हम लोगोने यह बेवकूफ़ी छोळ दी। हमने अिस निकम्मी लिपिको देशसे धत्ता बता दिया। हमारी तुर्की भाषा अब रोमन लिपिमें लिखी जा रही है।" अीरानी फोटोग्राफरने कहा—"थोळा ठहर जाअिये हमारा शाहंशाह पहलवी भी वही करने जा रहा है और फिर हम भी अिस निकम्मी लिपिके पंजेसे मुक्त हो जायँगे।"

मैंने कहा—"आप लोग तो अपनी लिपिको अपने देशसे निकालने जा रहे हैं और अुसकी जगह अुपयुक्त समझकर अेक विदेशी लिपिको स्वीकार कर रहे हैं। भारतमें हम लोगोंकी पहलेसे ही अेक लिपि है जो कअी अंशोंमें रोमन लिपिसे अधिक पूर्ण है। अिस्लामके साथ-साथ आपके यहाँकी तरह हमारे यहाँ भी यही अरबी लिपि आयी; और आपको सुनकर ताज्जुब होगा, कि कितने लोग अिसे फ़ारसी लिपि कहते हैं। अुसके लिये हिन्दुस्तानके मुसल्मान मज़हबके नामपर ज़मीन-आसमान अेक कर रहे हैं। वे कहते हैं—अिस्लामके लिये यह लिपि आवश्यक है। यह हमारी धार्म्मिक लिपि है।"

पास बैठे अीरानी नौजवानने उत्तेजित होकर कहा—"आपके यहाँके नौजवान ऐसे मज़हबको धत्ता क्यों नहीं बताते।"

मैंने कहा—"आपने जितनी चीज़ोंको धत्ता बतलाया है क्या आप वैसा कर सकते थे यदि अीरान स्वतंत्र न होता और अुसे रज़ाशाह पहलवी जैसा शासक न मिला होता।"

तुर्क नौजवानको यह सुनकर बळा आश्चर्य्य हुआ कि जिस तुर्की टोपीको अुसका देश कबका छोळ चुका है अुसे हिन्दुस्तानी मुसल्मान बळे अभिमानके साथ तुर्की टोपी कहकर पहनते हैं। थोळी देर बातचीत करनेके बाद डाक्टर हमीद हमें लेकर अपने घर गये। वहाँ अुन्होंने अपने पिता, भाई, स्त्री तथा सौतेली माँसे परिचय कराया। अुनका आग्रह हुआ कि मैं अुन्हीके घर अीरानी भोजन करूँ। भोजनमें पतली चपातियाँ, चावल,

बिना मसालेका दुम्बेका गोश्त था। अेक तस्तरीमें हरा दौना या पुदीना जैसा पत्ता और कुछ टुकळ प्याजके भी थे। मसालेसे मेरा वैसे भी प्रेम नही है; और पिछले साढ़े तीन महीने जापानमें रहकर वहाँवालोंके मसालेके बायकाट-को देखकर और भी अुसका ख्याल नही होता, बल्कि यदि मिर्च मसाला अधिक हो जाय तो गलेसे नीचे अुतारना भी मुश्किल हो जाता है। सबसे पीछे अंगूरोंकी तश्तरी आयी। मीठे तो थे लेकिन अुस वक्त वह अुतनी बळी चीज़ नही मालूम होते थे जितनी कि अिस वक्त हिन्दुस्तानमें बैठकर अिन पंक्तियों के लिखते वक्त और हिन्दी पाठकोंको अिन पंक्तियोंके पढ़ते वक्त मालूम होंगे। जहाँ रोटियाँ ही अुन अंगूरोंसे महँगी हों वहाँ अुनका क्या मान होगा। मैंने कई बार सळकोंपर पत्थर कूटनेवाले कुलियोंको खाते वक्त देखा था कि मोटी चपातियोंपर आधसेर अंगूर रखकर वे गुज़ारा कर रहे है। सचमुच ही यदि अुनसे पूछा जाता तो यही कहते—"आगा, क्या करें अिन्हीं सूखी रोटियोंको अिन निकम्मे अंगूरोके सहारे किसी तरह निगल-कर पेट भर लिया जाता है।" डाक्टर अहमदने मेरा नाम पूछा, मैंने अंग्रेज़ीमें छपा अपना कार्ड दे दिया। बळी प्रसन्नताके साथ अुन्होंने कहा—"आपका नाम रूहुल्ला है? बळा अच्छा नाम है।" मुझे कभी ख्याल भी नही आया था कि यार लोग राहुला (Rahula) को रुहुल्ला (Ruhulla) बना डालेंगे। मुझे बाज वक्त दिक्कत होती थी अपना नाम समझानेमें, क्योंकि राहुला ओीरानी लोगोंके लिये कुछ अर्थ नही रखता। मैंने डाक्टर अहमदको अपने दिलमें धन्यवाद दिया कि अुन्होंने मेरी अेक कठिनाओीको दूर कर दिया। अुन्होंने रूहुल्ला (अल्लाहकी आत्मा) कहा और मैंने भी सरे तस्लीम खम कर दिया। किन्तु अुनको क्या मालूम था यह हज़रत रूहुल्ला, अल्लाह (ओीश्वर) रूह (आत्मा) दोनों से मुन्किर हैं। डाक्टर अहमदसे सलाह हुओी कि आज नुमायशे-मर्केज़ी (केन्द्रीय नाटकगृह)में ओीरानी नाटक देखा जाय। ठीक वक्तपर हम दोनों वहाँ पहुँच गये। पाँच रियाल देकर सेकेण्ड क्लासका टिकट लिया। आज कोओी छुट्टीका दिन भी

नही था लेकिन भीळकी कुछ मत पूछिये। सेकेण्ड क्लासमें तो हमें किसी तरह जगह मिल गयी लेकिन थर्ड क्लासमें तो बहुतोंको खळा ही रहना पळा।

दर्शकोंकी संख्या दो हजार थी जिनमें चालीस सैकळा स्त्रियाँ थीं और अुनमेंसे बहुतोके सिरपर अब भी काली चादरें थी, यद्यपि मुँह ढका न था। अुनके लिये अलग बैठनेका कोई अिन्तज़ाम न था। वे भी पुरुषोंकी बगलमें बैठी थीं। रंगमंचपर अेक छोटी-सी छत थी। दर्शक लोग खुले आँगनमें बैठे थे। मैं बहुत चाहता था कि किसी ऐतिहासिक नाटकको देखूँ। कुछ ही दिन पहले कोरोश बुजुर्ग अैतिहासिक नाटक खेला जा चुका था किन्तु मैं अुसे न देख सका। आजका नाटक था "मेह्रे-गियाह" (प्रेम बूटी)। पात्रोंमें स्त्री पुरुष दोनों थे। अुसके साथ यूरोपियन नृत्य और वाद्य था। पहले अंकमें फ़ैशनेबुल बीबीकी फरमाअिशें और अुससे धीरे-धीरे पतिका अूब जाना दिखलाया गया था। दूसरे अंकमें था, बीबीका वशीकरण-बूटीके लिये हैरान होना। अंतमें अेक ज्योतिषी (फालगीर) द्वारा विषैली बूटी प्राप्त करना जिसके प्रयोगसे पति का पागल हो जाना। नायिकाका पार्ट लोरिता नामक अेक आर्मेनियन सुन्दरीने बळी खूबीके साथ किया था; लेकिन तो भी सारे नाटकको देखकर दर्शककी सहानुभूति पागल पतिकी ओर हो रही थी। थोळा विश्राम कर फिर दूसरा नाटक आरम्भ हुआ। नाटकका नाम स्मरण नहीं। अेक स्त्री किसी जारके साथ पकळी जाती है। पतिके धमकानेपर जार अुसको शिक्षा देता है, समझाना चाहता है और कहता है—अरे मियाँ दुनियाका यही कायदा है। फिर दोनों सलाह कर पिटपिटा मुर्दा हो जाते हैं। फिर स्त्री अेक तीसरे जारको बुला लाती है और तब दोनों मुर्दे अुठ खळे होते हैं।

दोनों ही नाटक दर्शकके दिलमें स्त्रियोंके प्रति घृणा और अविश्वास पैदा करनेवाले थे। शताब्दियोंके कठोर कारागारके बाद जब आज अीरानमें स्त्रियोंको कुछ स्वतन्त्रता मिलने लगी है, अुस समय अैसे

नाटकोंका खेला जाना राष्ट्रीय दृष्टिसे अच्छा नहीं कहा जा सकता; लेकिन मालूम नहीं क्यों सरकार अैसे नाटकोंको खेलने देती है।

६—मशहद को

२८ सितम्बरको सवेरे जाकर हम मशहदका जावाज़ ले आये। शामको ३६ रियाल (छ रुपये) में मशहदका टिकट भी कटवा लाये। हमारी मोटर बस साढ़े आठ बजे रातको रवाना हुअी। बैठनेको जगह ड्राअिवरके पास मिली। लेकिन न वहाँ आगे पैर रखनेकी जगह थी और न पीछे अुठँघनेकी लकळी ही थी। अिस चार दिनकी यात्रामें औरानकी यात्राका हमें आखिरी शासन मिल गया। दो बजे रात तक हम बराबर चलते रहे। फिर ज़ाबून गाँवमें विश्रामके लिये ठहर गये। मुसाफ़िरखानेमें धरती-पर सोनेकी जगह मिली। दूसरे दिन (२९ सितम्बर)को नाश्तेके बाद फिर रवाना हुअे। हमारा रास्ता चढ़ाअीका था। मोटरकी सनसनाहटसे सारा पहाळ गूँज रहा था। हमें अेक बळा डाँडा पार करना पळा। अुतराअी अुतरकर साढ़े आठ बजे फ़ीरोज़कुल कस्बेमें पहुँचे। अच्छी खासी बस्ती है। कअी दुकानें हैं। सर्दे और अंगूर खूब सस्ते बिक रहे थे। मैंकदा (शराबखाना) का साअिनबोर्ड खूब सजा हुआ था। पहले औरान में शराब पीनेपर बळी रुकावट थी; क्योंकि वह अिस्लामके खिलाफ है। यद्यपि अिसका यह मतलब नहीं था, कि, अुस वक्त लोग शराब पीते नहीं थे। अब सरकारकी ओरसे कोअी रुकावट नहीं। पासमें अेक छोटी नदी बह रही है। घाट ही लोगोके पाखानेकी जगह है। मालूम हुआ अिस बातमें औरान भी हिन्दुस्तानका साथी है। दूकानदारोंमें कितने आर्मेनियन ही हैं।

भोजन करनेके बाद हम फिर रवाना हुये। सिर्फ अेक जगह पहाळमें कुछ छोटे-छोटे देवदार दिखायी पळे। अनुमान होता था हम तिब्बतमें घूम रहे हैं। वही नंगे छोटे पहाळ। वही निर्जन चौळे मैदान, वही भेळोंके झुंड। हाँ, यहाँ सभी भेळें दुम्बा जातिकी हैं। भेळ चरानेवाले गडेरिये भी

अपनी छज्जेदार टोपियोंसे बतला रहे थे कि, सारे ओीराननें शाह पहलवीके हुक्मको मान लिया है। तिब्बतकी तरह यहाँ भी गाँवोंमें सफेदा और बीरीके वृक्ष दिखायी पळते थे। हमारी मोटरबसमें अेक बढ़े किसान चल रहे थे। अुमर पूछनेपर चहल्-वो-पंजाह (४०+५०=९०) में कोओी अेक वर्ष भी कम कहता, तो नाराज़ हो जाते थे। अेक बालिश्त लम्बी दाढ़ीके सभी बाल ही सपेद न हो गये थे; बल्कि भौंओंमें भी कोओी कोओी बाल मुश्किलसे काला दिखायी पळता था। शरीर खूब लम्बा-चौळा और चेहरेसे भोला-भालापन टपकता था। यह सब होते हुये भी क्या मजाल कि, अेक घंटे भी अुनके सिरसे हैट उतर जाय। अुस नब्बे वर्षके बूढ़े लूरको देखकर मुझे यह ठीक मालूम हो गया कि, ओीरानमें हवाका रुख किस ओर है। बसम का जोत (Pass) जिसको हम अब पार करने जा रहे थे, जाळेमें हफ्तों बर्फ़से रुका रहता है।

दोपहर बाद हम शेमरानमें पहुँचे। यहाँसे सूबा खुरासान शुरू होता है। शेमरान अेक बळे विस्तृत मैदानमें बसा हुआ है। समुद्र-तलसे ४००० फ़ीट अूँचा है। बस्ती बळी नही है; लेकिन यहाँ भी बिजली लगी हुओी है। पैट्रोलके सस्ता होने और मशीनके अूपर अधिक कर न होनेसे ओीरानके छोटे-छोटे कस्बोंमें बिजलीका लगाना आसान हो सका है। शेमरानमें मिट्टीके तेलके कुएँ खोदे जा रहे हैं। और शायद आगे चलकर अिधर भी तेलका विशाल हरा-भरा शहर बस जाय। शेमरानकी जामा-मस्जिद बहुत पुरानी अिमारत है। जिसे अमीर अजल बख्तियारने (१८३७ ओी०)में बनवाया था।

ओीरानमें मशहदका वही स्थान है, जो भारतमें वाराणसीका। शिया लोगोंके बारह अिमामोंमेंसे अेक अिमाम रजा अत्याचारियोंके हाथसे यही शहीद हुये थे। अुनकी समाधि होनेके कारण मशहद (शहीद होनेकी जगह) अितना पवित्र माना जाता है। हमारे सहयात्री स्त्री-पुरुषोंमें अधिकांश अिसी तीर्थकी ज़ियारतके लिये जा रहे थे। रास्ते भर
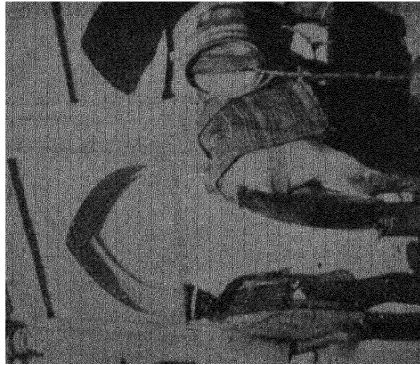
मशहद—टोपधारी भिश्ती
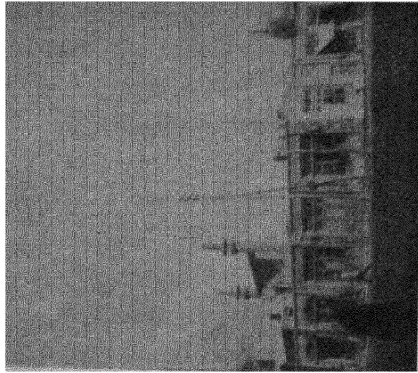
मशहद—ज़ियारतगाह

श्रद्धालु लोग अिमाम रज़ाकी जय मनाते जा रहे थे। हमारे साथियोंमें दो मुल्ले थे। अुनमें अेक बिचारे बहुत ख्याल नही करते थे; लेकिन दूसरे सज्जन अपनी नमाज़की कळी पाबन्दी दिखाना चाहते थे। दोपहरके वक्त अेक जगह मोटर खळी हुअी। चाय पीकर तुरन्त चल देना था; लेकिन मुल्ला साहब हाथ-मुँह धोकर नमाज़ की तैयारी करने लगे। ड्राअिवरको थोळा रुकना पळा। मुल्ला साहबने पहले भी कुछ अैसा किया था। अुस दिन ड्राअिवर बहुत नाराज़ हो गया। अुसने कहा—"खबरदार, नमाज़-अुमाज़के लिये हमारी मोटर मत खळी कराओ, नही तो हम छोळकर चले जायँगे!" बेचारे हसरत भरी निगाहसे अपने सहयात्रियोंकी ओर देखते रहे; लेकिन कोअी अुनकी मददके लिये तैयार न था। मनमें कुढ़ते रहे देखो, अिन लोगोंके मनमें जरा भी खुदाका खौफ़ नही। अुसके बाद सारी यात्रामें फिर अुन्होंने नीचे अुतरकर नमाज पढ़नेका हठ नहीं किया। मेरी सहानुभूति उस बेचारे धर्मभीरु मुल्लाकी तरफ़ थी। छै बजेसे लेकर दो बजे रात तक तो मोटर दौळती ही रहती थी। बीचमें जलपान और भोजनके लिये खळी ज़रूर होती; लेकिन नमाज़को देखकर नही। पाठक समझते ही होंगे कि, दो बजे रातसे छै बजे सुबह तक का वक़्त अल्लाह मियाँके सोनेका समय है। अुस वक्त तो फिरिश्तोंको भी अन्तःपुरमें आनेका हुक्म नही; फिर बिचारा गरीब मुल्ला क्या करे?

मुझे बळी हँसी आती थी, जब मैने ड्राअिवरकी घुळकीके बाद दूसरे बूढ़े मुल्लेको बेंचपर बैठे ही बैठे सिर कान छूकर नमाज़ अदा करते देखा। वहाँ ज़मीन तक सिर पहुँचानेकी गुंजायश ही नहीं थी। और यात्री-यात्रिणियाँ तो मज़े में थीं। दोनों मुल्ले हैटधारी मुछमुंडे ड्राअिवर को ज़रूर शैतानकी औलाद कहते होंगे। मै न नमाज़ ही पढ़ता था और न कभी सहयात्रियोंके अल्लाहो-अकबर और सलवातमें ही शामिल होता था। अिससे अुन लोगोंको तो ज़रूर ही मालूम हो गया होगा कि, मैं अरबके पैगम्बरका पैरोकार नहीं हूँ। अेक बार बूढ़े मुल्लेने पूछा भी—आप ज़रथुस्त्री

तो नहीं हैं ? मैंने हुं कर दिया। समझा बौद्ध कहनेपर घंटों माथा-पच्ची करनी पळेगी। आखिर आर्यधर्मके नाते, हैं भी तो दोनों धर्म-भाई।

रातको दो बजे हम शाहरूदमें जाकर सोये। यहीसे खुरासानका सूबा शुरू होता है। शाहरूद अच्छा बाज़ार है। मोटरोंके ठहरनेकी बस्तियों-में गाराज बने हुये हैं, जिनमें गाळी छोळ दी जाती है। यहीं मुसाफ़िरोके ठहरनेके लिये कोठरियाँ भी है। किराया बिल्कुल नाम मात्रका था। इसमें शक नही, मुसाफिरोंको इन गाराजों और सस्ते मुसाफिरखानोके कारण बहुत आराम होता है। इनके बिना तो लारीवाले मुसाफिरोको बहुत कष्ट होता।

३० तारीखको हम आठ बजे फिर रवाने हुये। रास्ता वैसा ही निर्जन, पहाळी था। एक जनशून्य स्थानमे मियान-दस्त (कान्तार-मध्य) नामक किला है। इसे शाह अब्बासने बनवाया था। कुछ और आगे चलकर अब्बासाबाद मिला। यह अच्छा खासा गॉव है। मुसाफिरोंको टिकानेके लिये गाँवसे बाहर सळकके किनारे गाराज बने हुये हैं। बैठनेके लिये ज़मीन-पर चटाइयॉ थी। हमें यहाँ भोजन करना था। चावल, हाथीके कान जैसी रोटी, कबाब और प्याजके टुकड़ोके साथ हरी पत्ती। कबाबसे हिन्दुस्तानी कबाब मत समझ जाइये। पहलेपहल हम एक होटलमें भोजनकी सूचीमे चावल और कबाब देखकर फळक उठे। समझा अब हिन्दुस्तानका कबाब मिलेगा। लेकिन जब वहाँ तस्तरीमें रखकर आया, तो देखा मांसके टुकळेको किसी भोथी चीज़से दो-चार बार कूट दिया गया है, और तवेपर रखकर थोळी-सी आग दिखला दी गई है। नमक को छोळ उसमें कुछ नही था। हमारे एक हिन्दुस्तानी मुसल्मान तीर्थयात्री भाईने तो एक बार कहा था—"खाना और गाना हिन्दुस्तान ही में है। ईरानी तो गानेके नामपर झूठ-मूठ गला फाळते हैं। और खानेमें मिर्च-मसालेका नाम नहीं।" गानेमें तो मैं भी उनसे सहमत था। सचमुच ही जब फ़ारसीके शेरों और बैतोंको उतना अच्छी तरहसे हिन्दुस्तानी गायकोंको मैं गाते

एक ईरानी गाँव
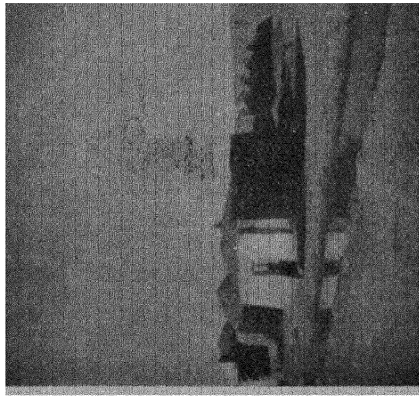
वीराने में
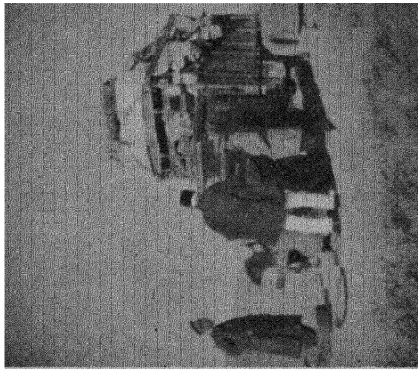
सुनता था, तो समझता था—दूसरे देशके लोग अिन गज़लोंको यदि अितना अच्छी तरहसे गा रहे हैं, तो खुद अीरानमें अिन्हें कैसा गाया जाता होगा। यहाँ आकर अुसे अुल्टा ही देखा। मसालेदार मांसका अुतना प्रेमी तो मैं नही हूँ, तो भी संस्कृतके पुराने काव्योंमें मसालोका नाम न देखकर मैं समझ रहा था कि, मुसलमानोंकी कृपासे ही यह स्वादिष्ट भोजन भारतमें पहुँचा है। कमसे कम अितना तो ज़रूर समझता था कि, मसालेदार मांससे मुसलमानोंका घनिष्ट सम्बन्ध है। लेकिन यह सब ख्याल गलत निकला। मालूम होता है, मसाला भारतीयोंका ही आविष्कार है। पथ-प्रदर्शक पुस्तकमें चिळियाके मांसको निहायत ही सस्ता लिखा था; लेकिन वस्तुतः आँख मूँदकर परदेशियोंको लूटना यही अब्बासाबादियोका ध्येय है।

रूससे आते वक्त मैंने कुछ बातोंपर विशेष ध्यान दिया था। मुझे दो तीन बातें रास्तेमें दीख पळी, जो खास अेसियाकी विशेषता हैं। काकेशससे अेसिया शुरू होता है। वही तवेकी रोटी, हिन्दुस्तानी जूतों जैसा जूता और औरतोका घाँघरा शुरू होता है। ककुद-वाली गो-जाति भी वहीसे शुरू होती है। लेकिन खाने और गानेका बे-मजापन और बेसुरापन तब तक चला आता है, जब तक हम बोलान् दर्रेको पार नही करते।

भोजनोपरान्त फिर चले। रातको नौ बजेके करीब शब्जवार पहुँचे। अिसकी अुँचाअी ३११५ फीट और जन-संख्या बीस हज़ार है। १२वीं और १४वी शताब्दीकी यहाँ कुछ अिमारतें हैं। प्रधान सळक अच्छी और साफ़ है। जिस गाराजमें हमारी मोटर खळी हुअी, रोशनीके लिये अुसकी अपनी बिजली पैदा करनेकी मशीन है। कोठरियाँ भी बहुत साफ़ हैं। गाराजके फाटकपर अपना भोजनालय है, जो सफ़ाअी, सामान, सस्तापन और प्रबन्ध सभी दृष्टिसे बहुत अुत्तम है। सारे खानेपर मुझे पाँच आनेसे अधिक खर्च नहीं करना पळा। भोजन संगमर्मरकी मेज़पर बकायदा

यूरोपियन ढंगसे रखा हुआ था। कमरे और चारपाअी आदिको देखकर मन कर रहा था यहीं सो जायँ; लेकिन ड्राअिवर अिसके लिये तैयार नहीं था पलकोंपर दो-दो मन नीदका बोझ लादे हमे फिर रवाना होना पळा। जिस वक्त हम नैशापुर (३९१७ फ़ीट अूँचा जन-संख्या १२ हज़ार) पहुँचे, तो ४॥ बज गये थे। आज रातको सोना बिल्कुल ही नहीं हो सका । गाळी सळकपर खळी हो गयी और जरा देरके लिये बैठे ही बैठे हमने झपकी ली। शहरसे दक्खिन-पूर्व दो मीलपर अुमरखैय्याम की समाधि है। मधु और मधुवालाके अिस प्रेमीकी मधुशालाको देखनेकी बळी अिच्छा थी। अपने अिस राष्ट्रीय कविके लिये अीरानी सरकारको बहुत गौरव है और अुसका अेक वृहद् स्मारक बनानेका कार्य जारी है। लेकिन सूरजके अुगते-अुगते ही ड्राअिवरने "चलो चलो"की जल्दी शुरू की। खैयामकी समाधिको न देखनेका अफ़सोस हमें साथ लेकर चल देना पळा। मोटर लारीकी यात्रा अीरानमें सस्ती है। लेकिन अुसमें यह दोष भी है कि, स्थानोंको देखनेमें आप स्वतंत्र नही हैं। दर असल यात्रा सस्ती भी होगी और अच्छी तरह हो सकेगी, यदि चार साथी हों और अीरानकी सीमाके भीतर घुसते ही टैक्सी रोजानापर ले ली जाय। सबसे अच्छा तो यह है कि चार साथियोंके साथ अपनी मोटर लेकर बलूचिस्तानके रास्ते अीरानमें दाखिल हुआ जाय। सरहद-परसे ही अेक दुभाषिया ले लेनेपर भाषाकी भी दिक्कत नही रहती। हमारे भाअी यूरोपकी सैरका मजा लूटनेमें जो अुतना खर्चकर अुतनी दूर जाते है, वह बात तो हमारे पळोसमें आ गयी है। यदि कोअी समझ-दार भारतीय मुसलमान महीने भर भी अीरान घूम आयेगा, तो वह भारतीय बनकर लौटेगा। यदि कोअी हिन्दू जायगा, तो अपनी कितनी ही मानसिक संकीर्णताओंको दुज्दाबके रेगिस्तानमें छोळकर बोलनके दर्रेमें घुसेगा।

मै मोटरवालेको रुपये भी दे रहा था कि, वह खैयामकी समाधिको

दिखला दे; लेकिन मुरौवत तो मालूम होती है यहाँके ड्राअिवरोंको छू नहीं गयी है। अन्तमें हमें यही कहकर चित्तको सन्तोष देना पळा कि आखिर अुस मधुशालावाले बाबाकी नगरीमे पैर तो रख लिया। जिन खेतोंकी मिट्टीसे खैयामका शरीर बना था अुनसे ही अुत्पन्न अेक खरबूजे (सर्दा) को खानेका भी सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ था। अिस जन्म में तो आशा नही, अिच्छा भी नहीं; किन्तु क्या जाने अुसीके प्रतापसे हमें भी दूसरे जन्ममें छोटा-मोटा खैयाम बननेका मौका मिले। सादी और हाफिज़की जन्मभूमिकी तरह नैशापुर भी प्राकृतिक सौन्दर्यसे वंचित सूखा प्रदेश है। अैसे ही अुजाळ तिब्बतके पहाळोंमें कोयलोके झुण्डोंको बसते देखकर मैंने कहा था—लक्ष्मी अुल्लूको ही बाहन पसन्द करती है। कवि-हृदयके बारेमें भी यही बात ठीक जान पळती है।

१० बजे अेक गाँवमें हम चाय पीनेके लिये ठहरे। वहाँपर दो पारसी सज्जन मिले। अपने कारबारके सिलसिलेमें वह यहाँ आये हुये थे। वृद्ध तो अीरानसे अूब गये थे। झूठ-धोखा, फरेब, बेमुरौवती आदि सभी दुर्गुण अुन्हें अीरानीमें दिखायी पळते थे, अिसलिये अपनेको हिन्दुस्तानी कहना वह अधिक पसन्द करते थे। पुराने अीरान, १० वर्ष पहलेके अीरानको देखें बिना जो आजके अीरानमें घुसेगा अुसपर भी अैसा प्रभाव पळेगा। आजके अीरानियोके प्रति अुसके भीतर वही भाव उत्पन्न होगा। अुसे यह नही मालूम कि, यह वही अीरानी जाति है, जो कायिक, मानसिक, वाचिक, सत्यता (पिन्दार-नेक, गुफ्तार-नेक, करदार-नेक)का पाठ जबानी ही नही पढ़ती थी, बल्कि ठीक अुसीके अनुसार आचरण करती थी। यूनानी अुनके कट्टर दुश्मन थे, लेकिन वह भी कहते थे—अीरानी बच्चा झूठ बोलना नहीं जनता। अिसी तरहके और भी सद्गुण अीरानियोंमें थे। अिससे मालूम होता है कि, ये दुर्गुण अीरानियोंमें स्वाभाविक नहीं हैं। ये पीछे आये हैं। मेरी समझमें तो अिसका कारण अरबों द्वारा अीरानियोंकी अपनी स्वतन्त्रताके साथ सभ्यताका भी खोया जाना है। यदि कोअी

समुन्नत जाति अपनी सभ्यताको अेक-बअेक् छोळ देनेपर मजबूर कर दी जाये, तो अुसका यही परिणाम होगा। ईरानकी सभ्यता अुस समय बहुत समुन्नत थी; जब असभ्य अरबोंने तलवारके जोर तथा स्वर्गकी अप्सराओंके लोभसे अुत्पन्न अेकताके बलपर ईरानको परास्त किया। यदि ईरान परतन्त्र होता, किन्तु प्राचीन अितिहाससे अुसका विच्छेद न कराया जाता तो जातीय सदाचारकी शक्ति बनी रहती। स्मरण रखना चहिये, किसी जातिका अितिहास और संस्कृति दो-अेक वर्षमें पैदा हुअी चीज़ नहीं है। अुसके विकासमें शताब्दियाँ लगी है। ईरानको अपनी समुन्नत सभ्यतासे सम्बन्ध-विच्छेद कर, अनुन्नत अरबी सभ्यताके साँचेमें ढलनेपर मजबूर किया गया। यद्यपि ईरानियोंने अल्लाहको फ़ारसी रूप देकर खुदा बना लिया, तो भी वह अहुर्मज़्दके स्थानको नही ग्रहण कर सका। अहुर्मज़्दसे विश्वास अुठ जानेपर अल्लाह भी दिलसे अुनके विश्वासका पात्र नही बना। सातवी शताब्दीसे बीसवी शताब्दी तकके ईरानके विचारकोंकी कथाको यदि आप देखें तो मालूम होगा कि, आरम्भकी अेक आध शताब्दियोंको छोळ ईरानी दिमाग हमेशा अरबी पंजेसे निकल भागनेकी कोशिश करता रहा। ख़ैयाम, शम्शतबरीज़, रूमी, हाफिज़, फिर्दौसी सभी उसी बगावतके सेनानायक थे। सचमुच यदि ईरानके अन्तिम बादशाहकी लळकी अिस्लाम-संस्थापकके नातीसे न ब्याही गयी होती, और अिस प्रकार अुन्हें अलीकी संतानमें ईरानी खून दिखलायी नही पड़ता, तो यह बगावत बहुत भयंकर रूप धारण करती। ईरानमें रहते वक्तही ईरानियोंके मानसिक पतनके कारणके बारेमें मैंने अेक जापानी मित्रको यही बात लिखी थी। मैंने अुनसे अुदाहरणके तौरपर कहा था——१८६७ ई०में जिस प्रकार जापानने पश्चिमी बातोंको अपनाना शुरू किया था, यदि अुस वक्त अन्धाधुन्ध पश्चिमकी नकल करता और अुपराज शोतुकूसे अविछिन्न चले आते जापानी संस्कृतिके स्रोतसे अपना तअल्लुक बिलकुल छोळ देता, तो क्या वह बुशिदो (जापानी क्षात्रधर्म)——जिसके बलपर अेक

जापानी अपने राष्ट्र और स्वाभिमानके लिये मृत्युसे मज़ाक करता है—को क़ायम रख पाता।

अुक्त पारसी सज्जन अपने पुराने देश-भाअियोंके प्रति वही भाव रखते थे, जैसा मैंने पीढ़ियोसे युक्तप्रान्तमें बस गये काश्मीरी पंडितोंके खानदानके अेक सज्जनसे काश्मीरमें रहनेवाले जाति-भाअियोंके सम्बन्धमें सुना था। शायद काश्मीरकी अुपत्यकापर भी प्राचीन संस्कृतिसे सभी आदमियोंके सम्बन्ध-विच्छेद कर लेनेका बुरा प्रभाव डाला हैं। अिस सम्बन्धमें वर्तमान काश्मीरी और ओीरानी बहुत कुछ समानता रखते हैं। अिसमें शक नही कि, बारह-तेरह सौ वर्षके भीतर जातिमें जो खराबियाँ आ गयी हों, वह अेक-दो वर्षमें नही अुठायी जा सकती। तो भी पिछले १० वर्षोंमें जो अुन्नति हुअी है, और शाह-पहलवीने ओीरानी नौजवानोंको राष्ट्रीयताका जो पाठ पढ़ाया है, अुससे आशा होती है कि, यदि ओीरान अिसी तरह अग्रसर होता रहा, तो अपने पुराने जातीय गुणोसे फिर युक्त हो जायगा।

वृद्ध पारसीके तरुण सारथी अुतने अूबे हुये नही थे। अुनके दिलमें जरथुस्त्र और दारयोशके ओीरानके प्रति प्रेम भी था और वह मानते थे कि, ओीरानमें वस्तुतः कितने ही सुधार हुये है। शाह पहलवीके तो वह अत्यन्त प्रशंसक थे। कह रहे थे, यदि शाहको दो-चार और अपने अैसे आदर्शवादी मिल गये होते, तो ओीरानमें क्यासे क्या हो जाता। कास्पियन समुद्रसे फ़ारसकी खाड़ी तक रेल निकालनेका जो काम हो रहा है, अुससे वह बहुत असन्तोष प्रकट कर रहे थे। और अिसमें मैं भी अुनसे सहमत था। यह लम्बी रेल ओीरानकी अुत्तरी सीमाको दक्षिणी सीमासे मिलायेंगी। सारे रास्तेको पहाळ काटकर बनाना पळेगा, अिसलिये खर्च कअी गुना होगा अिसमें सन्देह ही क्या? ओीरानमें गाँव बहुत दूर-दूरपर बसे हैं; अिसलिये मुसाफ़िर और माल भी अुतना नही मिल सकेगा, कि रेलका खर्च निकल आये। यह झूठमूठका सुफ़ेद हाथी बाँधना है। पक्की

सळकोंके लिये अीराननें आदर्श-भूमि पायी है और सळकोंका ताँता अब भी सारे देशमें बिछ गया है। सळकें अितनी मज़बूत है कि, ९-९, १०-१० टनकी लारियाँ रात-दिन चलती रहती हैं। दुनियामें दूसरी जगहोंपर रेलोंको लारियोंका मुकाबिला करना मुश्किल हो रहा है। फिर अीरानकी रेल तो अुनका मुकाबिला हरगिज़ नही कर सकती। अिस प्रकार रेलवे पर लगनेवाला अितना रुपया देशके लिये लाभ-दायक नही है। पारसी तरुणका कहना था कि, ये सब बातें अधिकारी लोग बादशाहसे नहीं कहते; नही तो वे अिस ख्यालको छोळ देते। वे यह भी कह रहे थे कि, वर्तमान शासनके आरम्भिक तीन-चार वर्षों तक प्रधान अधिकारियोंने बहुत अिमानदारीसे काम किया; लेकिन अब अुनमेंसे कितने ही लोभमें पळ गये हैं और रेल-निर्माणको तो अपने लिये लाभकी चीज़ समझते हैं। सचमुच जितना रुपया रेलपर खर्च किया जा रहा है, यदि अुसका दशांश अिन सळकोंको दे दिया जाय, तो यही तेरह-तेरह टनकी मोटर पार कराया करेंगी।

मशहद—आगे मशहद (३१९७ फ़ीट अूँचा जन-संख्या १,३०,०००) के रास्तेमें कोअी विशेष बात नही थी। अेक पहाळके घुमावको पार करते ही दूरसे हमें मशहद शहर दिखायी पळने लगा। आठ बजे अिमाम रज़ाकी समाधिके सुनहले गन्धोलाको देखते ही तीर्थ-वासी लोग अल्ला हो अकबर! कहने लगे। अेक जगह मोटरके थोळा रुकनेपर यात्रियोंने पत्थरोंका गुम्बद बनाना शुरू किया। अिमाम रजाकी जय मनायी जाने लगी। शहर अेक विशाल मैदानी-भूमिमें बसा हुआ है। बाग और वृक्ष शहरके ही आस-पासमें हैं। पहाळ दूर-दूर हैं। शहरसे बाहर पासपोर्ट देखा गया। फिर हम शहरमें पहुँचे। छै रियाल (चौदह आना) रोज़ानापर मेहमान-खाना-मिल्ली (राष्ट्रीय होटल)में अेक कमरा लिया।

मशहद खुरासान प्रान्तकी राजधानी है। अिसकी सळकें तेहरानकी तरह सुन्दर और प्रशस्त हैं। जियारतगाह (प्रधान तीर्थ)के चारों ओर

खूब चौळी सळक बनी हुअी है और वह सारे शहरमें फैली हुअी है। मशहद सारी दुनियाके शिया मुसलमानोंके लिये करबलाके बाद दूसरा पवित्र स्थान है। वहाँके पण्डे हिन्दुस्तान तक यात्रियोंको ले जानेके लिये आते है। शहरके चारों ओर खायीं और चहारदीवारी है, जो अब बहुत जगह टूट गयी है। पुरानी दूकानोंको पुरानें महल्लेमें छोळकर, बळी बळी सळकों पर नयी तरहकी दुकानें खुल गयी है। अीरानी कालीन और खुरासानकी खानोंका फीरोज़ा दुनिया भरमें मशहूर है। प्रधान सळक दक्षिण छोरसे अुत्तर छोर तक चली गयी है। जियारतके अूपरवाला भाग बाला-खयाबान कहा जाता है और नीचेवाला पाँअी-खयाबान (पायतानेकी सळक) कहा जाता है। हर साल पचासों हजार यात्री भारत, अफगानिस्तानके कोने-कोनेसे यहाँ आते हैं। पहले रूससे भी काफी यात्री आते थे, लेकिन बोलशविकोंने जब अल्लाह मियाँको ही भगा दिया, तो वहाँके लोग तीर्थ-यात्रा करने क्यों आये? शहरके पश्चिम तरफ बहिस्तान-शाहेरजा आखिरी और नयी अिमारत है। सळकोंकी और चौरस्तोंकी बनावट कह रही थी कि, ये पहलवी युगकी चीज़ें हैं। फिर यह समझनेमें कठिनाअी नहीं कि, अिनके बनानेमें कितनी कब्रें और मस्जिदोंका बलिदान दिया गया है। लोग बतला रहे थे कि, जियारतगाहके आसपासकी भूमि सिर्फ़ कब्रोंसे ही भरी हुअी थी और सळकोंके लिये वहाँ जगह कहाँ थी? खामखाह तो नहीं; लेकिन जो भी मस्जिद सळकोमें पळी अुन्हें तोळकर फेंका गया। सळकें जिसमें सुन्दर मालूम हों अिसके लिये खाली जगहोंपर सरकारने मेहराबदार दीवार खळा कर सुफ़ेदी पुतवा दी है। जिन लोगोंकी ज़मीन सळकमें आ गयी है, अुन लोगोंको भी रुपया दिलवाया गया है। जिनकी ज़मीन पहले आळमें होनेसे कम कीमत रखती थी, सळकपर आ जानेसे अुसका दाम कअी गुना अधिक बढ़ गया। जियारतकी पश्चिमवाली सळकपर अेक आधी गिरी मस्जिदको मैंने भी देखा था। अेक हिन्दुस्तानी तीर्थयात्री तो कब्रोंकी दुर्दशा देखकर कह रहे थे कि, शाह रजा पिछले साल तुर्की गया था उसने

कमालपाशासे मिलकर सलाह की है कि, मुर्दोंको जला देना चाहिये। और अिसके सबूतमें वह कह रहे थे कि, अिसीलिये सम्बन्धियोंसे सरकार मुर्देको ले लेती है। कोअी आदमी अपने मुर्देको अपने आप दफन नहीं कर सकता। दफन करनेवाला महक्मा खबर देता है कि, किस जगह लाशको दफनाया जायगा। फिर सम्बन्धी चाहें तो जाकर वहाँ फातेहा कर सकते है। साथीका कहना था कि, अिसी लक्ष्यको लेकर यह सब हो रहा है। जब लाशकी सद्गतिका काम सरकारने अपने हाथमें ले लिया, तो दफनानेकी जगह जला देना उसके लिये आसान हो जायगा।

यद्यपि हैट पहननेका विरोध कुछ और जगहोंपर हुआ था; लेकिन और जगह राष्ट्रीय भावोंकी प्रबलता और मुल्लोंकी दुर्बलताके कारण विरोध अधिक जोर नही पकळ सका। मशहद ओीरानकी काशी है। यहाँके मुल्लोंने समझा कि हम जो चाहेगे कर लेंगें। मशहद अफगानके सरहदके करीब है और मुल्लोंने अमानुल्लाके साथ जैसा किया गया, अुससे समझते थे कि, वह भी शाह रजाके साथ वैसाही कर सकते है। लेकिन शाह रजा दूसरी मिट्टीका बना हुआ है। वह खूब दूर तक सोचता है और मौका पळनेपर फौलादी पंजा दिखानेसे बाज नही आता। मुल्ले जियारतगाहमें अिसके लिये सभा करने लगे। गवर्नरने मना किया लेकिन वहाँ कौन माननेवाला था। अन्तमे गवर्नरने तेहरानको फोन किया। हुकुम हुआ कि समझानेसे न समझें, तो कमजोरी मत दिखलाओ, पक्का पाठ पढ़ा दो। तेहरानसे मशहद तार, बेतारके तार और हवाओी जहाज़ तीनों प्रकारसे सम्बद्ध है; लेकिन अुक्त आन्दोलन कुछ पण्डे-पुजारियोंहीका था। जनताको अभी मुल्ले वर्गला नही सके थे। जियारतमें अिकट्ठे हुए अिन मजहबके दीवानों के साथ कैसा बर्ताव किया गया, अिसको लोग कअी तरहसे कहते है। अेक सज्जन तो कह रहे थे कि, जियारतके सभी दरवाज़ोंपर तोप लगा दी गअी थी और सिपाहियोंने भीतर जाकर फायर करना शुरू किया। अिकट्ठे हुये लोगोंमें से—जिनकी तायदाद तीन हज़ारसे अधिक होगी—अेक भी बचने नहीं

पाया। जब लारियोंपर लाद लाद कर लाशोंको गाळनेके लिये ले जाया जाने लगा तो कुछ घायलोंने कहा कि, हम घायल हैं। सिपाहियोंने अुत्तर दिया—“कोअी परवाह नहीं, बादशाहका हुकुम है। अल्लाह और फिरिश्ते तुमपर रहम करेंगे।” दूसरे सज्जनका कहना था—“हजार डेढ़ हजार आदमी मरे होंगे।” तीसरे सज्जनका कहना था—“चालीस पचासके करीब मरे होंगे बाकी सब भाग गये।” सरकार तो यह चाहती ही थी कि, लोग मुल्लोके हाथमें न जायँ। मुल्लोके अिस प्रकार दुम दबाकर भाग जानेसे सरकारका काम पूरा होगया। जियारतके भीतर हर अेक अीरानीको हैट लगाकर जाना पळता है। अेक हिन्दुस्तानी यात्री—जिन्हें विदेशी होनेके कारण पगळी बाँधकर जानेका अधिकार था—बळे क्षोभके साथ कह रहे थे कि, अिसको तो गिरजा बना दिया गया। लोग टोपी टाँगकर नंगे सिर जाते हैं। वह यह भी कह रहे रहे थे कि जियारतकी आमदनीको तो सरकारने अपने हाथमें ले ही लिया है, साथ ही जियारतमें जो करोळोंके हीरा, मोती, जवाहरात तथा दूसरी बहुमूल्य वस्तुअें थीं, अुन्हें भी सरकार अुठा ले गयी। अेक दूसरे सज्जनको जब स्मरण दिलाया कि अब भी कुछ सोने चाँदीकी चीजें हैं, तो गुस्सेमें आकर अुन्होंने फट अुत्तर दिया—“अजी जनाब ! वह हम हिन्दुस्तानियोंको अुल्लू बनानेके लिये रखे हुअे हैं। अगर कोअी भी चीज न रखी जाती, तो लोग चढ़ावा चढ़ाना छोळ देते, अिसीलिये यह सब किया गया है।”

पुराना बाजार छतके नीचे नीचे जानेवाली अेक सळकके किनारे बसा हुआ है। बागे-मिल्ली (राष्ट्रीय उद्यान)में शामको बळी भीळ रहती है। अुसीमें अेक चायखाना है, जिसके आँगनमें कई सौ कुर्सियाँ लगी हुअी हैं। सर और चायपान करनेवालोंमें पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्रियाँ अधिक होती हैं। सिनेमा, थियेटर तथा दूसरे मनबहलावके साधन मशहदमें भी तेहरानसे ही हैं। अेक दिन हम हम्माम (स्नानागार)में स्नान करने गये थे। शायद चार आना पैसा देना पळा था; लेकिन अुसमें गरम पानी, नहाने

की जगह, तथा सामान ही शामिल न था; बल्कि नौकरने आकर शरीरको खूब मल मलकर धोया। हमारे होटलके नौकरोंमें दो औरतें और अेक मर्द रूसी थे। अिन्हींकी तरह हजारों और रूसी मशहदमें रहते है, जो रूसी क्रान्तिके समय भाग आये हैं। कोओी साग-भाजीकी दूकान करते है, कोओी रोटी बनाकर बेचते हैं। दो तारीखको अिसी होटलमें अेक घटना घटी। मैं अपना मनीबेग ओवरकोटके पाकेटमें रखकर पाखाना चला गया पाखाना अुसी तल्लेपर दस कदम हटकर था। मेरे लौटनेमे तीन-चार मिनटसे अधिक नही लगे होगे। लौटकर आकर देखता हूँ कि, मनीबेग गायब है। अुसमें सौ रुपयेंके करीबके अमेरिकन डालर और ओीरानी सिक्के थे। सबसे कीमती चीज़ थी, रूसी यात्रामें नये मित्र बने कुछ रूसी सज्जनोके नाम और पत्र, जिन्हें मै पत्र लिखनेका वचन दे आया था। आमतौरसे दरवाजा बन्द करने तथा ताला लगानेमें मै बळी सावधानी रखता हूँ। अैसी जगहपर भी जहाँ चीज़के खो जानेका कुछ डर नही, ताला लगा देना मैं अुचित समझता हूँ। मैं दूसरोंको कहा करता था कि, अपनी असावधानीसे किसीको चोरी करने का मौका देकर पीछेसे निर्दोष आदमियो पर शक करना अच्छा काम नही है। लेकिन मैंने स्वयं गलती की। अपने मनको समझा लेनेमें मुझे देर नहीं लगी। अपनी असावधानीका दण्ड मिलना ही चाहिये। आगेके लिये अिससे शिक्षा लेना, बस यही कर्तव्य था। होटलके मालिकको खबर दी गयी। अुन्होंने पूछा, आपका किसपर सन्देह है? वह रूसी झाड़ू देनेवाली औरत तो अिधर नही आओी थी? मैंने कहा—"मै किसीपर सन्देह करनेके लिये तैयार नहीं हूँ। और भी तो कितने लोग अिस बरामदेसे गुज़रते रहते है"।

फिर्दौसीकी समाधि—दो अक्टूबरको ढाओी तोमान (तीन रुपये) पर अेक फिटिन (दुरुस्की) करके हम पौन बजे तूसके लिये रवाना हुअे। तूस ओीरानका बहुत पुराना शहर था, जो मशहदकी प्रसिद्धिके पहले ओीरानके सबसे बळे शहरोंमेंसे था। ओीरानके राष्ट्रीय कवि और शाह-

नामाके अमर कर्ता फिर्दौसी यहीपर पैदा हुअे थे और हम फिर्दौसीकी समाधिके जियारतके लिये ही जा रहे थे। रास्तेमें दो-चार गाँव मिले। कितनी दूर तक हमारी सळक भूगर्भा नहरके साथ साथ चली। कई मेवोंके सुन्दर और बळे बळे बाग मिले। कपासकी खेती अब भी खळी थी। शहरसे कुछ मील दूर बाहर निकलनेपर बाँअी तरफ़ चीनीका कारखाना दिखाअी पळा। अीरानमे चीनी अधिकतर विदेशसे आया करती है; लेकिन सरकारने चुकन्दरसे चीनी बनानेका कारखाना कायम किया है। सूती, अूनी कारखानोंकी भाँति चीनीके कारखानोंमें भी रूसी तरीका बर्ता जा रहा है।

दो घंटेमें २८ किलोमिटर (प्रायः बीस मील) चलकर तूसमें पहुँचे। पहले अेक छोटा-सा नदीका पुल पळा। अुसके बाद टूटे-फूटे घरोंका अेक गाँव। तूसका विशाल नगर अब वीरान है। मिट्टीकी चहारदीवारी अब भी कही कही मौजूद है। शहरकी भूमिको खेतोके रूपमें परिणत कर दिया गया है। पुरानी अिमारतोंमें तख्त-हारून या सैयदका मकबरा रह गया है। अिमारत अीटकी है। अिसकी नीवमें बळे बळे पत्थर दिअे गअे हैं। गुम्बज अब भी मौजूद है; किन्तु बुरी अवस्थामें है। अिसीके पास आर्क या पुराने किलेका ध्वंस है। नअी सळक सीधे फिर्दौसीकी कब्र तक पहुँचती है। फिर्दौसीकी कब्र और बाग अभी हालमें बनाया गया है। कब्रको खोदकर निकाला गया है और अुसपर रंगबिरंगे संगमर्मरसे अीरानी ढंगकी समाधि बनाअी गअी है। अिमारतकी दीवारपर जळे खम्भोमें बेल आदिकी मूर्तियाँ वैसी ही हैं, जैसे पर्से-पोलिसमें। परदार फिरिश्तोंकी भी मूर्तियाँ हैं। कब्र दक्खिन मुँह है और अुसकी पूर्वी दीवारपर अेक कवितामय लम्बा-चौळा लेख खुदा हुआ है। अिसमें फिर्दौसीकी प्रशंसा की गअी है।

दरवाज़ेकी भीतमें मूर्तियोंकी पाँच पट्टिकायें अुत्कीर्ण हैं। अिनमें दारा आदि अीरानी बुज़ुर्ग—जिनका कि गीत शाहनामामें फिर्दौसीने गाया है—दिखलाये गये हैं। अेक पट्टिकामें पगळी बाँधे किसी राजाका चित्र

है। शायद यह महमूद ग़ज़नवी हो, जिसने प्रतिपद अेक अशर्फ़ी देकर फिर्दौसीसे शाहनामा लिखवाया था। फिर्दौसीको तो सोनेकी अशर्फ़ीकी जगह चाँदीके रुपये ही मिले; किन्तु धर्मान्ध महमूदकी अिस सहायतासे ओीरानको शाहनामाके रूपमें अेक बहुमूल्य रत्न हस्तगत हुआ।

फिर्दौसी

तूस दसवी शताब्दीमे बहुत ही समृद्धशाली नगर था। अफ़ग़ानिस्तान, हिन्दुस्तान, तुर्किस्तान, अरब और यूरोप तकका व्यापार जिस मार्गके द्वारा होता था, वह तूस ही होकर जाता था। अिसलिये अुस वक्त तूसका सितारा चमक रहा था। ओीरान अुससे तीन शताब्दी पहलेही अपनी स्वतंत्रता खो चुका था और अरबी खलीफाकी शासन-दुन्दुभि दुनिया भरमें बज रही थी। ओीरानी सभ्यताके साथ अुसके विद्वान् कलाकार गली-गलीकी खाक छान रहे थे। फिर्दौसीके पूर्वज भी जगह जगह मारे-मारे फिरते यहाँ आकर बस गअे। तूस शहरके पश्चिमी किनारे पर विवरानके वाज नामक गाँवमें ३२९ हिजरी सन्में फिर्दौसीका जन्म हुआ। सासानियोके ज़मानेसे ही तूस लक्ष्मीका ही नहीं सरस्वतीका भी द्वार समझा जाता था। अुस समय सासानी वंशज खुरासानके अधिकारी थे। राष्ट्रीय भावके लिये अधिक गुंजायश समझकर यह लोग मुसलमानोंके शिया सम्प्रदायके अनुयायी थे। फिर्दौसी भी अुसी शिया-सम्प्रदायका माननेवाला था और सिवा अेक-दो छोटी यात्राओके अुसने सारी (८७ साल) जिन्दगी तूसहीमें बिताओी थी।

शताब्दियोसे अरबी शासन और सभ्यताके अत्याचारके कारण ओीरानी सभ्यता बहुत कुछ लुप्त हो चुकी थी। किन्तु अेक बार मज़हबी दीवाने-पनकी लहरके थोळा ढीला पळ जानेपर लोगोंमें फिर, पुराने ओीरानका ख्याल आने लगा। अुस वक्त फिर ओीरानी जाति अपने प्राचीन वैभवकी स्मृतिको जागृत कर रही थी और यह जागृति अपनी भाषा, अुसके साहित्य और अितिहासके पुनरुज्जीवनके रूपमें प्रकट हो रही थी। ओीरानी कवि फारसी

में जहाँ अच्छी अच्छी कवितायें लिखते थे, वहाँ बुज़ुर्गोंकी कहानियोंका भी निर्माण कर रहे थे। अिस्लामके आगमनके पहलेकी पुस्तकोंको तो अरबोंने पहले ही जला-जलाकर अपने हम्माम (स्नानागार) गरम किये थे; किन्तु जो कहानियाँ भूलनेसे बच रही थी, अुन्हींके कुछ छोटे-छोटे संग्रह जमा किये जा रहे थे। फिर्दौसीने अिन्ही संग्रहो और कितनी ही मौखिक कहानियोको लेकर पुराने ओीरानका अितिहास लिखा, जो कि आज शाहनामाके नामसे हमारे यहाँ मौजूद ह। शाहनामाके देखनेसे मालूम होता है कि, अन्तिम समयमें फिर्दौसीकी कमर झुक गअी थी। आँख और कान निर्बल पळ गये थे और अुसके बहुतसे बाल सफ़ेद हो गये थे। अट्ठावन वर्ष तककी अवस्था फिर्दौसीकी चैनसे गुज़री थी; लेकिन अुसके बाद, जैसी आर्थिक दुर्दशा आम तौरसे बीबी, बच्चेवाले साहित्यिकोंकी हुआ करती है, वही फिर्दौसीकी भी हुअी। आज ओीरानका अेक बळा लेखक कहता है—फिर्दौसीकी सबसे बळी सिफ़त यह है कि, अुसने अपनी तमाम जिन्दगी लगाकर अुस कामको पूरा कर दिखाया, जिसमें अुसके दर्जनों स्वदेशी देशाभिमानी कोशिश करके कामयाब न हो सके थे। सुल्तानके वक्तमें शाहनामा बहुत कुछ लिखा जा चुका था और मालूम होता है कि, बाकी हिस्साको पूरा करनेके लिये ही, अिनाम देनेकी बात कही थी। फिर्दौसी ओीरानका अेक महापुरुष है। वह दुनियामें रहते तरह-तरहके कष्ट ही सहता रहा; लेकिन अुसने अपने शरीरका अेक अेक कतरा खून सुखाकर ओीरानी कौमके भव्य अितिहासको लिखा। तारीफ यह, कि अुसने अुस पुराने समयमें भी यह कोशिश की थी कि, शाहनामेमें भरसक अरबी शब्द न आने पायें। शाहनामेकी भाषा शुद्ध फ़ारसी और पहलवी कही जाती है। अुसने शराब और सुराही, ओठों और गेसुओंपर ही अपनी शक्ति नहीं खर्च की। अुसने अपनी अद्‌भुत काव्य-शक्तिको मुर्दा ओीरानी कौमको ज़िन्दा करनेमें लगाया। फिर्दौसी अपने समयसे बहुत पहले पैदा हुआ था। अिसीलिये अुस समय वह ओीरानके देशभक्तोंका वेद न बन सका और अिसके लिअे अुसे हज़ार साल-

तक अिन्तज़ार करना पळा। फिर्दौसीका मज़हब अिस्लाम था, और अपने शाहनामामे वह जिन वीरोके गीत गा रहा था, वह अग्नि-पूजक काफिर थे। लेकिन अुनके वर्णनमें अुसने पक्षपातको सामने तक फटकने न दिया। ४११ हिजरी (किसी-किसीके मतसे ७१६)में जब अुसका देहान्त हुआ, तो अिस महान् राष्ट्रीय कविके कामकी अिज़्ज़त करनेकी बजाये तूसके मुल्लाओंने फतवा दे दिया—काफिरोकी तारीफमे जिन्दगी बितानेवाला फिर्दौसी भी काफिर था। अिसलिये मुसलमानोके कब्रिस्तानमें अुसे जगह नही मिलनी चाहिये। अिस प्रकार फिर्दौसीको अपने घरके बगीचेके भीतरही दफन होना पळा। फिर्दौसीके कामसे भी अधिक जल्दी फिर्दौसीकी कब्र विस्मृतिके गर्भमें चली गअी और पीछे तूस भी वीरान हो गया। ओीरान के देश-भक्तोंको फिर्दौसीकी कब्रका पता लगाना आसान काम नही था। तूसके खॅळहरोके अुस भागको, जहाँ किसी वक्त फिर्दौसीका घर था, कअी जगह खोदा गया और अन्तमे अुन्हे वह कब्र मिल गयी जिसके भीतर अबुल् कासिम फिर्दौसी तूसीका शरीर रखा हुआ था। कब्रपर शिलालेख भी मिला। अिस प्रकार कब्रके सच्ची होनेमे सन्देह नही; तो भी मुझसे अेक मुल्ला साहब कह रहे थे—"अजी यह सब बात गलत है। फिर्दौसीकी कब्र कब की नही गुम हो गअी होगी। रजाशाह और अुसके अनुयायी अिस्लामके दुश्मन ओीरानियोने झूठ-मूठ यह कब्र बनायी है। अिस सारे षड्यन्त्रके भीतर अुनकी यह अिच्छा छिपी हुअी है कि, अिस्लाम ओीरानको छोळकर चला जाय। देखते नही, जिन बुतों(मूर्तियो)की पूजाको हटानेके लिये हज़रत मुहम्मद साहबने कितने कष्ट अुठाये। अिस्लामका सारा अितिहास अिस बातका साक्षी है कि, अुसने मूर्तिपूजाके सम्बन्धमें समझौता करना कभी पसन्द नही किया। देखिये आज फिर्दौसीकी कब्रके दरवाज़ेपर वही बुत बनाअे गअे हैं।" मैंने कहा—"क्यों नही जाकर अुन मूर्तियोको तोळ देते? पलटन क्या अेक हथियारबन्द सिपाही भी तो वहाँ पहरा नही दे रहा है।" अिसपर बेचारे बहाना बनाने लगे। मालूम होता है शाह

तूस—फ़िर्दौसी की समाधि पर मूर्तियाँ
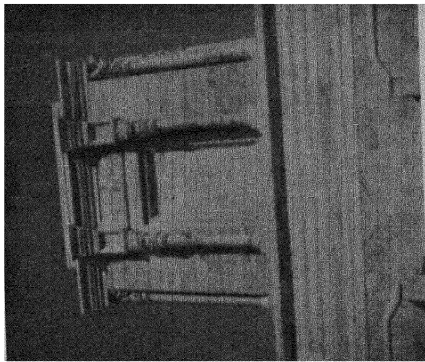
तूस—फ़िर्दौसी की समाधि

पहलवीने मशहदमें मुल्लोंको जो पाठ पढ़ाया है, अुससे अुनकी आँखें खुल गअी हैं।

अक्तूबर सन् १९३४ अीस्वीमें अीरानने फिर्दौसीका जश्न-हजार-साला (सहस्रवार्षिक अुत्सव) मनाया। अुस समय तूसके खँळहर अेक बार फिर आबाद हो गअे। अीरानके ही नही, दुनियाके हरेक हिस्सेसे बळे-बळे विद्वान साहित्यिक और राजनीतिक पुरुष वहाँ अिकट्ठा हुअे थे। अिस अुत्सवमें जापानके आसिकागा, रूसके वोलोत्नीकोफ, अिंगलैंडके कवि ड्रिंकवाटर और सर डेनिसन् रास्, जर्मनीके डाक्टर सार, जूगोस्लावियाके वेरकतारविच, अमेरिकाके डाक्टर गुन्तर, फ़ासके मैसिये मार्से, तुर्कीके नहादबेग आदि बहुतसे नामी-नामी लोग शामिल हुअे थे। हिन्दुस्तानसे निम्न सज्जन गअे थे। आगा मुहम्मद अिस्हाक, प्रोफ़ेसर मुहम्मद ताहेर रिज्वी, प्रोफेसर मुहम्मद हाफ़िज़ (अलीगढ़), मौलवी निज़ामुद्दीन, मौलवी हादी हसन। अिनके अतिरिक्त श्री बहराम गोर अक्लेसरिया, श्रीअूनवाला तथा सर्दार दस्तूर नौशेरवाँ हिन्दुस्तानके पारसियोकी तरफ़से शामिल हुअे थे। पारसी सज्जन अीरानी नातेसे अिस जलसे में शामिल हुअे थे और बाकी सज्जन हिन्दुस्तानकी सभ्यता और संस्कृतिके प्रतिनिधि नही थे। अिस प्रकार यह बळे अफ़सोसकी बात है कि, हिन्दुस्तान फिदासीकी स्मृतिमें अपने सद्भावको प्रर्दाशत न कर सका। यदि देखा जाय तो फिर्दौसी जिस संस्कृतिका गान कर रहा था, वह हिन्दुस्तानी संस्कृतिकी सगी बहन है। अिस प्रकार सगी बहनके अुत्सवमे बहनका अनुपस्थित होना, बहुत खटकता है। हिन्दू-सभा तो प्रगतिविरोधियोंको अिकट्ठा कर हो-हल्ला मचाना ही अपना कर्तव्य समझती है; लेकिन भारतकी राष्ट्रीय सभा तथा वैसी दूसरी संस्थाओंने अपना प्रनिनिधि क्यों नहीं भेजा ?

फिर्दौसीकी कब्रके चारों ओर अेक अच्छा बाग लगा हुआ है। अुसीके भीतर अेक पुस्तकालय भी है। पासमें अेक छोटा सा गाँव है, जिसके

बगीचे फिर्दौसीके बाग तक चले गये हैं। दोपहरकी धूप थी, हम थोळा विश्राम करनेके लिअे पासके बागमें चले गअे। बागवालेने झटसे अेक सुन्दर कालीन बिछा दी और चाय बनानेका आग्रह करने लगा। अुस दोपहरको बिना दूधकी चाय पीनेकी अपेक्षा ओीरानी मीठे खरबूज़े कहीं अच्छे थे; लेकिन अुन लोगोके सामने मीठे ख़रबूजे (सर्दे)की क्या कदर? अुनके लिअे तो चीज जितनी महँगी हो अुतनी ही अच्छी। दो तीन हरे खरबूजे आये। अिनकी अुपरली हरियालीपर जहाँ-तहाँ सफ़ेद पपळी पळी हुओी थी; लेकिन काटनेपर भीतर बिलकुल हरा था। मिठासके बारेमें क्या कहना! खरबूज़ा खाकर थोळा विश्राम किया। दो बजे मशहदके लिये लौट पळे।

अफगान कौंसलके पाससे काबुलका वीसा लेना था। तेहरानमें हमें यहाँ लेनेकी सलाह मिली थी। यहाँ मालूम हुआ कि, तेहरानके राज-दूत काबुल लौट गये हैं। अिस प्रकार अफ़गानके रास्ते लौटनेका ख्याल छोळ देना पळा। मशहदसे सोवियत-सीमा बहुत दूर नहीं है। वहाँसे अस्काबादके रेलवे स्टेशन तक मोटर जाती है और फिर अुस रेलका सम्बन्ध सोवियत तुर्किस्तानकी और जगहों तक चला जाता है। मशहदसे हिरात (अफगानिस्तान) को भी मोटरका रास्ता है और वहाँसे काबुल जाया जा सकता है। मेरी अिच्छा थी कि, अिसी यात्रामें अफगानिस्तानको भी देख लिया जाय; लेकिन वीसाकी गळबळके कारण हम खैबरके दर्रेके रास्ते लौटनेसे वंचित हो गये।

७—भारतको

सात तोमान (प्राय: दस रुपये) दे कर ज़ाहेदान (पुराना नाम दुज़्दाब) का टिकट ले आये। सौभाग्यसे अमेरिकन अेक्सप्रेस कम्पनीके कुछ चेक हमारे पास रखे हुअे थे अिसलिये मनीबेगके चोरी चले जानेपर भी हम आफतमें फँसनेसे बच गये। राष्ट्रीय बैंकमें टामस-कूक, अमेरिकन अेक्सप्रेस कम्पनी तथा दूसरी प्रधान यात्रा कम्पनियोके चेक भुनाये जा सकते हैं। तीन अक्टूबरको नव बजे रातको मोटर चली। अेक माल लादने-की लारी थी अुसका नीचेका आधा हिस्सा मालसे भर दिया गया था। पीछे थोळी जगह छत तक सामानसे भरी हुअी थी और बाकी दो हाथ अूँची जगहपर अट्ठारह आदमियोंको बैठाया गया।

सहयात्रियोमें (पंजाबके, दीनानगर) गुरुदासपुरके पंडित मस्तराम शर्मा, अुनकी पत्नी, छोटासा बच्चा और बूआ थी। अम्बालाके श्री आलमदाद हुसेन तो अैसे हँसमुख मिले कि अुनके कारण यात्राकी तकलीफ़ मालूम ही नही होने पाती थी। अिनके अतिरिक्त अेक गुजरातीमुल्ला-परिवार था—जिसमें अुनकी लळकी, स्त्री और दामाद भी शामिल थे—मशहदकी जियारत कर भारत लौट रहे थे। हम नौ भारतीयोंके अतिरिक्त नौ ही अीरानी भी थे। नौ बजे चलने पर पहले तो यही सवाल पेश रहा कि बैठा कैसे जाय। बैठनेके बाद नीद लेनेका प्रश्न बहुत टेढ़ा था। बहुत सोच विचारकर लोगोको फैसला करना पळा कि शिरको छोळकर अपने बाकी शरीरको अपनी वैयक्तिक सम्पत्ति नही समझना चाहिअे। फिर अेकके अूपर अेक पळकर लोगोंने सोनेका रास्ता बना लिया। रास्ता तो बनानेको बना लिया पर छतके अूपर भी अितना माल लदा हुआ था कि अेक शहतीरने जवाब दे दिया और हर वक्त डर लगा रहता था कि कहीं छत सामान लिये दिये हम लोगोंपर न आन पळे। अब मालूम हो गया कि हम तेहरानसे

आते वक्तकी तकलीफसे नाहक डर गये थे। अिस यात्राने तो पूर्णाहुति करदी। गाळीपर लिखा हुआ था "मखसूस हम्लबार" (सिर्फ़ माल लादनेके लिये) झूठ-मूठको हम अपनेको फरक समझते थे। तीन अक्टूबरसे सात अक्टूबर तक हमें बोझा बनकर लद फदकर चलना पळा। सरकारसे जो हो सकता था अुसने किया। सवारीके लिअे क्यो कोअी पाबन्दी करावे, जब कि मोटरवालों ने पुलिसको मुफ्त सवारी दे रक्खी थी। यहाँ कौन पूछनेवाला था कि, कानूनके विरुद्ध काम किया जा रहा है।

रातको अेक जगह मोटर बिगळ गयी। ताकतसे दूना तिगुना माल लादनेपर भी अगर मोटर न बिगळे तो आश्चर्य्य ही क्या? खैर कोअी पुरजा नही टूटा और थोळी देरमे मोटरकी मरम्मत हो गयी। रातको सोनेके लिये कही मोटर खळी नही हुअी। सबरे सर्दी खूब मालूम हो रही थी। पहाळ यद्यपि नंगे थे पर नज़दीक-नज़दीक थे। दूर-दूरपर गॉव मिलते थे। अेक बजे तुर्बते-हैदरी पहुँचे। बारह हज़ार आबादीका यह अेक कस्बा है। यहॉ भी मुसाफ़िरोके ठहरनेके लिअे अच्छी साफ़ कोठरियॉ हैं; लेकिन विर्जन्द छोळकर ड्राअिवरने कही मुसाफ़िरोके सोनेका ख्याल नही किया। दिन भरमें हम तीन-चार बार खाने-पीनेके लिअे मोटरसे अुतर जाते थे। बाकी चौबीस घंटे अुसीमे बैठा रहना पळता था।

मोटरसे बाहर देखनेका रास्ता भी नही था और देखने पर भी वही सूखे नंगे पहाळ, रेतीली भूमि, कच्ची छतोके मिट्टीके मकान थे; लेकिन दृश्य देखनेकी कमी हमारे मोटरके संसारमें हो ही जाती थी। मुल्ला साहब गुजरातके खोजावंशके थे और शिया होनेके नाते शिया ईरानके प्रति वैसे ही भक्ति रखते थे, जैसे किमी समय तुर्कीके साथ सुन्नी संसार रखता था। बल्कि मशहद जैसे ईरानी तीर्थोंके कारण वह ईरानको दूसरा अरब समझते थे। फिर ईरानियोंको फिरंगी हैट और टोपी पहनते और अुसी तरहके खान-पानको अख्त्यार करते देख, अुन्हें क्यों न गुस्सा आता? अितने ही तक मामला खतम नही था। वह देख रहे थे कि कैसे ईरानी बीबियाँ

बाल-कटाये मेम-बनी, सळको पर घूमती-फिरती है और होटलों तथा भोजनालयोंमें मर्दोंके सामने नाच-गाना करने में अुनको शरम नही आती। सैकळों मस्जिदों, हज़ारों कब्रोका अुखाळ फेंका जाना भी, अुन्हें भली प्रकार मालूम था। पगळी और जामा पहननेके लिये मुल्लाओको कितनी दिक्कत सहनी पळती है, यह भी वह जानते थे। अुन्हें नवीन अीरानके हर अेक काममें शैतानका हाथ दिखाअी पळता था। मुल्लाजीके दामाद साहब भी अिन बातोंमें ससुरसे सहमत थे। तरुण आलमदाद खाँका झुकाव किधर था, यह पूरी तरहसे नही कहा जा सकता, तो भी मुल्लाजीके साथ जो वह बनावटी सहानुभूति दिखलाते थे, वह अुन्हे बनानेके ही लिअे थी। अेक दिन मुल्ला साहबने अीरानियों और अुनके बादशाहके काले कारनामेकी दास्तान छेळ दी। कहते कहते कह दिया—भाअी! अिस्लाम तो और देशोंमें कमज़ोर और बदनाम हो ही चुका था, तुर्की और अीरानसे आशा थी। तुर्कीकी वह हालत हुअी और अीरानमें हम अैसा देख रहे है। मालूम होता है, पैगम्बर साहबकी भविष्यवाणी पूरी होने जा रही है। आखिर अुन्हे परलोक सिधारे भी तो १३०० वर्ष हो गये। चारों तरफ क़यामत (महाप्रलय)के निशान नज़र आ रहे है; लेकिन तो भी अिन्सान समझ नही रहा है। दामाद साहबने समर्थन करते हुअे कहा—क्या करेंगे मल्ला साहब! हज़रत नूह भी तो लोगोंको समझा रहे थे, भाअियो! कयामत आ रही है, सँभल जाओ। वह खुद भी नाव बनानेमें लगे हुअे थे कि, तूफान कोअी झूठी डरानेकी बात नहीं है? लेकिन लोग मज़ाक अुळा रहे थे पागल है, कह रहा है तूफ़ान आयेगा और सब लोग डूब जायँगे। लेकिन आखिर महात्मा नूहकी बात सच निकली और लोगोंको पछताना पळा। अुन्हीं लोगोंकी तरह आज कलके लोगोंकी भी अक्ल मारी गयी।

मैंने अपने स्वदेशी बन्धुओंको ढारस बँधाते हुअे कहा—कयामत दुनियामें भले ही आ जाय; पर हर तूफ़ानमें हमारा देश बँचता रहा है।

पिछले तूफ़ानमें भी हजरत नूहकी नाव जिस जोदी पहाळकी चोटीपर लगी थी, कहा जाता है वह हिन्दुस्तान ही में था। और हज़रत नूहकी नावके बचे खुचे मनुष्य, पशुपक्षियोंसे जो सृष्टि अुत्पन्न हुअी, वह भी हिन्दुस्तानकी पवित्र भूमिमें ही। पिछले तूफ़ानकी बातपर चाहे कोअी विश्वास न करे किन्तु वर्तमान कालमें जो लक्षण दिखलायी पळ रहे है, अिससे तो मालूम होता है कि, हिन्दुस्तान छोळकर सारी दुनिया गर्क होने जा रही है। दुनियाका छठवॉं हिस्सा रूसके हाथमें है और अुसने अल्ला और मज़हबके खिलाफ़ जंग छेळ दी है। पिछले १८ वर्षके निरन्तर प्रचारसे अल्लाहको वहॉंके लोगोंने भुला दिया। अगर कोअी अल्लाहके लिअे ख्याल भी करता है, तो वही जिसकी अुम्र ५० से अधिककी हो गयी है। नयी आनेवाली सन्तान वैसे ही अल्लाहके नामसे भागती है, जैसे खरगोशके शिरसे सीग। यूरोप और अमेरिकामें भी अल्लाहके घर और अतवारके दिन सूने ही पळे रहते हैं। यदि वहॉं कुछ लोग भूल-भटककर आते है, तो वह ढली अुमरके मर्द और औरतें ही। कुछ धनी लोगोके आनेके बारेमें तो लोग कह देते है—"जानि न जाअि निशाचर माया, काल-रूप केहि कारण आया।" चीन आदि देशोंकी भी यही हालत है। जापान जैसे कुछ देशोंमें धर्मकी बात यदि कुछ रह भी गयी है तो अुनका धर्म भी कोअी धर्म है, जिसमें खुदाके लिअे कोअी जगह ही नही? तुर्की और ओीरानकी बात आप खुद ही जान और देख रहे है! यह देखकर क्या दुनियाको भले दिनकी आशा हो सकती है? लेकिन हिन्दुस्तानकी ओर देखिये। अिस गये गुज़रे ज़मानेमें भी वहॉंके लोगोंको अल्लाह और मज़हबका ख्याल है। अब भी जहॉं-तहॉं कुछ खुदाके बन्दे अुसकी लौ लगाये बैठे दिखायी पळते हैं। हिन्दुस्तानमें क्या लोग अिसी तरह चुप रहते, यदि अुनकी मस्जिदों और कब्रों क्या, हिन्दुओंके मन्दिरोंको भी ले ली जाय, अिस बेदर्दीसे तोळा जाता। ताजियादारीके लिअे मर्सिया पढ़ने और छाती पीटने तकको अपराध माना जाता। क्या धर्म-प्राण हिन्दुस्तानी—"टुक टुक दीदम्! दम न कशीदम्॥" करते।

अजी जनाब! वहाँ खूनकी नदियाँ बह जातीं और फिर शाह रज़ा और अुनके पिट्ठुओंको मालूम हो जाता कि, अब भी दुनिया खुदा वालोंसे सूनी नही हो गयी है।

मुल्ला साहबको अपने भाषणपर दाद देते देखकर मुझे थोळी फिर हिम्मत हुअी। मैंने कहा—शैतानके अिन अत्याचारोंको देखते हुअे, हमें चुप-चाप नहीं बैठना चाहिअे। हिन्दुस्तानके लोग तो काफ़ी होशियार हैं; लेकिन क्या जानें यह लहर कही हिन्दुस्तानके अनुभव-रहित नौजवानोंके दिमागोंमें न घुस जाय, अिसके लिये हमे कुछ करना चाहिअे। हिन्दुस्तान-वालोंको तो वे सब बाते मालूम नही है, लेकिन आप जैसे लोग जो अपनी आँखों यह सब देखकर भारत लौट रहे है, क्यों न लोगोंको समझावें! वहाँसे कुछ अिस्लामी जत्थे अीरान भेजे जायँ और शान्त या अशान्त जिस किसी अुपायसे अीरानवालोंको सच्चे रास्तेपर लाया जाय।

मुल्लाजीने कहा—हमारे समझानेसे यह लोग थोळे ही माननेवाले हैं। वह तो हमें दास और गुलाम कहकर घृणित समझते हैं। और हथियार हमारे पास है ही क्या कि, सबक़ सिखायेंगे? जिस वक्त आपसमें हमारी यह बात हो रही थी, अुस वक्त मस्तराम और आलमदादको भीतर ही भीतर हँसनेका मज़ा आ रहा था।

आलमदाद साहबकी मशहदमें किसी लळकीसे दोस्ती हो गयी। सकीना अुसका नाम था। वह कह रहे थे कि, सकीना भी चाहती है, मुझसे शादी करना और मैं भी चाह रहा हूँ। माँ-बापको भी राज़ी करनेमें बहुत पैसेकी ज़रूरत नही है, लेकिन कमबख्त अीरानी कानून अैसा है कि, देशमें रहकर जो चाहे शादी कर ले; किन्तु देशसे बाहर औरतको नही ले जाया जा सकता।

मैंने पूछा—"क्या आपने सकीनासे पहले यह भी कहा कि, हिन्दु-स्तानमें रहकर अुसे कैसे रहना होगा? क्या आप अम्बालामें ले जाकर अुसे यूरोपियन पोशाकमें रहनेकी अिजाज़त देंगे और बाल कटाकर मुँह खुली

छज्जेदार ओढ़नी पहनकर अम्बालाकी सळकोंपर हवा खानेमें रोकटोक न करेंगे?"

अुन्होंने कहा—"सकीनाके लिअे तो मैं सब कर सकता हूँ लेकिन वालिद साहबको अिसके लिअे तैयार करना आसान न होगा।"

मैं—"यदि आप वालिद साहबको अिसके लिअे तैयार नहीं कर सकते, तो हिन्दुस्तानमें चलकर सकीना और आपकी मुहब्बत कुछ महीनोंकी मेहमान रहेगी।"

आलमदाद हुसेन जैसा कि मैंने कहा, बळे खुशदिल आदमी हैं। तीन अक्टूबरसे बारह अक्टूबर तक हम लोगोंका रात-दिन साथ रहा और अितना स्नेह हो गया था कि, अलग होते वक्त दिलको मालूम हो रहा था कि कोअी चीज़ खो गयी है। आलमदाद पहले भी अेक-दो बार अीरान हो आये हैं और हिन्दुस्तानमे दो-अेक महीना रहकर अपने कहनेके मुताबिक, वह सकीनाके लिअे लौटनेवाले थे। छः अक्टूबरकी शामको हम विर्जन्द पहुँचे। १२ हजारकी आबादीका खासा कस्बा है। ४५०० फ़ीट अुँचाअी होनेसे सर्दी काफ़ी थी और रातको तो मोटरसे कपळमें बँधा पानी बरफ़ होकर जम गया था। शहरमें बिजलीकी रोशनी है। मुसाफ़िरोंके रहनेका अच्छा स्थान है; लेकिन खानेके बाद ही तुरन्त चलनेका हुक्म हुआ। आधीरातके बाद अेक गाँवमें सोनेके लिअे गाळी खळी हुअी। नौ वजे (सोमवार) हम शोस्ब पहुँचे। यह अेक छोटा-सा गाँव है। अेक अच्छा चश्मा है। गाँवमें कितने ही अनार आदिके बाग हैं। मीठे अनार बहुत सस्ते बिक रहे थे। लोगोंने खूब खरीदे। हमने भी चार-पाँच सेर लिए; लेकिन सब रास्तेमें ही खत्म हो गए। यहीं भोजन हुआ। आज गर्मा-गर्म दूध मिल गया और बहुत दिनों बाद दूध-चपाती खानेमें बळा मज़ा आया। आगे पहाळ कहीं-कहीं था, अब अिलाका रेगिस्तानी था। यहाँ पानीकी कमी है अिसलिअे आबादी भी कम है। यही सीस्तानका अिलाका है, जहाँ कभी शक लोग रहा करते थे। ज़मीन

और पहाळ देखकर तो निराश होना पळता था; लेकिन अिस प्रदेशकी केसर मशहूर है। हीग और जीराकी यहाँ बहुतायत होनपर भी ओीरानी लोग अुनको खाना नहीं जानते। पूछनेपर बतलाते थे—हिन्दुस्तान जाता है, न जानें किस लिअे? अुसी दिन हम ज़ाहेदान पहुँच गये।

जाहेदान—ज़ाहेदानका पहला नाम दुज़्दाब (पानीका चोर) था। अिस मनहूस नामको बदलकर नया नाम रखकर अच्छा ही किया गया। यह कस्बा भी नंगे पहाळोके बीचमें बसा हुआ है। पिछले महायुद्धके समय बिलूचिस्तानसे यहाँ तक रेल लायी गयी थी। रेलवे लाअिन और स्टेशन अब भी मौजूद है। अुस समय ओीरान—"निर्बलकी जोरू सबकी भाभी" बना हुआ था, अिसलिअे अंग्रेज़ोंको बिलूचिस्तानसे यहाँतक रेल बनानेमें कोअी रुकावट न थी। अिरादा था कि, अिसी लाअिनको मशहदसे होते अशकाबादमें ले जाकर रूसी रेलवेसे मिला देनेका; लेकिन वह नही हो सका। पीछे ओीरानी अिलाकेमें बनी लाअिनको भी छोळ देना पळा। यद्यपि मीर जावा—जहाँसे अंग्रेज़ी सीमा शुरू होती है—चौबीस-पच्चीस ही मील है; लेकिन पानी न होनेके कारण बहाँसे नेक्कुंडी तककी पच्चासों मील तक लाअिन छोळ दी गयी है। ओीरानी सरकार रेल बनानेमें खर्च हुअे रुपयेको देना नही चाहती। वह कहती है—हमने तुमसे कब रेल बनानेको कहा था। बिना रुपया दिये अंग्रेज़ी-सीमासे खरीदकर अिंजन गाड़ी तथा दूसरा रेलका सामान वह ले नही आ सकती! हमारी सरकारके लिअे दुर्भाग्यकी बात यह है कि, वहाँ सीमापर पानी नही यद्यपि अुस सीमासे भीतर थोळी दूरपर ओीरानमें खूब पानी है। रेल शाहिदानकी सळकोंतक बिछी हुअी है। जाहिदानकी आबादी ५००० है। यहाँ कअी अच्छी-अच्छी दूकानें है, जिनमें भारतीय दूकानदारोंकी संख्या अधिक है। अिस प्रान्तके रहनेवाले लोग बिलूची हैं, अिनकी भाषा फ़ारसीसे नहीं मिलती। बिलूचिस्तान भी पहले ओीरानहीके हाथमें था; लेकिन जिस समय रूसने ओीरानसे काके-

शस् और बाकू छीना था, अुसी समय अंग्रेज़ोंने बिलूचिस्तानपर हाथ साफ़ किया।

महायुद्धके वक्त दुज़्दाब अंग्रेज़ी पलटनकी अेक बड़ी छावनी थी। कहा जाता है, लळाअीके वक्त अंग्रेज़ोंने अस्सी करोळ रुपया अीरानमें ख़र्च किया था; लेकिन १९२० में सब छोळकर चला आना पळा। जो कुछ अधिकार बाकी भी थे वह शाहरजाके आते ही हाथसे चले गये। १९२० अी० तक यहाँ दस हज़ार अंग्रेजी पलटन रहा करती थी। अुस समयके बहुतसे मकान ख़ाली हैं और कितनोंहीमें अीरानी पलटन रहती है। यहाँके कस्टम (गुम्रग्) गोदाममें हज़ारों बोरियाँ जीरा, बादाम, हींग और पिस्ताकी पळी रहती हैं। अिनके बदलेमें भारतसे चीनी, कपळा, मोटर और मशीनका सामान आता है। भारतीय व्यापारी शिकायत कर रहे थे कि, अीरानी अुनका पद-पदमें अपमान करते हैं और हमारी सरकार बहादुरका रोब अुठ गया है। मेरे वहाँ पहुँचनेसे अेक ही दो दिन पहले अब्दुल्ला नामक अेक हिन्दुस्तानी ड्राअिवरको किसी गुस्ताखीके कारण अीरानी पुलिसने बहुत पीटा था। अुसके शरीरपर कअी दाग पळ गये थे। अुस समय हिन्दुस्तानी (हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान) सभी सौदागरोंमें बळा तहलका मचा हुआ था। तेहरानके ब्रिटिश राजदूतके पास तारपर तार भेजे जा रहे थे; लेकिन अुन लोगोंको आशा नही थी कि अिसके लिअे कोअी कार्रवायी की जायगी। मुश्किल है, हिन्दुस्तानी लोग अुन दिनोंको भुलाना नहीं चाहते, जब अंग्रेज़ोकी तरह हिन्दुस्तानी भी समझते थे कि, वह अीरानी कानूनके अूपर हैं। अुस समय यदि कोअी हिन्दुस्तानी किसी अीरानीको मार-पीट आता था तो वह बात वैसे ही रफ़ा-दफ़ा कर दी जाती थी, जैसे हिन्दुस्तानमें किसी गोरेको अपराधी पानेपर। हिन्दुस्तानी व्यापारी कह रहे थे कि, बहुत-सा व्यापार अुनके हाथसे निकल गया है। कुछ ही वर्ष पहले सारे अीरानमें चलनेवाली मोटरोंके मालिक हिन्दुस्तानी थे; और समझा जाता था कि, तिजारत और कल-पुर्ज़ेका चलाना अीरानी दिमागके बाहरकी बात

महत्त्व नहीं होता, तो अैसी जगहमें अैसी खर्चीली रेल बनायी ही नहीं जाती। पहाळ अब थोळे और अूँचे हुअे; जब कि मध्यान्ह बाद हम बोलान्के दर्रेमें घुसे। (१९२६ अी० में हमने खैबरके दर्रेको देखा था। स्मृति तो अुतनी स्पष्ट नही होती कि, दोनोंका मुक़ाबिला करें; लेकिन दोनोंके सूखे पहाळ समान थे)। रास्तेमें रेलकी कअी सुरंगें हैं। चार बजेके क़रीब हम मस्तूमरोडपर पहुँचे। स्टेशनपर क्वेटावाले भूकम्पका प्रभाव खूब प्रकट था। सारे मकान गिरे हुअे थे। पानीके टंकीवाले लोहेके खम्भे तो धनुषाकार हो धरतीको छू रहे थे। बाग़ोंकी कच्ची चहारदीवारियाँ, मालूम होता था, धीरेसे सुला दी गयी हों। भूकम्प तीन बजे रातको आया था; अिसीलिअे क्वेटाके भूकम्पसे बहुत प्राण-हानि हुअी। शामको स्वेजन्द पहुँचे। यहींसे क्वेटाकी गाळी बदलती है। अब भी बाहरके यात्रियोंको क्वेटा जानेकी आज्ञा न थी। हमने यहाँ गाळी बदली।

नोक्कुण्डीसे हमने लाहौर अपने मित्र डा० लक्ष्मणस्वरूपको तार दे दिया था और १२ अक्टूबरको सवा सात बजे शामको जब हम लाहौर-स्टेशन पहुँचे तब डाक्टर साहेब वहाँ मौजूद थे। वहीं अेक मित्रसे भेंट हो रही थी और कितने दिनोंके सहयात्री मित्र पण्डित मस्तराम शर्मासे जुदाअी। संयोग और वियोग यही तो दुनियाका असली रूप है।

८—अीरानमें दुबारा

(१)

दिल्ली पहुँचनेके समय काफ़ी गर्मी थी। लेकिन अिधर कुछ बूँदा-बाँदी होगअी थी। १७ सितम्बरको जब मै रातकी गाळीसे क्वेटाके लिअे रवाना हो रहा था, तब गर्मी कुछ शान्त हो चुकी थी।

भटिंडासे आगे ज़मीन सूखी थी और धूल गाळीकी बंद खिळकियों और दरवाज़ोंकी भी परवा न कर भीतर अुळ रही थी। गर्मीसे भी ख़ासा मुक़ाबला था। रोळीमें हमें क्वेटा-मेल मिला। आधीरातके समय सिन्धुनद पार कर रहे थे। सीबीकी गर्मी सारे हिन्दुस्तानमे मशहूर है। हम समझ रहे थे, अुसका भी मुक़ाबला करना पळेगा, लेकिन गाळी वहाँ तळके पहुँची। साढ़े ग्यारह बजे क्वेटा पहुँच, गअे। किसी होटलके बारेमें पूछ रहे थे, अुसी समय आर्य-समाजके दो सज्जन आगअे। पंडित अिंद्रजीने दिल्लीसे मेरे बारेमे अुन्हे पत्र लिख दिया था।

पिछले भूकंपमें क्वेटा सारा ध्वस्त होगया था। दो साल बाद भी अभी बहुत कम अिमारतें बन पाअी हैं। सरकारका पूरा ज़ोर है कि सभी मकान भूकंप-सह्य बनाअे जायँ। क्वेटाके आसपासकी पहाळियाँ यद्यपि वृक्ष-वनस्पति-शून्य हैं, लेकिन ज़मीनके नीचे पानी बहुत नज़दीक और मीठा है। मनुष्योंने अिसका अच्छा अुपयोग किया है, जिसके फलस्वरूप मीलों तक चले गअे मेवोंके हरे हरे बाग दिखाअी पळते हैं। समुद्रतलसे कअी हज़ार फ़ुट अूँचा होनेसे गर्मीमें भी क्वेटा ठंडा रहता है। थोळी थोळी दूर पर कुअें खोदकर सुरंगद्वारा अुनके पेंदेको मिलाकर नहरें निकालना अीरानका

आविष्कार है। जमीनके ऊँची-नीची होनेसे यह ठीक नहरोंका काम देती है। इन नहरोंका प्रचार क्वेटासे ही प्रारंभ होजाता है।

क्वेटासे नोक्कुंडी तीन सौ मीलसे ऊपर है। लेकिन रेल जिस प्रदेशसे होकर जाती है, वह प्रायः जन-शून्य है। इसीलिए गाळी सप्ताहमें सिर्फ़ एक दिन सोमवारको जाती है। हमारी गाळी साढ़े ग्यारह बजे रवाना हुई। पहलेवाले रास्तेसे दो-तीन स्टेशन पीछे स्पेज़न्द तक हमें लौट आना पळा, फिर नोक्कुंडीकी ओर मुळे। ट्रेनमें काफ़ी भीळ थी। हम डचोढ़े दर्जेके मुसाफिर थे। इसमें उतनी भीळ तो न थी, तो भी बैठने भरसे ज़्यादा जगह नही मिली। यह बिलोची-भाषाका प्रदेश है।

इसी गाळीमें रेलके कर्मचारियों और मजदूरोंकी मासिक रसद, तनख्वाह और सप्ताह भरके लिए पानी भी बॉटा जा रहा था; इसीलिए गाळी जगह-जगह रुकती चल रही थी। स्टेशन कही-कही तो सौ-सौ मील पर थे। सळककी मरम्मत आदिके लिए जगह-जगह लॉडी (कुलीख़ाने) बने हुए है। ढाई बजे (२१ सितंबर) हम नोक्कुंडी पहुँचे। अभी अँगरेज़ी सीमा पचास मीलसे अधिक आगे है। और वहॉ तक रेलवे-लाइन और स्टेशन बने हुए है। गत महायुद्धमें तो अँगरेजी सरकारने युद्धके उपयोगके लिए ज़ाहिदान (दुज़्दाब) तक ईरानकी सीमाके भीतर भी पचास मील रेल बना ली थी, वह अब भी मौजूद है। ईरानमें शाह रज़ाके अधिकारारूढ होने पर उन्होंने अपने राज्यमे रेल चलानेकी मनाही करदी। नोक्कुंडीसे आगे अँगरेज़ी सीमाके भीतर पीनेका पानी नही है; इसीलिए गाळी नोक्कुडीसे आगे नही जाती। नोक्कुंडीमें भी पीनेका पानी सौ मील पीछेसे रेलके डिब्बोंमें भरकर आता है। यहाँ चालीस-पचास दूकानें हैं, जिनमें पंजाबी दूकानदारोंकी संख्या अधिक है।

यहाँसे हमें मोटर-लारी पर जाना था। छै रुपए पर ज़ाहिदानके लिए जगह मिली। लारी नौ बजे रातको रवाना होने वाली थी। हमारे

साथियोंमें क्वेटाके सरदार रामसिंह और लखनअूके हादी हुसेन साहब और अुनका परिवार था। आजकल औरानी सिक्कोंका भाव बहुत गिर गया है। नव-निर्माणके लिअे विदेशी सामान विशेषकर मैशीनें बहुत परिमाण में मँगाई जा रही हैं। जितने परिमाणमें माल बाहरसे मँगाया जारहा है, उतनेही परिमाणमें औरानी माल बाहर नही जा रहा है; अिसीलिअे विदेशी सिक्कों—रुपया, पौड आदि—का दाम बहुत बढ़ गया है। औरानी सरकारने सिक्केके विनिमैयकी दरको कम करनेके लिअे क़ानून बनाया है। बाहर-वाले औरानी-राष्ट्रीय-बैंककी शाखाओंमें ही अपने सिक्कोंको भुना सकते हैं। बैंकसे भुनाने पर रुपअेका छै रियाल मिलता है, और नोक्कुंडीमें रुपयेके १० रियाल। औरानके भीतर भी कुछ लोग लुक-छिपकर विदेशी नोट लेजाते हैं; और वहाँ अुन्हें दस-ग्यारह रियाल प्रति रुपअेके हिसाबसे दाम मिल जाता है। मानो सरकारी बैंकसे भुनाने पर रुपअे पीछे सवा छै आनेका घाटा रहता है। सौ पचास रुपअेके औरानी नोट आदमी सरहद के बाहरसे भीतर ले जासकता है। मेरे कअी साथिओंने अैसा ही किआ। मुझे भी कहा गया। लेकिन मैं अिस जोखिममें पळना नहीं चाहता था।

गाळी नौ बजे रात्रिको रवाना हुअी। यहाँसे क्या, बोलनपास (सीबी और क्वेटाके बीचमें)से ही वृक्ष-वनस्पति-शून्य पहाळियाँ और चौळे मैदान मिलने लगे थे। अब गाँवोंका कहीं नामोनिशान नहीं था। भूमि अधिकतर समतल सी मालूम पळती थी। लेकिन छै-छै सात-सात टनकी छपहिया लारियोंने रास्तेको धूलिमय बना दिया था। कितनीही जगह लारियाँ फँस जाती थी। अैसी-वैसी लॉरीका तो अिस रास्तेसे पार होना मुश्किल है। दो बजे रात तक हम चलते ही चले गअे। हवा चल रही थी, जिससे सर्दी अधिक बढ़ गअी थी। हम अेक परित्यक्त लाँडीकी ऊँची दीवारकी आळमें पळकर सो गअे।

सवेरे सात बजे (२२ सितंबर) फिर रवाना हुअे। भारतीय सीमाकी
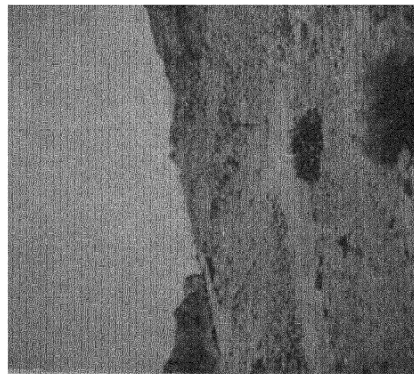
बोलन दर्रा

दुज़्दाब् ग्रंथी साहेब

चौकी क़िला-सफ़ेदसे तीन मील पहलेही पेट्रोल ख़त्म हो गया। लॉरी-वाला अिस प्रतीक्षामें बैठ रहा कि आगे-पीछेसे कोअी दूसरी लॉरी निकले तो पेट्रोल माँगा जाय। वहाँ भूखे-प्यासे बैठे रहनेकी अपेक्षा मैंने टहलकर क़िला-सफ़ेद पहुँच जाना ही पसन्द किआ। नोक्कुंडीकी तरह यहाँ भी पासपोर्ट देखा गया। भारतीय सरकारके कस्टम-कर्मचारी सिर्फ़ सामुद्रिक बन्दरगाहों पर ही हैं। स्थल-मार्गसे व्यापार कम होनेके कारण अधिक ख़र्चके भयसे कस्टम नहीं रखा गया है; अिसीलिअे यहाँ मुसाफ़िरों की चीज़ोंकी छानबीनकी ज़रूरत नहीं। हाँ, यदि पुलिसको सन्देह हो तो सामान खुलवा सकती है। क़िला-सफ़ेदके दरवाज़ेपर अेक छोटासा सूखा नाला है। यही अीरान और भारतकी सीमा है। सामने मीरजावा दिखाअी देता है, और वहाँसे दो-ढाअी मील आगे है। यहीं अीरानी सरकारके कस्टम (गुम्रग्) अफ़सर रहते हैं। हम लोग ग्यारह बजे वहाँ पहुँच गअे। गुम्रग्की सभी अिमारतें अँगरेज़ी सरकारके पैसेसे ळळाअीके दिनोंमें बनी थीं। रेलवे-स्टेशन, पानीकी टकी सभी अँगरेज़ोंने ही बनवाये थे। लेकिन अब वह सब अीरानी सरकारके हाथोंमें है। अिसकी बहुत कम संभावना है कि अँगरेज़ी सरकारको अीरानियोंने अिन चीज़ोंका दाम चुकाया होगा। आख़िर अुनकी अिजाजतसे तो अँगरेज़ोंने रेल और अिमारतें बनवाअी नही थी। फिर वे क्यों दाम देने लगे?

मुसाफिरोंके बिस्तरे और ट्रंक अेक-अेककर देखे जाने लगे। विदेशी सिक्कों, नोटों तथा मुसाफिरी-बैंकोंको भी नोट किया जाने लगा। कोअी महसूलकी चीज तो नही थी, लेकिन मेरे पासके दोनों ट्रंकोंमें किताबें भरी हुअी थीं। मैंने तो समझा, शायद किताबों पर—जिनमेंसे अधिकांशकी भाषा कस्टम्-आफ़िसर समझ नहीं सकता था—कुछ रोक-थाम न की जाय। लेकिन कस्टम-आफ़िसर सुशिक्षित और भद्र पुरुष था। किताबोंको देखकर अुसने मेरा पेशा पूछा। यह जानकर कि मैं लेखक हूँ, अुसने बहुत

नम्रता प्रकट की और सामानको बहुत बारीकीसे देखनेका ख़याल छोळ दिया। और मुसाफ़िरोंसे पहलेही मुझे गुम्रग्से छुट्टी मिल गअी। पासके मकानमे अेक अीरानी दम्पतीने अेक छोटासा भोजनालय खोल रखा था। दो साल पहले जब मैं अिस रास्तेसे गुजरा था, तो यद्यपि पुरुषोने हैट, कोट, पतलून धारण कर लिया था, और स्त्रियाँ भी युरोपीय पोशाकमें थी, लेकिन अभी अुन्होंने सिरपरकी काली चद्दर नही छोळी थी। वैसे मुँह तब भी ढँका नही रहता था; लेकिन यहाँ होटलकी अधेळ मालकिनको पटाकटे खुले सिर मुसाफ़िरोंकी आवभगत करते देखा। अुसे देखनेसे मालूम होता था, अेक वर्ष नही, सदियोसे पर्दा छोळ रखा है।

खा-पीकर लोगोने कुछ विश्राम किया और तीन बजे हम लोग फिर रवाना हुअे। नोक्कुंडीसे आअी सळक और अिस अीरानी सळकमें ज़मीन-आसमानका फ़र्क़ था। सळक ख़ूब चौळी और मरम्मतकी हुअी थी। यद्यपि अिसपर पत्थरके रोळे नही कूटे गये है, लेकिन ज़मीन काफ़ी कळी है। धूलको बराबर हटाया जाता है। अेक जगह हमारी लारीका टायर फट गया और वहाँ दो घंटे हमें ठहर जाना पळा। जिस तरहके सळे-सळे टायर ड्राअिवरने रख रखे थे; अुनसे तो भय लगता था, कही यहाँ ही न रह जाना पळे। ख़ैर किसी तरह दस बजे रातको हम ज़ाहिदानके गुम्रग् (कस्टम्) में पहुँचे। वहाँ अुस वक़्त कोई अफ़सर न था। सिपाहीने मुसाफिरोंको तंग कर कुछ अेंठनेकी ठानी। हमारे और सरदार रामसिंहके बक्सोंको देखना शुरू किया। सरदार रामसिंहके बक्समें दर्जनों क़मीज़ें, कोट, पतलून, साफ़-सुथरे धुल कर रखे हुअे थे। अुन्हे देखकर अुसने कहा—'ये सब महसूल लगनेकी चीज़ें हैं।' बक्सोंको वहाँ खुले आँगनमें छोळकर जाना हम लोग पसन्द नही करते थे। आख़िर सरदार साहबको पाँच रियाल पूजा चढ़ानी पळी और ग्यारह बजे हम ज़ाहिदान क़स्बेमें पहुँचे। सरदार रामसिहके परिचित अेक सिक्ख सज्जनके घरमें हम लोग ठहरे।

ईरान का नक़शा
पक्का मोटर रोड
कच्चा मोटर रोड
रेलवे
रेलवे (बननेवाली)
सोवियट राष्ट्र प्रजातंत्र
कास्पियन
सागर
तुर्किस्तान
जुल्फा
तबरेज़
अर्दाबिल
मियानाज
पहलवी
रेश्त
कज़्वीन
तेहरान
दमावन्द
सम्नान
दम्गान
शाहरूद
अस्त्राबाद
मशहदसर
बहलशाह
मशहद
नेशापुर
शरीफाबाद
तुर्बते हैदरी
करीज़
सरअख्स
लुत्फाबाद
हम्दान
मालयेर
सुल्तानाबाद
करमानशाह
कस्रे शीरीन
खानिकिन
बुरुजिर्द
खुर्रमाबाद
दिलीजान
काशान
नातन्ज़
अर्दिस्तान
नाईन
इस्फ़हान
दिज़फुल
शुश्तर
अहवाज
मुहम्मरा
बसरा
बन्दर शापुर
बन्दर दिलेम
यज़्देकास्त
यज़्द
अनार
बहरामाबाद
करमान
शीराज़
काज़रुन
फीरोज़ाबाद
बुशहर
जाहरूम
लार
दौलताबाद
बन्दर अब्बास
लोनगाह
पारस की खाड़ी
बिरजन्द
गाइन
फ़िर्दौस
ज़ाहेदान
बम
बलूचिस्तान
ईरानशहर
बामपुर
चाहबहार
ग्वातर
ई रा क़
अ फ़ ग़ा नि स्ता न

(२)

ज़ाहिदान—ओीरानमें जिस रास्तेसे मैं दो साल पहले गुज़र चुका था, अुसी रास्तेपर अब भी चल रहा था। असलिअे जिन बातोंका ज़िक्र मै पहिले कर चुका हूँ, अुन्हें फिर दोहरानेकी ज़रूरत नही। मै मुख्यतया अुन्हीं बातोंको लिखना चाहता हूँ, जो पिछले दो सालोंके परिवर्तनको बतलाती हैं। महायुद्धके समय ज़ाहिदानमें अितने ज़्यादा हिन्दुस्तानी पलटनें और हिन्दी सौदागर रहते थे, कि अुनके देखनेसे मालूम होता कि यह (दुज़दाब) कोअी हिन्दुस्तानी शहर है। पीछे भी सभी तिजारत हिन्दुस्तानियोंके हाथमें रही। आजकल भी बहुतसी बळी बळी दूकानें हिन्दुस्तानियोंकी हैं; लेकिन ओीरानी सरकार स्वदेशी व्यापारियोंकी हर तरहसे सहायता और विदेशी व्यापारियोके रास्तेमे कितनी ही रुकावटें डाल रही है। अिसीलिअे ओीरानी भी वाणिज्य-क्षेत्रमें आगे बढ़ रहे हैं। पिछली बार शहरके भीतर रेलकी पटरी बिछी हुअी पळी थी, अब अुसे हटाकर सळक चौरस करदी गअी है। प्रधान सळकके किनारेके कितने ही मकानोंको काँट-छाँटकर अुसे चौळा कर दिया गया है। सळकके किनारेकी ख़ाली जगहोंमें सरकारकी तरफ़से अीटकी दीवारें चिन कर सुन्दर बना दिया गया है। अेक बळा रेस्तोराँ (भोजनालय) खुला है, जिसमें अच्छी साफ़ मेज़-कुर्सियाँ ही नही पळी है, बल्कि बळे हालके बीचमें दो विलियर्डके मेज़ रखे हुअे हैं। रेस्तोराँमें आनेवाले मुफ़्तमें विलियर्ड भी खेल सकते हैं। सळक पर युरोपीय लिवासमें ज़र्क-बर्क कितनीही ओीरानी महिलाअें स्वच्छन्द घूम रही है। स्कूलके लळके-लळकियाँ अपनी ख़ास पोशाकमें चलते-फिरते दिखलाअी पळते है। पाठशालाके लिअे 'मद्रसा' शब्द अरबीका होनेसे छोळ दिया गया है, और अुसकी जगह पर शुद्ध फ़ार्सी शब्द 'दबीरस्तान' अिस्तेमाल किया जाता है। म्युनिस्पेल्टीके लिअे बल्दियाकी जगह शह्रदारी कहा जाता है।

पासपोर्टकी जाँचके लिअे हमें शह्रबानी (नज़मिया या कोतवाली) जाना पळा। अफ़सर बळे सज्जन थे। पूछताछ की और साथ ही चाय-पान कराया। यहाँ मालूम हुआ कि यद्यपि अब भी हफ़्ते की छुट्टी शुक्रवारको होती है, किन्तु अैतवारका भी तजर्बा किया जा चुका है। और वह नाकाम-याब नही साबित हुआ। आख़िर अीरानी लोगोंको जब नमाज़से अुतना प्रेम हो, तबतो शुक्रवारकी तातील छोळनेपर कोअी अळचन हो। यह भी मालूम हुआ कि ज़ाहिदानके पाससे अेक मिट्टीके तेलकी पाअिप-लाअिन समुद्र तक जानेवाली है। चाहेबहार बिलोचिस्तान की सीमासे थोळा हटकर अेक प्राकृतिक बन्दरगाह है। अीरानी सरकार पाअिप-लाअिनको वहाँतक लेजा-कर अुसे विकसित करना चाहती है। अिस पाअिप-लाअिनके साथ साथ मोटरकी सळक भी निकलेगी। अभीतक हिन्दुस्तानका प्रायः सारा व्यापार और कितना ही विदेशी व्यापार भी हिन्दुस्तानी रेलों और बन्दरगाहोंसे ज़ाहिदानके रास्तेसे हो रहा है। चाहेबहारके बस जाने तथा सळकके ठीक होजानेपर ज़ाहिदानका महत्त्व जाता रहेगा। अुस समय शायद नोक्कुंडीसे क्वेटा तककी लाअिन भी निरी घाटे का सौदा हो जायगी।

२३ सितम्बरहीको जानेके लिअे हमने टिकट ले लिया था; लेकिन सवारीकी कमीके कारण मोटर-लारी नही जा सकी। २४ को साढ़े तीन बजे हमारी मोटर-बस रवाना हुअी। सरकारकी ओरसे सिर्फ़ २३ आदमियोंके बैठानेकी अिजाज़त थी, लेकिन ठूसे गअे थे ३२ आदमी। मुसाफ़िरोंका किराया भी अेक नही था। हमसे १२ तुमान् (=१२० रियाल=१२ रुपये), हादी हुसेनसे १० तुमान् और सात पंजाबी तीर्थ-वासियोंसे ७ तुमानकी दरसे लिया गया था। गाराज़ (मोटरसराय)से गाळी तो निकली, लेकिन शहर के छोरपर पहुँचकर पुलीसकी चौकीके सामने फिर डेढ़ घंटेके लिअे ठहर गअी। पासपोर्ट देखा गया, लेकिन गाळीमें क़ानूनके खिलाफ़ अधिक मुसाफ़िर बैठाये गअे हैं, अिसकी पूछताछ किसीने नहीं की। अिस दयाके लिअे शायद

ड्राअिवरोंको कुछ नक़द 'पूजा-भेंट' देनी पळती होगी। पुलीसके सिपाहीको मुफ़्त अेक जगहसे दूसरी जगह पहुँचाना तो क़ानून-सा हो गया है।

लखनअूके हादी हुसेन साहब मश्‌हद-शरीफ़ और कर्बलाकी तीर्थ-यात्राके लिअे निकले थे। अुनके साथ ७० वर्षकी बूढ़ी माँ, अुनकी पत्नी, दो लळके-लळकियोंके अतिरिक्त तीन मासका बच्चा भी था। अैसे छोटे बच्चेके लिअे हफ़्तों तककी मोटरकी सवारी वैसे भी हानिकारक है, लेकिन यहाँ तो ओीरानकी सर्दी भी थी और अुस पर बच्चा बीमार था। तिसपर रातभर मोटर-बस चलती थी। रास्तेमें अेक जगह बच्चीने आँखको उलट दिया और माँ रोने लगी। मोटर खळी की गओी। हमने नब्ज़ देखा तो अभी वह मौजूद थी। थोळी देर गाळी वहाँ ठहरी और फिर कपळेसे अच्छी तरह लपेटकर बच्चीको गोदीमें रखा गया। अेक बजे दिनको (२५ सितंबर) हम बिरजन्द क़स्बेमें पहुँचे। ड्राअिवर अच्छा आदमी था। बच्चीकी हालत देखकर अुसने आज यहाँ रहना स्वीकार कर लिया। यहाँ ब्रिटिश वाअिस-कौंसिल रहते हैं। वर्तमान कौंसिल पेशावरके रहनेवाले पठान डाक्टर हे। मेरे कहनेपर अुन्होंने सरायमें आकर बच्चीको देखा और अुसके लिअे दवा दी।

बिरजन्द अेक पहाळी टीलेकी जळसे शिखर तक बसा हुआ क़स्बा है। जन-संख्या दस हज़ार है। कायनात् सूबेका गर्वनर यही रहता है। सोवियत सरकारकी देखादेखी ओीरानी सरकारने भी बहुतसे उद्योग-धन्धोंको अपने हाथमें कर रखा है। आयात-निर्यातकी चीज़ोंपर सबसे बळा अधिकार अुसका तो है ही, देशके भीतरके व्यापारमें भी अुसने अपना हाथ कर रखा है। ओीरानकी कितने ही जगहोंमें गेहूँ—जहाँ वह ज्यादा पैदा होता है—बहुत सस्ता मिलता है; और जहाँ पैदावार कम होती है, वहाँ पर महँगा। अल्प वित्तके साधारण लोगोंको अिससे बहुत तकलीफ़ होती है। सरकारने सोचा—खेतीका कर उठा दिया जाय, तो किसानों-

पर कम बोझ पळेगा और गेहूँको सरकार सीधे अुचित दामपर खरीद ले, तो किसानोंको अुतना ही दाम मिल जायेगा, जितना कि ग़ल्लेके व्यापारी उन्हें देते। आटा चाहनेवालोंको, जितनेपर ग़ल्लेका व्यापारी नफ़ा रखकर बेचता है, अुसी नफ़ेको यदि सरकार ले-ले तो, अुसे भी ज़मीनके करके रूपमें वसूल होनेवाली रक़म मिल जाअेगी। अिस प्रकार खरीदारोंको अधिक मूल्य भी न देना होगा। अिसी योजनाके अनुसार ओीरानी सरकार मुल्कके सारे गेहूँको खुद १५-१७ तुमान (१५-१७ रुपअे ग़ैर क़ानूनी क़ायदेसे) खलवार (=आठ मन) पर ख़रीद लेती है; और ५ तुमान् लाभ रखकर सारे देशमें अेक भावसे बेचती है। अेक जगहसे दूसरी जगह माल लेजानेमें लम्बी दूरीके कारण किराया अितना अधिक पळ रहा है कि सरकारको घाटा लगने लगा है। शहरों और क़स्बोंमें कितनी ही जगह अर्द्ध-सरकारी रोटीकी दूकानें है। समुचित प्रबन्ध न होनेसे, विशेषकर छोटे क़स्बों और गाँवोंमें, रोटियोंके मिलनेमें कठिनाअी हो रही है। कहीं कही गेहूँके आटेमें दूसरा आटा या मिट्टी भी मिला देनेकी शिकायत सुनी जाती है। सोवियत सरकारने वैयक्तिक सम्पत्ति एकदम उठा दी है, अुसकी शासन-व्यवस्था भी अितनी सुव्यवस्थित है कि वहाँ अैसी बेअिमानीकी गुंजायश नही। निश्चय ही अुसके अधिकांश प्रोग्रामोंको पूँजीबादी देशोंमें चलाना बहुत कठिन है। ओीरानके मनस्वी शाहके रास्तेमें पद-पदपर कठिनाअियाँ हैं। वह देशको शीघ्रसे शीघ्र समुन्नत अवस्थामें देखना चाहता है, लेकिन वैयक्तिक सम्पत्ति और शीघ्रसे शीघ्र धनी वन जानेकी लालचसे सरकारी कर्मचारी और मंत्रीतक अपने शाहका दिल खोलकर सहयोग नही दे रहे हैं। खुशामदका बाज़ार अभी भी गर्म है। सच्ची बात कहनेकी किसीको हिम्मत नहीं होती। बन्दरशाह (कास्पियन समुद्रतट)से तेहरानको जो रेल बनाअी गअी है, अुसपर अेक जगह पुल वन रहा था। भारतीय अिंजीनियरने कहा, कि अिसी पुल पर दस-पंद्रह हज़ार और खर्चकर अैसा बना दिया जाय कि रेलके अति-

रिक्त यह अेक ओर जहाँ मोटरकी सळकका काम दे, वहाँ बाँध बनकर पानीकी नहर निकालनेमें भी सहायक हो। अुच्च अधिकारियोंने कहा—शाह मोटरकी सळक नही बनवाना चाहते, क्योकि मोटरकी सळक बनवानेसे लारियाँ रेलकी आमदनीमें बाधक होंगी और नहरकी हमें ज़रूरत नही। आख़िरमें दो ही सालके भीतर तीनो चीज़ोंकी ज़रूरत पळी और दूना-ढाअी गुना खर्चकर मोटरके लिअे अेक अलग पुल, और नहरके लिअे अेक अलग बाँध बनाना पळा। असल बात यह थी कि शाहके सामने कहनेकी किसीको हिम्मत न थी।

अेक दिन-रातके विश्रामसे अब बच्चीकी हालत अच्छी होगअी थी, २६ सितबरको सवेरे फिर हम रवाना हुअे। रास्ता सारा पहाळी चढ़ाअी का था। बहुतसे डाले पार करने पळे। रास्तेमें काअिन क़स्बा मिला। पहले यही गवर्नर रहा करता था। यहाँकी केसर मशहूर है। आसपास पोस्तेकी खेती ज़्यादा होती है। काअिन पहुँचनेसे पाँच-छः मील पहले ही टायर फट गया। ओीरानके बहुतसे मोटर ड्राअिवर ख़ुदाके भरोसे ही सफ़र करते है। वे अेकाध नये टायर-ट्युब रखनेकी ज़रूरत नही समझते। हमारे ड्राअिवरके पास कोअी दूसरा टायर न था। कुछ जोळ-जाळकर ठीक किया गया, लेकिन वह भी दस-पन्द्रह मीलसे ज़्यादा न चल सका। मजबूरन् अेक गाँवमें आकर हमें ठहर जाना पळा। अब ६ टायरोंमें से दो टायर बेकार हो चुके थे। ड्राअिवरने आनेजानेवाले मोटरवालोंसे माँग-जाँचकर काम निकालना चाहा, लेकिन अुसमें सफल न हुआ। आख़िर पिछले जोळे पहियोमेसे दोके टायर निकाल लिअे गअे और दूसरे दिन (२७ सितंबर) चारही पहियोंपर मोटर चलाअी गअी। हम मुसाफ़िरों को अेक फ़ायदा ज़रूर हुआ कि बोझा हल्का करनेके लिअे कुछ मुसाफ़िर दूसरी मोटरको दे दिये गअे।

मेहना अच्छा ख़ासा गाँव है। यहाँ दबिस्तानेजामी नामका सरकारी

विद्यालय है। विद्यालयमें सौ लळके-लळकियाँ साथही पढ़ती है। हादीहुसेन साहबकी दस वर्षकी लळकी अपना लखनवी सफ़ेद बुर्क़ा ओढ़े हम लोगोंके साथ स्कूलके दरवाज़ेपर जाकर खळी हुओ। कोट-पतलून डाटे लळकों और बालकटी लळकियोंको वह अजीब जानवर सी जँची। चन्द ही मिनटोंमें लळके-लळकियोंकी भीळ लग गओ। पहले तो अुन्होने ग़ौरसे सिरपर पळे सफ़ेद कपळेमें कटी दोनों काली-काली आँखोंको देखना शुरू किया और फिर कुछ छोटे लळके-लळकियोंने अपने दोनों हाथोको उठाकर पाँचों अँगुलियाँ हिलाकर चोंच बनाना शुरू किया। बेचारी हिन्दुस्तानी लळकीने अेक साँसमें भगकर मोटरके भीतर शरण ली।

दोपहर बाद हम लोग तुर्बतेहैदरीमें दो घंटेके लिअे ठहरे। हमारे कुछ भारतीय तीर्थयात्री आसपासकी क़ब्रोंकी ज़ियारतके लिअे चले गअे। तुर्बतेहैदरी नाम पळनेका कारण पूछनेपर अेक सज्जनने बतलाया—यहीं हज़रत अली (हैदर) की समाधि (तुर्बत) है। बात असल यों है—हज़रत अली जहाँ (अरबमें) पैदा हुअे और जहाँ तक वह लळाओके सिलसिलेमें आ-जा सके थे, वहाँ तक अुनकी कोओ क़ब्र नही मिलती। क़ब्रका स्थान अनिश्चित होनेसे जिन जिन देशोंमें असलाम फैला—अुनमेंसे बहुतोंने अपने यहाँ हज़रत अलीकी क़ब्र होनेका दावा किया।

अँधेरा हो चुका था, जब हम मशहदके गुम्रगमें पहुँचे। मशहद औरानके बळे शहरोमें है और शाह रज़ाकी कृपासे अब यह सुंदर और समुन्नत भी बन गया है। मैं पहली बार भी असे देख चुका था असलिअे यहाँ रहनेकी अिच्छा न थी। गुम्रगमें ही तेहरान जानेवाली अेक मोटर खळी मिली। अुसने ८ तुमानमें तेहरान ले चलना स्वीकार कर लिया; असलिअे सामान रखकर मैं अुस पर जा बैठा। ड्राअिवर अर्द्ध-हब्शी था और बहुत ही नम्र और भलामानस आदमी था। खानेके लिअे गाळी थोळी देर अेक जगह ठहराओ गओ; नही तो सारी रात चलती ही रही। दूसरे

दिन (२८ सितंबर) ८ बजे रातको हम दम्ग़ान पहुँच सके। रास्तेमें गाळी-ने कअी जगह जवाब देना चाहा था। दम्ग़ान पुरानी आबादी है। यहाँपर अिमामज़ादा जाफ़रकी बनवाअी अेक पुरानी मस्जिद है। अिसके गुम्बदकी मेखला सारनाथके धमेख-स्तूपकी मेखलाकी चित्रकारीसे बहुत कुछ मिलती है। नीचे-अूपरकी किनारी स्वस्तिकोंकी लतासे सुसज्जित की गअी है। अूपर-नीचेवाली स्वस्तिक-लताओंके बीचमें अरबी-वाक्य लिखे हुअे हैं। देखनेमें भी यह गुम्बद वैसाही मालूम होता है, जैसा कि सारनाथका धमेख-स्तूप सुरक्षित अवस्थामें रहा होगा।

२९ की दोपहरको हम सेम्नान पहुँचे। अब दो वर्ष बाद सेम्नान तो पहचाननेमें नही आता। कहाँ वह पहलेका छोटा ख़राब-ख़स्ता गाँव, टूटी-फूटी दीवारें, मैली-कुचैली गलियाँ, और कहाँ आज अमेरिकन तेल-कंपनीकी आलीशान अिमारतें, चौळी पथरीली सळकें और हज़ारोंकी आबादीका अेक छोटासा सुन्दर शहर! सेम्नान प्रदेशमें पेट्रोल निकल आया और अुसका भाग्य खुल गया। शाहने स्वयं तेल निकालनेके प्रबंधमें असमर्थता देख पर्याप्त नफ़ा और अधिकारके साथ अेक अमेरिकन कंपनीको ठेका देदिया है। वही अिस तैल-क्षेत्रको विकसित कर रही है। शहरसे दो-तीन मील आगे हम बढ़े। पहाळ थोळीही दूर आगे शुरू होनेवाला था। अभी हमारी सळक चौरस भूमिमें जा रही थी। अेकाअेक अेक हलका सा धक्का लगा और हमने देखा कि दाहनी ओर अेक पहिया लुढ़कता हुआ जा रहा है। मोटर रोक दी गअी। मालूम हुआ—आगेका दाहना पहिया निकल भागा है। यदि यही घटना दो मील आगे दस मिनट बाद हुअी होती तो गाळी सबको लिअे-दिअे खड्डमें पहुँचती और हममेंसे अेक भी न बचता।

ड्राअिवर होशियार था। अुसने अेक घंटेमें पहिअेको ठोकठाककर तैयार किया। रास्तेमें चढ़ाअी-अुतराअी मिलती गअी। तीन बजे हमने तेहरान से कास्पियन-तटको जानेवाली रेलवे-लाअिन पार की। अिस रेलके बनानेका

ठीका पोलेंडकी किसी कंपनीको दिया गया था। रेल अब बराबर आती-जाती है, तो भी यात्रियों और मालकी कमीके कारण हर रोज़ ट्रेन नही चलती। दिन ही दिनमें हमने सबसे बळे डॉळेको पार किया। साढ़े छै बजे शामको अिंजनका पंखा ख़राब होगया। अेक बजे रात तक ड्राअिवर अुसीको बनाता रहा। ख़ैर किसी तरह हम फिर चले और ३० सितंबरको पौ फटते तेहरानमें दाखिल हो गअे। दो साल पहले खयाबान चिरागबर्क़के जिस होटलमें ठहरे थे, अुसीमें आज भी ठहरे। यद्यपि मकान वही था, किन्तु अब अिसका नाम मुसाफ़िरख़ाना-वतन हो गया है और मालिक भी बाक़ूसे भागा अेक तुर्क-परिवार है।

(३)

मेरी रूस-यात्राका प्रबन्ध डाक्टर श्चेर्बास्कीकी कृपासे हुआ था। यद्यपि भारतसे सबसे नज़दीकका रास्ता अफ़गानिस्तान और तुर्किस्तान होकर है, लेकिन मेरे लिअे वीज़ा मिलनेका प्रबन्ध तेहरान-स्थित सोवियत्-कौंसल-जेनरलके द्वारा हुआ था, अिसीलिअे मुझे तेहरान आना पळा। ३० सितंबरको बृहस्पतिके दिन मै तेहरान पहुँचा था। मैंने अिन्तूरिस्त (सोवियत्-यात्रा-प्रबंधक-समति)के कार्यालयमें जाकर यात्रा और वीज़ा (प्रवेश-पत्र)के बारेमें पूछा, लेकिन अुस दिन अुसके बारेमें कुछ भी मालूम नही हुआ। दूसरे दिन जुमाकी छुट्टी थी। अधिकतर दूकानें बन्द थीं। २ अक्तूबरको कौंसल-ख़ाना गअे। सेक्रेटरी साहब रूसीभाषा के अतिरिक्त थोळीसी फ़ार्सी छोळ दूसरी भाषा नही जानते थे। किसी तरह मैने अपना अभिप्राय समझाया। उन्होंने कहा—मेरे पास बहुतसे तार आअे हुअे हैं। आप दो दिन बाद आअें तो मैं देखकर बतला सकूँगा, कि आपके वीज़ाके लिअे आज्ञा आअी है या नही।

हमारे होटलमें अेक और हिंदुस्तानी सौदागर अिलाहीवख्श साहब ठहरे

हुअे थे। अुनके साथ शाम (३ अक्तूबर) को मैं बाग़े-मिल्ली (राष्ट्रीय उद्यान) गया। शामको वहाँ नागरिकोंकी बळी भीळ होती है। हज़ारों आदमियोंके बैठनेलायक कुर्सियाँ पळी हुअी हैं। रेस्तोराँसे मलाअीबर्फ़, सोडा और दूसरे हल्के नाश्ते मिलते हैं। लोगोंके मनोरंजनके लिअे युरोपियन और अीरानी नाच, कसरत तथा कितने ही प्रहसन हर रोज़ होते हैं। दर्शकोंके देखनेसे मालूम होता था, कि हम अेशियाके नहीं, युरोपके किसी देशमें आगअे हैं। कितनीही अीरानी सुन्दरियाँ फ़ैशनमें पैरिसकी रमणियोंको भी मात कर रही थी। स्त्रियों की संख्या पुरुषोंसे भी अधिक थी। खिलाळियों में भी तरुणियोंका नम्बर ज़्यादा था। अिस मंडलीको दिखाकर यदि किसी भारतीय मौलवीसे पूछा जाता तो वह कभी यह स्वीकार करनेके लिअे तैयार न होता, कि ये लोग मुसल्मान हैं। वस्तुतः मुसल्मान कहनेकी अपेक्षा ये लोग अपने लिअे अीरानी कहना ही अच्छा समझते हैं। सारेके सारे देशके अिस प्रकार युरोपीय बाना पहन लेनेपर लोगोंका ख़र्च बहुत बढ़ गया है। अिसीलिअे वेतनमें भी वृद्धि करनी पळी है। अेक हिन्दुस्तानी सौदागर शिकायत करते हुअे कह रहे थे कि पहले अुनको नौकरानी ३ तुमान् माहवार पर मिल जाती थी, लेकिन अब ८ तुमान् देना पळता है।

४ अक्तूबरको जाकर पूछने पर कौंसल-खानाके सेक्रेटरीने कहा कि आपके लिअे मार्च महीनेमें यह तार आया है। आप फ़ार्म भरकर दो फोटोंके साथ देदें। हम आज्ञाके लिअे मास्को तार देते हैं। अुन्होंने चार-पाँच दिनोंमें तारके जवाबके आनेकी संभावना बतलाअी। हमने अुसीदिन आवेदनपत्र और फोटो दे दिये। अब ५-६ दिन हमें अिस जवाबकी प्रतीक्षामें बिताने थे। जब कोअी काम न हो तो दिन काटना बहुत मुश्किल होजाता है। यदि यह मालूम होता कि हमें तेहरानमें महीनेसे अधिक रह जाना पळेगा, तो हम विश्व-विद्यालयके कुछ अध्यापकों तथा दूसरे समान-व्यवसायी पुरुषोंसे परिचय कर लेते, लेकिन वहाँ तो ख़याल था दो ही चार दिनमें चल देनेका।

शामको पाँच बजेके बाद हम शहर घूमनेके लिअे निकल पळते थे। शाह-रज़ाके शासनमें, विशेषकर पिछले दस वर्षोमें, तेहरानकी जनसंख्या ढाअी लाख-से सात लाख होगअी है। शहर बहुत बढ़ही नहीं गया है, बल्कि अुसकी सळकें ख़ूब चौळी, सीधी और सुन्दर बना दी गअी है। कअी दिनों तक तो मैं ढाअी-तीन घंटे शहरके किसी भागकी ओर टहलने निकल जाता था। सभी जगह अुसी तरहकी प्रशस्त सळकें दिखाअी पळती थीं। वैसेही नअे-नअे मकान बनते चले जा रहे थे। अितनी तेज़ीके साथ बनते मकान तो सोवियत प्रजातंत्र के बाहर मैंने सिर्फ़ मंचूरियाकी राजधानी सिंकिङ में ही देखे थे। रास्ता भूलनेका कोअी डर नहीं था; क्योंकि मैं जानता था कि यदि अटकलसे काम न चलेगा, तो दो रियाल (तीन आने) में दुरुश्की (फिटन) करके अपनी जगह चला आअूंगा। शहरके अेक छोर पर अेक नया विश्वविद्यालय (दानिस्सरा) शहर ही बन रहा है। शामके घूमनेके अतिरिक्त दिनमें रूसी किताब पढ़ता रहता था। रातको कभी कभी कोअी फ़िल्म देखने चला जाता था। अिस बार कुछ रूसी फ़िल्मोंको भी तेहरानमें दिखाअे जाते पाया। कहीं बोलशेविज़्मका कीळा यहाँ भी न आ जाय, अिस ख़यालसे रूसी फ़िल्मोंका दिखाया जाना पसन्द नहीं किया जाता। दस दिन लगातार चावल और ओीरानी क़वाब खाते खाते दिल अितना अुकता गया, कि अुसका गलेसे अुतारना मुश्किल हो गया। अेक दोस्तने खयाबान अिस्तम्बूलके बाज़ार-नौका नाम बतलाया। वहाँ सूअरके मांसके कअी प्रकार बिक रहे थे। मक्खन, पनीर, चटनी, सिरका आदि भी मौजूद थे। फिर मैंने वहाँसे अेकट्ठा पाँच-सात दिनके लिअे सामान ख़रीद मँगाया। रोटी और फल बाज़ारसे रोज़ मँगा लिया करता था। अिस प्रकार खानेकी ओर से निश्चिन्त हो गया।

तार दिअे दस दिन हो गअे, लेकिन अब भी वीज़ाके बारेमें कोअी ख़बर नहीं आअी। रोज़ टेलीफोन-द्वारा कौंसलख़ानेसे पूछा जाता था और

रोज़ जवाब मिलता था—अभी जवाब नही आया। चौदह दिन अिन्तज़ार करनेके बाद आचार्य श्चेर्बास्कीको तार दिया। दूसरे दिन अुनका जवाब आया। अिन्तज़ाम हो चुका है। वहीं दर्याफ़्त करें।

अेक दिन अीरानी उद्योग-धन्धेकी प्रदर्शनी देखने गया। प्रदर्शनी अेक स्थायी म्यूज़ियम (संग्रहालय) के रूपमें है। यहाँ देशमें बनी हुअी चीज़ोंको ही अेकत्र नहीं किया गया है, बल्कि कारखानों और अुपजमें साल-ब-साल कैसे अुन्नति होती है, अिसे भी चार्टोंके द्वारा दिखाया गया है। कुछ ही साल पहले अीरान चीनीके लिअे परमुखापेक्षी था, लेकिन अब आठ चीनीकी मिलें हैं। अिनमें चुकन्दरसे चीनी बनाअी जाती है। अब बाहरसे चीनी आनी बिल्कुल बन्द करदी गअी है। सूती, अूनी और रेशमी कपळोंकी भी कितनी ही मिलें खोली जा चुकी हैं; लेकिन वह सारे देशके लिअे काफ़ी नही हैं। हाँ, फ़ौज और पुलीसकी सभी वर्दी स्वदेशी कपळों-की ही होती है। साबुन और सुगन्धित वस्तुएँ भी बहुत भारी परिमाणमें बनने लगी हैं। काँच, चमळे, आदिके भी कितनेही कारखाने खुल चुके हैं। अिसी साल अेक लोहेके कारखानेका भी आरंभ हुआ है। अिस प्रकार अीरानका प्रतिभाशाली शासक युरोपीय पोशाक पहनाकर अपने देश-वासियोंके धार्मिक-मूढ़-विश्वासोंको ही हटानेपर सन्तोष नहीं कर रहा है, बल्कि वह चाहता है, कि अीरान सभी आधुनिक अुद्योग-धंधोंसे युक्त हो स्वावलम्बी बन जाय। कुछ लोगोंको अीरान अैसी पहाळी और दूर दूर पर बसी भूमिमें रेलपर करोळों रुपअे खर्च करना बुद्धिमत्ताका काम नहीं जँचता; लेकिन शाहका ख़याल है, कि कल-कारखानों और अुनके लिअे अुपयोगी मैशीनोंके पहुँचानेमें रेलोंकी अधिक ज़रूरत है।

तेहरानका स्टेशन पश्चिमी यूरपके स्टेशनोंके ढंगपर बनाया गया है। अिमारतें सादी किन्तु साफ़ और आरामदेह हैं। जाळोंमें भीतर गर्म रखनेके लिअे गर्मपानीके नलके लगे हुअे हैं। मुसाफ़िरोंके बैठनेकी जगहें और

चाय-पानका स्थान भी बहुत अच्छा बना है। स्टेशनके बाहर घोळेपर बैठी सम्राट् रज़ाशाह पहलवीकी मूर्ति है। आदमीका बुत बनाना अिस्लामके अनुसार क़ुफ़्र है, लेकिन ओरानमें किसी मौलवीके सिर पर शामत आअी है जो शरियतकी बातको खुलकर कहेगा। तेहरानके दूसरी तरफ़ पार्लियामेंट-भवनके सामने भी शाह पहलवीकी अेक खळी धातु-मूर्ति है।

वीज़ा आनेमें देर देखकर हमने कुछ विद्वानोंसे परिचय करनेका निश्चय किया। दानिश्कदा (अिंटर्मीडिअेट कालेज)में ओरानी-भाषाके अध्यापक आग़ा हुमायूँसे परिचय हुआ। वे अँगरेज़ी या फ़्रांसीसी नहीं जानते, अिसलिअे हमारी बातचीत फ़ारसीमें ही हुअी। यद्यपि फ़ारसीका ज्ञान मेरा भी बहुत हल्का ही है। लेकिन विषयकी अेकता और जाननेकी अुत्सुकता जहाँ मुझे वाचाल बना रही थी, वहाँ अुन्हें भी अुसे समझनेमें आसानी होती थी। आगा हुमायूँ अल्बेरूनीके द्वारा ज्योतिष पर लिखी गअी पुस्तक तफहीम्को सम्पादित कर रहे हैं। आजतक यह मुद्रित नहीं हुअी थी और शायद अिसका हस्त-लिखित ग्रन्थ भी दूसरा नही है। पुस्तक फ़ारसीमें लिखी गअी है। जहाँ-तहाँ अुसमे ज्योतिष-संबंधी संस्कृत पारिभाषिक शब्दोंको भी दिया गया है। कुछ तो संस्कृतसे अनभिज्ञ लेखकने शब्दको बिगाळा और रही-सही कमीको अरबीकी दोष-पूर्ण लिपिने पूरा कर दिया। अक्षांश, अयनांश आदि कितने ही शब्दोंके रूपको बळी माथापच्चीके बाद समझ पाअे। आगा हुमायूँ बळे सीधे-सादे मिलनसार पुरुष हैं। अुनकी आयु ३८-३९ वर्षकी है। वंश-परंपरासे पंडिताअी अिनके घरमें चली आअी है। अिनके पूर्वज शीराज़के निवासी थे। कअी पीढ़ियोंसे वे अस्फ़हानमें आ बसे थे। अब भी अिनका घर अस्फ़हानहीमें है। बहुत तारीफ़के साथ अुन्होंने हमें अस्फ़हानी खरबूज़े (सरदा) खिलाअे। यद्यपि अुन्हें ला-मज़हब नही कहा जा सकता, क्योंकि अुन्होंने अपनी दीवारपर हज़रत मुहम्मदकी अेक बळी तसवीर टाँग रखी थी, तो भी वे थे बहुत अुदार। सूफ़ीमतकी तरफ़

अुनका झुकाव बहुत है; और अुनके कहनेके अनुसार सूफ़ीमत मजहब और लामज़हबपनेके सीमा पर है।

डाक्टर श्चेर्बास्कीके तारको दिखलानेपर कौंसलने फिर अपने दफ़्तरकी खोज की, और अुन्हें जूनका आया अेक तार मिल गया। अुसमें लिखा था कि मुझे आतेही वीजा दे दिया जाय। १९ अक्तूबरको मैं अेक सिक्ख-विवाह-भोजमें शामिल था। भारतीय हिन्दू, मुसलमान तथा अीरानी सभी अेक फ़र्श पर बैठकर खाना खा रहे थे।' भारतसे बाहर जाने पर हमारी मज़हबी कट्टरता कितनी दूर होजाती है, यह सहभोज अिसका अेक नमूना था। वैसे अिंगलैंडमें भी जाकर हिन्दू-मुसलमान सहभोज कर लेते हैं, लेकिन अुनकी कट्टरता दूर होनेका कारण अुनकी आधुनिक शिक्षा होती है, जिससे कि हमारे अुपस्थित सहभोजियोंमें अधिकांश वंचित थे। वहीं भोजमें अेक मित्रने कौंसलके फोनकी ख़बर देते हुअे कहा कि आपका वीज़ा तैयार है। पासपोर्ट लेकर जाअिअे। बीस दिनकी प्रतीक्षाके बाद जबकि मैं आशा और निराशाके बीचमें झूल रहा था, यह ख़बर पाकर कितनी ख़ुशी हुअी, अिसके कहनेकी ज़रूरत नहीं। मैं अुसी दिन अपना पासपोर्ट दे आया। सेक्रेटरीने दूसरे दिन वीज़ा दर्ज करके पासपोर्ट लौटानेके लिअे कहा।

२० अक्तूबरको मैं अपने प्रस्थानका सारा प्रबन्ध करके कौंसलके पास गया। मैंने समझा था, अब तो कौंसलसे हाथ मिलाना है और पासपोर्ट लेकर चल देना है। वहाँ अुन्होंने पासपोर्ट खोलकर देते हुअे अफसोसके साथ कहा—देखिअे, मैंने वीज़ाकी मुहर करदी थी, और अुसे भर भी दिया था, लेकिन जब मैंने कौंसल-जेनरलके सामने दस्तख़त करनेके लिअे पेश किया, तब अुन्होंने कहा—'अभी हालमें अेक तार वैदेशिक विभाग (मास्को)से आया है, जिसमें विना पहले स्वीकृति लिअे किसी भी विदेशीको वीज़ा देनेकी मनाही करदी गअी है। अिस प्रकार अुन्होंने दस्तख़त नहीं किया

और मुझे वीज़ा काट देना पळा। ख़ैर, कौंसल-जेनरलने ख़ुद अेकतार लिखकर मास्को भेजा है और आशा है, जवाब जल्दी आ जायगा।'

यह समाचार पा मेरी हालतके बारेमें कुछ न पूछिअे। अेकबार मेरे अेक दोस्तने अपनी पर्दानशीन बीबीको दूसरे दिन किसी मेलेमें लेजानेका वचन दिया था। बीबीने रातसे ही खाने-पीनेकी सभी चीज़ें तैयार करनी शुरू की। सवेरे बच्चोंके बाल झाळे-झूळे गअे। नअे साफ़ कपळे पहनाअे गअे। अपने शृंगारमें भी कोअी कमी नही रखी गअी। १० बजे जबकि जाना निश्चय हुआ था, हमारे मित्रने अपनी सहधर्मिणीसे कहा—'मुझे दूसरी जगहका बुलौआ आ गया है। अब मेला जाना नहीं होगा।' अिस वक़्त मैं अपने मित्रकी पत्नीकी अुस वक़्तकी मानसिक अवस्थाका अच्छी तरह अनुभव कर रहा था।

अीरानमें आअे अब (२३ अक्तूबर) हमें अेक महीना होगया था। हमारा वीज़ा सिर्फ़ देशपार होजानेका था; अिसीलिअे हम अेक माससे अधिक ठहरनेके अधिकारी न थे। पासपोर्टकी मीयाद बढ़वानेमें कितनी दिक़्क़त होती है, और कितनी बार पासपोर्ट आफ़िसमें दौळ दौळकर हैरान होना होता है, अिसे हम जानते थे। लेकिन अब चारा ही क्या था। पासपोर्ट-आफ़िस गअे। हमारी तरह कितनी ही और अेशियाअी और युरोपीय स्त्री-पुरुष वहाँ जँगलेपर खळे थे। लोग अेकके पीछे अेक कतार बाँधे हुअे हैं। घंटे भरकी प्रतीक्षाके बाद अेक आदमी जँगलेके पास पहुँचता है। वीज़ाके लिअे १३ रियाल फ़ीस देनी होती है। आदमीके पास दस या पाँचके नोट है। नोट लौटाते हुअे हुक्म होता है—'जाओ भुनाकर लाओ।' किसीने अैसा होते देखकर दो-तीन दोस्तोंका पासपोर्ट मीयाद बढ़ानेके लिअे पेश किया। हुक्म हुआ—'जाओ अुनके हाथसे भिजवाओ।' किसीको देशसे बाहर जानेकी आज्ञा (जावाज़ेखरूज़) लेना है। हुक्म हुआ—'दो दिन बाद आओ।' हमें मीयाद बढ़वानी थी। कहा गया—'जाओ अर्ज़ी लिखवाकर

लाओ।' ओीजानिबको यह भी पता नही था कि अर्ज़ी लिखनेवाला कहाँ बैठता है। ख़ैर, बहुत कुछ पूछताछ करते अर्ज़ीनवीसके पास पहुँचे। अर्ज़ी लिखी गओी और अुसे हमने किसी तरह पेश किया।

२५ अक्तूबरको पुलीसका सिपाही सवेरेही हमारे कमरेमें पहुँचा। दफ़्तरमें जाने पर पूछा गया, आपके पासपोर्टकी मीयाद ख़त्म हो गओी। आपने क्यों सूचना नही दी? मैंने पासपोर्टके दफ़्तरमें जा अपनी अर्ज़ी दिखला दी। अिस प्रकार वहाँसे तो छुट्टी मिली। आफ़िसवालेने कहा—पासपोर्ट लिखकर अभी वापस कर दिया जायगा। फिर शामको तीन बजे आनेको कहा। शामको जाने पर कल आनेके लिअे कहा गया। दूसरे दिन जाने पर (२६ अक्तूबर) ३० अक्तूबरको आनेको कहा।

अुधर सोवियत वीज़ाके लिअे अिस प्रकार निराशा हो रही थी और अिधर ओीरानी वीज़ाके लिअे रोज़ कल-कल कहा जाता था। कओी बार खयाल आया कि अिस बेकारीके समयमें ओीरान पर अेकाध लेख ही लिख डालें, लेकिन न हाथसे क़लम ही अुठती थी, न मन ही गतिशील होना चाहता था। २८ तारीख़को अेक तार फिर डाक्टर श्चेर्बास्कीको दिया।

अिस सारी अनिश्चित अवस्थामें बस आगा हुमायूँके पास जो चार-पाँच घंटे गुज़रते थे, वे ही अच्छे लगते थे। अेक दिन ओीरानी लोगोंके मज़हबके बारेमें बातचीत हुओी। अुन्होंने कहा—'ओीरानी दिमाग़ कभी भी मज़हबका ग़ुलाम नही हुआ। और सचमुच जिन्होंने ओीरानी अितिहासको पढ़ा है, वह अच्छी तरह जानते हैं कि ओीराननें अपने व्यक्तित्वको कभी जाने नही दिया है। अरबोंके आरंभिक विजयके समय, यद्यपि मालूम होता था, कि ओीरानी दिमाग़ अिसलामका ग़ुलाम बन जायगा, लेकिन अुसने शम्सतब्रेज़, मंसूर, रूमी जैसे विचारकोंको पैदा किया। अुन्होंने अिसलाममें अैसा सूफ़ी विचारोंका पुट दिया, कि वह कुछसे कुछ होगया। वहाँ बैठे हुअे अेक ओीरानी सज्जनने तो यहाँ तक कह डाला—अजी,

ख़ुद कुरानको अेक ओीरानीने बनाया है, जिसका कि नाम सल्मान फ़ारसी था।'

ओीरानमें अरबी शब्द चुन चुन कर फ़ारसी-भाषासे निकाले जा रहे हैं और अिन निकाले हुअे शब्दोंको लोगोंकी जानकारीके लिअे छापकर आफ़िसों और अख़बारोंमें दे दिया जाता है। कोअी आदमी अुन शब्दोंको यदि आवेदन-पत्रमें अिस्तेमाल करता है, तो वह अस्वीकृत हो जाता है। अैसे अरबी-शब्दोंकी जगह फ़ारसी-शब्द प्रयुक्त किये जा रहे हैं। अेक दिन आगा हुमायूँसे फ़ारसी-व्याकरणके बारेमें बातचीत हो रही थी। जब मैंने अुन्हें संस्कृत-व्याकरणकी समानता दिखलाकर कृदन्त, तद्धित, स्त्री-प्रत्यय आदिके सम्बन्धसे शब्दोंकी रचनाकी व्यापकता बतलाअी तब वह अिससे बहुतही सन्तुष्ट हुअे और बोले—'यदि संस्कृतके ढंगपर फ़ारसीका व्याकरण बने तो हमें नये वैज्ञानिक शब्दोंके गढ़ने तथा भाषाको व्यापक बनाने में अधिक सहायता मिले। मैंने अुनसे कहा—रूसी-भाषा युरोपकी अन्य आर्य-भाषाओंकी अपेक्षा संस्कृतसे नज़दीक है; लेकिन रूसीभाषा-भाषी जब अलग हुअे, अुस वक़्त भी हिन्दू और ओीरानी अेक ही परिवारके थे। रूसी और हिन्दू-ओीरानी जब अेक परिवारमें थे, अुस समय तक वह शिकारी और पशुपालनके जीवन तक ही पहुँच चुके थे। लेकिन हिन्दू और ओीरानी अेक-दूसरेसे अलग होनेके पहलेही कृषक-अवस्था तक पहुँच चुके थे। अिसलिअे जो शब्द रूसी और संस्कृतमें समान हैं वह संस्कृत और फ़ारसी में ज़रूर आने चाहिअे। मैंने अुदाहरण दिया स्त्रीलिगी आ प्रत्यय का। रूसी भाषामें हमेशा स्त्रीलिंगके साथ आ प्रत्यय आता है। याब्लोव्-वंशकी स्त्री याब्लोवा कही जायगी। बहुत ढूँढ़ने के बाद अुन्हें भी हम्शीरा (संक्षीरा), अेक दूधवाली, (यानी बहन) मिली। पिव् धातु संस्कृत और रूसी दोनोंमें पीनेके अर्थमें आता है। खोजनेपर फ़ारसीकी अेक स्थानीय भाषामें भी यह धातु अुसी अर्थ में मिला। और प्यालामें भी तो वही पिव् धातु है।

कितने दिन दौळाकर अन्तमें ३१ अक्तूबरको बिना कुछ लिखे ही ओीरानी दफ़्तरने पास्पोर्ट लौटा दिया। मुझे बैंकसे रुपया बदलना था, अिसलिअे लौटाना था। नवम्बरकी पहली तारीख़को कअी तरहकी बातें अुळती सुननेमें आअीं। ओीरानी सरकारकी ओरसे पन्द्रह-सोलह विद्यार्थी कला-कौशलकी शिक्षाके लिअे जर्मनी भेजे जानेवाले थे। अुन्होंने भी रूसके रास्ते जानेके लिअे वीज़ा माँगा था। वीज़ेमें कअी हफ़्तेकी देरी देखकर कुछ लोग कहने लगे,—सोवियत सरकार किसी लळाअीमें शामिल होने जारही है, अिसीलिअे सरहदका द्वार बन्द कर दिया गया है।

३ नवम्बरको प्रोफ़ेसर अमीर अलीके घरपर गअे। आप कलकत्ता और लखनअूके विश्व-विद्यालयोंमें प्रोफ़ेसर रह चुके हैं। आयु ६० सालकी है। बळे सादे और मृदुस्वभावके हैं। तीन पीढ़ी पहले आपके पूर्वज हिन्दुस्तान चले गअे थे। आप, आपके लळके और लळकीका जन्म भारतहीमें हुआ था। तो भी ओीरानसे आपका संबंध छूटा नही था। शाह रज़ाके नेतृत्वमें ओीरानकी नअी जागृतिकी ख़बर पा आप ओीरान चले आअे। आपकी लळकी ताहिरा लखनअू-विश्वविद्यालयकी ग्रेजुअेट है और अच्छी कविता करती है। बळी प्रतिभाशाली तरुणी है। अुनसे ओीरानी महिला समाजको बहुत आशा हो सकती है।

शह्रदारी (नज़मिया या पुलीस)का आदमी फिर आया। वहाँ जानेपर ठहरनेके लिअे दरख़्वास्तका फ़ार्म भरना पळा और ३ फोटोंके साथ दूसरे दिन अुसे पेश करनेकी आज्ञा हुअी। ६ तारीख़को जैसे-तैसे करके देशसे बाहर जानेका वीज़ा मिला। फोटो और दरख़्वास्तकी कोअी ज़रूरत न पळी। लोग कह रहे थे—यह सारी टालमटोल कुछ पैसे ऐंठनेके लिये हो रही थी।

५ नवम्बरको रम्ज़ानका महीना शुरू हुआ। अुस दिन रोज़ेका पहला रोज़ था। सारे होटलमें सिर्फ़ हमारे पंजाबी दोस्त हाफ़िज़ अिलाही बख़्श

साहबने ही रोज़ा रखा था। कुछ हिन्दुस्तानी मुसलमान ड्राइवर भी अुस वक़्त होटलमें ठहरे हुअे थे। अेक दिन पहले अेक भाअीने कहा—'भाअी, रमज़ान आ रहा है।' दूसरेने कहा—'किर्मानिशाह जा रहे हो, अुधर ही रमज़ानको छोळ आना!' हाफ़िज़ साहबने रखनेको तो रोज़ा रख लिया, लेकिन यार लोग अितनी चुटकियाँ लेने लगे, कि बेचारे नमाज़ पढ़ना ही भूल गये। और जब कोअी नमाज़ न अदा हुअी, तब यारोंने कहना शुरू किया—वाह, खूब रोज़ादार हुअे, जो नमाज़को भी नही पढ़ पाये! दूसरे दिन अेक अीरानी नौजवान हाफ़िज़ साहबसे कहने लगा—'अजी हाफिज़ साहब, आज बळे तळके ही फ़रिश्ता रजिस्टर लेकर होटलमे आया था। अुसने पहले प्रथम नंबरके कमरेपर आवाज़ दी—क्या यहाँ कोअी रोज़ादार है? जवाब नहीमें पाकर वह दूसरे कमरेके दरवाज़ेपर आया। वहाँ भी अुसको वही जवाब मिला। फिर तीसरे कमरेके द्वारपर आया। बोला—'रोज़ादार अस्त।' जबाब मिला—'नेस्त।' बस वहीसे वह लौट गया। आप तो सातवें नंबरके कमरेमे थे। आपका रोजा रजस्टिरमे दर्ज नही हुआ, व्यर्थ ही भूखे मरे।' होटलकी मालकिन कह रही थी—'अजी, मर्द रोज़े रखें तो रखें, क्योंकि अुन्हें सत्तर हूरें मिलेंगी; लेकिन औरतें क्या ६९ सौतिनोंको पानेके लिअे रोज़ा रखें?' अेक साहब बोल अुठे—ख़ुदाको चाहिअे था, कि ३० रोज़ोंको बारह महीनोंमें बाँट देता और दिनके बजाय रातको रोज़ा रखनेको कहता। अेक मनचला तुर्क बोल अुठा—अजी, बूढ़ा अुस वक़्त क़ब्रके पास पहुँच चुका था। अितना सोच कहाँ सकता था?

ख़ैर अिस सारी टीका-टिप्पणीका यह परिणाम हुआ कि हाफ़िज़ साहबने फिर रोज़ा रखनेका नाम न लिया।

६ नवम्बरको फोनसे ख़बर मिली—'सोवियत वीज़ाके लिअे आज्ञा आ गअी है; लेकिन क्रान्तिकी बीसवें वार्षिकोत्सवके अुपलक्ष्यमें कौंसलखाना ३ दिनके लिअे बन्द है। वीज़ा ९ तारीख़को मिल सकेगा।' वीज़ा

मिलनेके लिओ प्रसन्नता तो हुओी; लेकिन यह ख़याल कर अफ़सोस हुआ कि अगर तीन दिन पहले वीज़ा मिला होता, तो हम बीसवें वार्षिकोत्सवके समय सोवियत्-भूमिमें होते और अपनी आँखोंसे अिस महान् अुत्सवको देखते। तेहरानके सोवियत्-दूतावासमें अुत्सव मनानेका विशेष आयोजन किया गया था। ७ नवम्बरको महोत्सवमें शामिल होनेके लिओ हमें भी निमंत्रण आया था। अँगरेज़, फ्रांसीसी, अमेरिकन आदि सभी दूतावासोंके प्रधान व्यक्ति अुत्सवमें सम्मिलित हुओ थे। घुटी खोपळी वाले सोवियत् दूत सभी अतिथियोंकी अभ्यर्थना करनेमें लगे हुओ थे। भोजन और नृत्यका ख़ास तौरसे प्रबन्ध था। भोजनके बाद नृत्य शुरू हुआ। बाजा बजने लगा और अनेक सुन्दरियाँ पुरुषोंके साथ काठके फ़र्शपर थिरकने लगीं। ओक बार १८ जोळी तक छूटी थी। सोवियत्-कौसल-जेनरल और अुनके सेक्रेटरी भी नाचनेमें मस्त थे।

९ नवम्बरको डेढ़ बजे वीज़ा मिल गया। ओक सौ तुमान देकर अिन्तूरिस्तसे पहलवीसे लेनिनग्राद् तकका जहाज़ और रेलका टिकट भी ले आओ। अिसीमें रास्तेका खाना और ४ दिन होटलोंमें रहना भी शामिल था। बल्कि बाकू और मास्कोमें ३ दिन तीन-तीन घंटा दुभाषियाके साथ मोटरमें सैर करना भी शामिल था। २३ तुमान् (जिसमें ६ तुमान् सामानके लिओ था) में पहलवीके लिओ कारमें जगह मिली। कार बिलकुल नओी थी। अितने दिनों तक रह जानेसे तेहरानमें भी कितने ही ओीरानी और भारतीय दोस्त बन गओ थे। हाफिज़ अिलाहीबख़्शसे तो बहुत ज्यादा घनिष्टता होगओी थी। मैंने आतेके साथ २० पौंडके नोट भुनाओ थे, जिसमें सौ रुपओका घाटा लगा था। पन्द्रह पौंड मुझे और भुनाने थे। हाफ़िज़ साहबने कहा—पन्द्रह पौंडका सिक्का मैं आपको देता हूँ। आप नाहक़ ७५) न ख़राब करें। मैं लेना नही चाहता था, लेकिन अुनका आग्रह था। मैंने कहा—आपको क्या विश्वास है कि मैं आपको रुपओ लौटा दूँगा?

अुन्होंने कहा—आपपर मेरा पूरा विश्वास है। और ख़ास कर आपकी कट्टर नास्तिकताको देखकर।

सवा ५ बजे हम रवाना हुअे। शहरसे ५ मील निकल जानेपर याद आया कि टामस् कूकका सफ़री-चेक पीछे छोळ आअे हैं। चेक छूट रहा है और पासमें लेनिनग्राद् पहुँच जाने तकसे अधिकका पैसा नहीं है, यही बात नहीं थी। चेक हमारे पासपोर्ट पर दर्ज था; और जब तक खुद चेक या अुने चेकके बारेमें सरकारी बैंककी रसीद दिखलाअी नहीं जाती तब तक अीरानसे बाहर निकलनेकी आज्ञा ही नही मिलती। मोटरको लौटाकर लाना पळा और साढ़े ६ बजे फिर रवाना हुअे। कार बहुत तेज़ चल रही थी। रास्तेमें कज़वीनमें घंटे भरके लिअे ठहरे और सात घंटेकी दौळके बाद बळे-बळे पहाळी डाँळोंको पारकर गीलान प्रदेशके रश्त नगरमें पहुँचे। ज़रा-ज़रा बूँदा-बाँदी होरही थी तो भी सर्दी न थी। हम कारहीमें सो रहे। सवेरे (१० नवम्बर) रश्त शहरके कुछ भागोंको देखा। सळकें स्वच्छ और चौळी हैं। अुनके किनारे कुछ बळे बळे मकान भी बन गअे हैं।

साढ़े आठ बजे मोटर रवाना हुअी। आसमान बादलसे घिरा हुआ था। हलकी फुहारें भी पळ रही थी। नदीमें मटमैला पानी बह रहा था। गळहे और खड्ढ सभी पानीसे भरे हुअे थे। पहाळोंको हमने रश्तसे कअी मील पहले ही छोळ दिया था। यहाँसे कास्पियन समुद्रतट तक ज़मीन समतल है। हरे-भरे जंगल, और जमीनपर चारों तरफ़ फैली घास और हरियाली बरसातके भारतीय दृश्यका स्मरण दिला रही थी। अुसी वक़्त मालूम हुआ कि अीरानी लोग क्यों गिलानको हिन्द-कोचक (छोटा भारत) कहते हैं। पिछली बार जब हम अिस रास्तेसे गुज़रे थे, तब धानके खेत लहलहा रहे थे। अब धानके खेत कट चुके थे। वर्षाकी अधिकताके कारण अीरानकी और जगहोंकी भाँति यहाँकी छतें कच्ची मिट्टीकी न होकर फूस और खप-

रैलकी होती हैं। गीलानकी सारी भूमि ज़रख़ेज़ है। लेकिन आबादी अितनी कम है कि अुसे चौगुनी करनेपर भी सारी ज़मीनको आबाद न कर सकेंगे। यहाँका बारीक चावल सारे ओीरानमें मशहूर है।

साढ़े ९ बजे बन्दर-पहलवी पहुँचे। ग्रान्द-होटलमें डेढ़ तुमान रोज़पर कमरा लिया। हमारा जहाज़ कल जानेवाला था। अिनतुरिस्तके अेजेंटसे टिकटके लिअे कह दिया और ओीरानी वीज़ाके लिअे पासपोर्ट दे आअे। डेढ़ रियाल देकर डोंगीसे पार हो पुरानी वस्तीको देखने गअे। यद्यपि लोगोंके वेषभूषामें युरोपीयपन आ गया है, लेकिन अिस वस्तीकी गलियाँ और मकान अब भी पुराने ढंगके ही हैं। बाज़ार और दूकानें भी किसी हिन्दुस्तानी क़स्बे जैसी मालूम होती हैं। सरकारका ध्यान पहलवीको सजानेकी ओर है; जिसका कि नाम वर्तमान शाह रज़ाशाह पहलवीके नामपर पळा है।

अब हमें सोवियत् जहाज़से बाकू और फिर रेलसे लेनिन्ग्राद् जाना था। दिल्लीसे नोक्कुंडीतक रेलमें ड्योढ़े दर्जे तकका २३) लगा था और नोक्कुंडीसे पहलवी तक कुल मिलाकर ७७) लगे। अिस प्रकार १००) में हम दिल्लीसे कास्पियन तट तक पहुँचे थे। अिसमें खानापीना शामिल नहीं है। और आगे पहलवीसे लेनिनग्राद् तक १०० तुमान (१००)) देना पळा था, अर्थात् खाना-पीना लेकर अिस रास्तेसे दिल्लीसे लेनिनग्राद् तकका ख़र्च सवा दो सौ रुपअे पळा। लेनिनग्राद्से ४०) और ख़र्च करनेपर आदमी सोवियत्के जहाज़-द्वारा ३ दिनमें लंदन पहुँच सकता है।

जहाज़ (११ नवंबरको) ८ बजे रातको छूटनेवाला था। साढ़े छः बजे ही हम अपना सामान लेकर जहाज़-घाटपर पहुँच गअे। ओीरानी कस्टम-वालोंने सामानको देखा-भाला। चेकको मिलाया और साढ़े छः बजे हम जहाज़पर पहुँच गअे। तीसरे दर्जेमें हमारे सिवा अेक अिटालियन दम्पती

भी जा रहे थे। सोनेके लिअे काठके तख्ते थे। यहाँ भी रेडियो लगा हुआ था, जिससे बाकूका गाना सुनाअी दे रहा था। जहाज अपने समयपर रवाना हुआ। थोळी ही देरमें हम अुस पतले जलाशयसे निकलकर कास्पि-यन-समुद्रमें दाखिल होगअे।

'rinted by M. N. Pandey at the Allahabad Law Journal Press, Allahaba
Published by K. Mittra at the Indian Press Ltd., Allahabad.